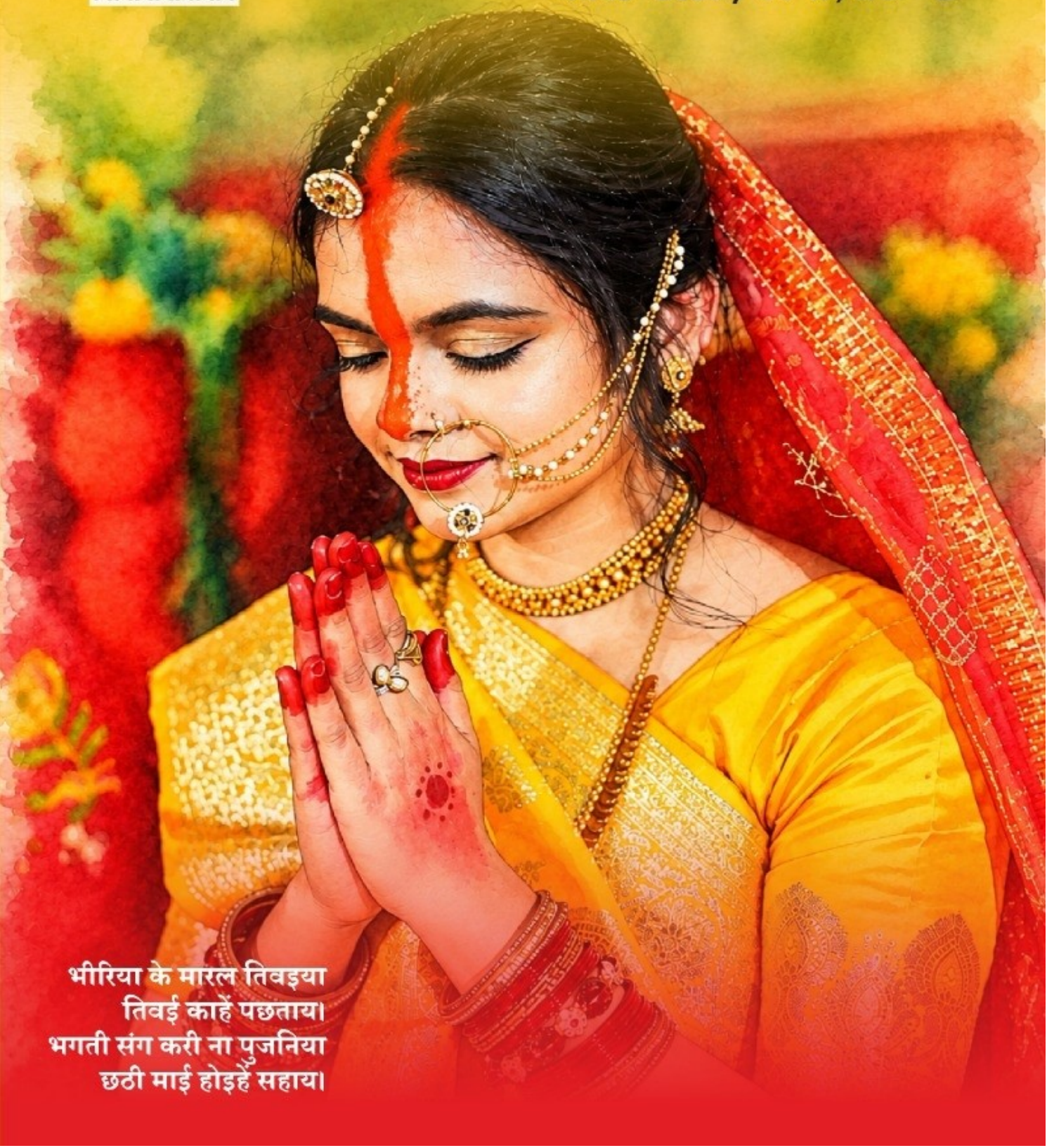
ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

# भोजपुरी साहित्य सरिता

नवंबर -2026 / वर्ष-11 , अंक - 8



भीरिया के मारल तिवइया
तिवई काहें पछताय।
भगती संग करी ना पुजनिया
छठी माई होइहें सहाय।

# KBS Air & Gas Engineering

## SALE & SERVICE

* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.




Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India

E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com

MOB. : +91-7042608107, 8010108288

# CompuNet Solution

CNS Network Services

Service AMC



Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

# भोजपुरी साहित्य सरिता

**संरक्षक**

**रामप्रकाश मिश्रा** (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
**विनोद यादव,** गाजियाबाद

**प्रकाशक आ संपादक**
जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

**कार्यकारी संपादक**
डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

**साहित्य सम्पादक**
केशव मोहन पाण्डेय (दिल्ली)

**सहायक सम्पादक**
डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)
प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

**सलाहकार सम्पादक**
मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
सौरभ पाण्डेय,नैनी, प्रयागराज (उ0प्र0)
दिनेश पाण्डेय, पटना
डॉ जयंत शुक्ला, इंदौर (म0प्र0)

**तकनीकी एडिटिंग-कम्पोजिंग**
सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

**छायाचित्र (कवर पेज )सहयोग**
केशव मोहन पाण्डेय –**नई दिल्ली**

**प्रतिनिधि**
आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)

**प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली**

**: आजीवन सदस्य गण :**

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),

डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना, डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

**♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦**

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
**PH:** 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

**नोट :** पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

# अनुक्रम


**संपादकीय**

विश्वास से विश्वासघात तक के जतरा - जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/5

**धरोहर**

सुखले के मरी- मोती बी ए/6

**आलेख/शोध लेख/निबंध**

भोजपुरी के जाति गीत : संदर्भ आ सौन्दर्य
- जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /15-16

हाली हाली उग॰ ये अदितमल-तनुजा द्विवेदी/33-34
सामाजिक समरसता के ब्रत-छठ- केशव मोहन पाण्डेय/39-42

**कहानी/लघुकथा/रम्य रचना**

कुकुराह-राम यश अविकल /7-11
बिरोध-अंकुश्री/14
बेमेल बियाह – डॉ रजनी रंजन /20-21
जगमग शहर आ भक्ति के उल्लास
– अभियंता सौरभ कुमार/22-23
हमरा गाँव के जेन जी-अनीता मिश्रा 'सिद्धि'/28
देवता-कनक किशोर /29-31
पतझर के टेसू-शरण आशुतोष/43-44
दू गो लघुकथा – कनक किशोर /45

**संस्मरण**

अइसे केहू साहित्य के वट वृक्ष ना बन जाला –डॉ सुप्रिया सोनी/23

**पुस्तक चर्चा/समीक्षा**

भोजपुरियत के थाती से कुछ बात-बतकही-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/12-13
'भिरिया के मारल तिवइया' के बहाने
लोक आस्था आ लोक बिसवास के बाति- ज्योति पाण्डेय/36

**कविता/गीत/गजल**

मितवा हो – डॉ दिनेश प्रसाद सिन्हा/13
छठ गीत-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /17
कउने जनम भरब हम हानि- धीरेंद्र पांचाल /18
गाँव के याद !-राजेश मृदुल/18
कुण्डलिया छंद –डॉ दिनेश प्रसाद सिन्हा/19
गीत-संगीत सुभाष /19
छठ गीत –डॉ रजनी रंजन /20
छूट जाला- रवि रंजन ओझा/24
चलत रहिया – शुभम शास्त्री/24
दू गो कविता – राम सागर सिंह/25-26
भोजपुरी गजल- मिथिलेश गहमरी/26
भोजपुरी गजल-शम्स जमील/27
गजल-बलजीत सिंह 'बेनाम'/27
भोजपुरी गजल-मनोज भावुक/32
प्रेम-डॉ राम बचन यादव/35
गजल-अजय साहनी/35
मरखाह –आशुतोष कुमार/37
फुटानी-सन्नी भारद्वाज /37
बापू ! अपने के जाइयो के जा पाएब का ?-डॉ सुनील कुमार पाठक /38
छठ गीत- केशव मोहन पाण्डेय/38

**बेगर लाग लपेट के**

बेहाया के बेहयाई कथा-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /46


■■




रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता



जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

# विश्वास से विश्वासघात तक के जतरा

समय लोगन का संगे साँप-सीढ़ी के खेल हर काल-खंड में खेललले बा,अजुवो खेल रहल बा। चाल-चरित्र-चेहरा के बात करे वाला लोग होखें भा सेकुलर भा खाली एक के हक-हूकूक मार के दोसरा के तोस देवे वाला लो होखे,समय के चकरी के दूनों पाट का बीचे फंसिये जाला। एहमें कुछो अलगा नइखे। कुरसी मनई के आँखि पर मोटगर परदा टाँग देले, बोल आ चाल दूनों बदल देले। नाही त जेकरा लगे ठीक-ठाक मनई उनुका कुरसी रहते ना चहुंप पावेला, कुरसी जाते खीस निपोरले उहे दुअरे-दुअरे सभे से मिले ला डोलत देखा जाला। ई साँच जनला का बादो लो चेतबे ना करत। भा इहो कहल जा सकत बा कि समय अइसन लोगन के चेते ना देला। कबीर बाबा ई बाति बहुते पहिले बता देले रहें बाकि ओकर अरथ अभियो लोगिन के बुझाइल कि ना, समझ के परे बा। हम चाहतानी कि कबीर बाबा के बाति रउवो सभे एक बेर फेर से पढ़ीं, सुनी आ गुनी----

'चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय॥'

एह देस में धरम आ अध्यात्म के अनगिन सोता फूटल आ  बहल, समय का संगे आपुसो में मिलल आ फेर एह समाज के महासमुंदर में समा गइल। ई एगो पक्ष रहल, दोसरका पक्ष इहो बाकि ओही समय में एगो धरम के लो दोसरा के मेटावे खाति कुल्हि उधातम कइल, मेटा ना पवलस आ खुदे बिला गइल। कतने राज आ राजा लो अइने, आपन राज फइलवलें, आपन आपन धरम जबरियो फइलवलें, बाकि उहो लो दोसरा धरम के खतम ना क पवलें, खुदे बिला गइलें। इहे खेला अजुवो चल रहल बा। कुछ लो अजुवो अइसन बा जे दोसरा मानसिक,सामाजिक अउर धार्मिक हानि पहुंचावे ला कुल्हि उधातम क रहल बा। उहो लो के हाल उहे होखी, जवन उनुका पहिले वाला लोगन के भइल रहे बाकि लो बूझल नइखी चाहत भा उहाँ सभे के बुझाते नइखे। एह कुल्हि करतूतन से देस, समाज आ साहित्य सभे प्रभावित होला, अजुवो हो रहल बा। बाकि आजु के नीति नियंता लो के हाल 'आन्हर गुरु, बहिर चेला' वाला भइल बुझाता। तबे नु एह घरी उहे लोग एक्ट-एक्ट के खेला खेल रहल बा आ लोगन के आपुसे में लड़वावे के उधातम क देले बा। भला होखो बड़का कोरट के जवन आन्हर भइल लोगन के आँख खोल के देखे आ सोचे ला मजबूर कइलस। कुछ लोग इहों देखिके दाँत देखा रहल बा आ खिसियानी हँसी हँस रहल बा। ओह में से कुछ लोग नेही लोगन के गारी के महसूस क रहल बा। ई लोग त साँचो विश्वास से विश्वासघात तक के जतरा कर रहल बा।

कुछ लो कबों देस आ समाज के सनमान न करे खाति जामेला। अइसन लोगवा एहू घरी बा आ ढेर बा। आजाद देस में कब के आजादी माँगे लागता आ  केहुके ई देस आजाद बा कि ना, पते नइखे। ढेर लो मिलके कबर खोने में लागल बा। कवनों कबर खोनला पर का भेंटाला, ई सभे मालूम बा। तबो लो खोने में जुटल बा। कुछ लो पाप नाशिनी गंगा के आशीष के सगरे ठेका उठा के बइठल बा आ लोगिन के जलाभिसेक करवा के पवित्तर करि रहल बा तबे नु काल्हु तक  ले जे बाउर रहल भा अश्लील रहल, उहो लो अब नीमन हो गइल सुने में त इहो आवता कि संगे अवते आधा पाप असहीं बिला जाला। अब ओह लोगन का संगे मिल के सबकुछ हो रहल बा। इहे हाल साहित्य के लेके हो चुकल बा।

भोजपुरी साहित्य सरिता परिवार आपन लय बनवले साहित्य के बढ़न्ति में जतना संभव बा करे के परयास में लागल बा। यति गति के आपन रंग होला, आपन पौरुष होला, आपन वितान होला, ओहु से सभे परभावित हो जाला, त हमनिए के कइसे बाचब। तबो परयास बा कि कुछ नीमन होखे, एही सोच का संगे पत्रिका के ई अंक रउरा सभे के सोझा परोसा रहल बा। जय भोजपुरी !!

पावन परब दिवाली,गोबरधन आ छठ पूजा के
अनघा  बधाई आ शुभकामना

■■

रउरा सभे के आपन--

**जयशंकर प्रसाद द्विवेदी**
**संपादक**
**भोजपुरी साहित्य सरिता**

# सुखले के मरी

के धैर्य धरी
सुखले के मरी

मउवति जे रसगर बनाई
ओही में जब जीव सउनाई
मुअले के डर ना रहि
जियला के मजा आ जाइत

चाहतानी
सउना-मउना हो जइतीं
मउवति के पाग से
जिनिगी के लाई बन्हाइत
घरघर बँटाइत

के धैर्य धरी
सुखले के मरी।

❑❑




**मोतीलाल उपाध्याय**

**जन्म**—01 अगस्त 1919
**मृत्यु**—18 जनवरी 2009

**गाँव - बरेजी, डाकघर - तेलियाँ कला, देवरिया, उत्तर प्रदेश**



# कुकुराह

राम यश अविकल

भोलू जन्मे से अभागा। मतारी के पेट में से ओकर एगो पांव टेढ । पहिलवठे भइल रहे त सभे कहे लागल घीव के लड्डू टेढ़ों भला। दस साल के ओकर उमिर भइल रहे बरसात अतना जादे भइल कि ढेर लोग के माटी के घर गिर गइल । भोलू के घर के एक अलंग के देवाल भहरा के गिर गइल । ओकर माई के देह पर देवाल गिरे से ओकर डांड के हड्डी टूट गइल । खटिया ध लेलस । बाबूजी मजदूरा।पेट चलो कि दवाई। तबो करजा लेके इलाज करावे में अपना से उठा ना धइलें । बाकिर भोलू के मतारी उठ ना पावल। भोलू लगंडा के चलत रहे। ओकर बाबूजी सरकारी स्कूल में भोलू के नाम लिखवा देले रहन । पढ़ाई लिखाई में ठीक ठाक रहे। ऊ सोचे कि माटी के देवाल ना रहीत आज माई हमार ठीक रहीत। गांव में आधा से जादे लोग के पक्का मकान आ बाकी लोग के माटी के काहे? ढेर लोग के सब साधन सुविधा बा आ कुछ लोग हाड़तोड़ मेहनत करता तब जाके दू जून के रोटी जुटS ता । ई विषमता काहे बा ? एकर गूत्थी सुलझावे के माथा खपावे लागल। बाकिर अझुरा के रह जाय । ई सोच ओकरा के लगन से पढ़ें के मजबूर कइलस । ऊ मरम समझ गइल कि बिना शिक्षा के कुछ ना होई। गते गते पढ़ाई में तेज होत गइल । बाबूजी मजूरी करे चल जास त इस्कूल से भोलू आवे त माई के पेशाब पैखाना भइल कपडा बदले। माई के गोडथारी ओकर पांव पर मुड़ी रख के रोवे। भोलू के रोआई सुन के ओकर माई संगही रोवे। ओकर माथ पर हाथ फेरे । ओकरा के दुलार करे आ अपना छाती से लगा के खूब रोवे। ई रोवे के सिलसिला मतारी बेटा के रोज के रहे।

अब तक ऊ दसवीं में चल गइल रहे । ओकर बाबूजी तीन तल्ला पर चढ़ के मिस्त्री के ईटा आ मसाला तगाडी में लेके धरावत रहन । बांस के फराठी के पुरान चाली के भाड़ा बान्हल रहे, टूट गइल । ओकर बाबूजी आ मिस्त्री गिर गइले । दूनो जना दवरे पर खतम हो गइले । ई दुख के दरियाव में भोलू के जिनिगी डूबे उतराय लागल। सोचे लागल अब कइसे पढ पाइब? का हमरो मजदूरा बने के नियति में लिखल बा ? ई सोच सोच के अउरी रोवे। मतारी हूके खायक पानी छोड़ देलस। भोलू बरियारी अपना माई के खायक खिआवे । मकान मालिक से पुलिस प्रशासन मुअबजा दिअवलस आ सरकारो ओर से मिलल। ई मुअबजा ओकर जिनिगी के दिशा दसा तय क देलस।भोलू अब उड़ान भरे के सोच लेलस। भोलू मैट्रिक खूब बढ़िया नम्बर से पास भइल । कांलेज में नाम लिखावे खातिर फारम भर देले रहे । माई के देह में कुछ रह ना गइल रहे। एगो शरीर के दुख ओहू में आपन पति के गुजर जाय से करेजा में हूक हो गइल । ना टिक पावल। कुछ महीना में एह दुनिया से विदा हो गइल। भोलू के आह आलम्ब सब खतम। भोलू भीतर से टूट गइल । ओकर आंख से लोर ना सूखत रहे। कांलेज में नाम लिखा गइल रहे । पढ़ाई कइसे जारी रही , ई चिंता सतावे लागल। भीतर से टूट त जरूर गइल रहे । बाकिर कसहूं अपना के सम्हरलस। शहर के होस्टल में रह के पढे लागल। ओकर मामा के घर से शहर बहुत नजदीक रहे। मामा के लइका छोट छोट रहन स। अपने नोकरी पर। एह से सोचले कि भोलू हमरा घरे रही त लइकन के पढ़ा दी आ घर में एगो मरद मानुष हो जाई। आ समाज में कहे के हो जाई कि हम अनाथ भगिना के अपना घरे रख के पढावत बानी। केहू ई ना कह पाई कि तू आपन टुअर भगिना के छोड़ देल। ऊ अपना घरे राखे खातिर होस्टल में जा जा के भोलू के समझावस । बाकिर भोलू के मन ना माने। मामा हर दुख में साथे खाड रहन। एह से उनुकर बात उठावल पार ना पावत रहे । होस्टल छोड़वा देले आ अपना घरे लिया के आ गइले । भोलू मना ना कर पावल। कुछ महीना सब कुछ ठीक से चलल भोलू के मान जान खूब भइल । फेर ओकर मामी आपन असली रूप में आ गइली । दूगो गाय पोसले रहन मामा। मामी अब भोलू से गाय के खाय खातिर कुटी कटवावे लगली। फेर गाय के गवत खिआवे आ ओकर गोबर हटावे के काम करावे लगली।

मामी के कहली ," कुकुरो खा ला त पोछ हिलावे ला। तू खइबे आ कुछ ना करबे ? ई ना चली।"

भोलू मन ममोस के गाय खातिर कुट्टी काटे लागल। अब रोज सांझ सबेरे गाय के गवत खिआवे आ गोबर उठा के जहां रेखे के मामी कहले रही उहां रख देवे। भोलू कांलेज से आके कपड़ा खोल के रोज मवेशी के सान्ही पानी गोते । तबो ओकर मामी ओकरा के देखते भनर भनर करत रहत रहीं। कबो कबो दोगलवा कह के गरिया देस। भोलू डबडबा के रह जाय। अब मामी के मुंह खुल गइल। बात बात पर गारी दे देस। सहे के सीमा खत्म हो गइल रहे भोलू के। गारी सुन के ओकर करेजा छलनी हो जाय। एक साल त कसहूं कटल। भोलू के पढ़ाई पर असर परहीं के रहे। रोज रोज के कुकुराह होखे से ओकर पढ़ाई ना हो पावत रहे।

एक दिन भोलू किताब कांपी बटोर के बिना कुछ कहले फेर होस्टल में आ गइल । फेर आपन पढ़ाई में रम गइल ।

( 2 )

मामा छुट्टी अइले त भोलू ना लउकल त मामी से पूछले,"भोलू कहां बा?

" का जाने कहां , बिना कहले चल गइल । हमरा से कह के थोरे गइल बा ।"

मामा होस्टल में खोजे खातिर गइले । मामी के देल गारी कइसे भूलाव? तबो ऊ मामी के बारे में मामा से कुछ ना कहलस। भोलू का कहो मामा से। मामी के व्यवहार से मामा अवगत रहन। उहो समझत रहन आदमी के सहे के एगो सीमा होला। तबो भोलू से अपना गांव पर चले के कहलन। भोलू के आंख डबडबा गइल ।

ऊ मामा से कहलस, " उहां रह के हमार पढ़ाई ना हो पाई। अब हमरा के होस्टल में रहे द ।"

मामा बात के समझत रहन। वापस लवट गइले।

मामी अब मामा से झगड़ा करे लागली, " बिना हमरा से पूछले काहे लिआवे गइल रह ? सब काम अपने मने करे के बा? ई ना चलीं। "

आखिर मे .मामा के कवनो लइका ना पढले सं।अब मामा घरे छुट्टी आवस दू दिन चार दिन खातिर आ महीना भर रह जइहे । ई उनुकर हरमेशा के आदत हो गइल । तनखाह मिलल बंद हो गइल। घर के खर्चा चलावल मोसकिल । तंगी से कलह अउरी बढ़ गइल मामा मामी में रोज कुकुराह होखे लागल। भोलू , मामा गांव आधा एक घंटा खातिर जात आवत रहे। बाकिर अब उहां रूकत ना रहे। ऊ जानत रहे कि इहां कुकुराह में रूकल ठीक नइखे ।

भोलू बी0ए0 पास हो गइल रहे । एम0ए0 में नाम लिखा लेले रहे । आपन नोकरी के तैयारी में लागल रहे। एक बेर मामा मामी नेवता में कतही हितई गइल रहन। ओह शादी में बगले के एगो लइकी गीत गावे आवत रहे आ नाचतो रहे। ओह लइकी के मतारी ओकर शादी खातिर लइका के तलाश में रही।

मामा मामी से उ कहली कि एगो लइका बताई राउर नजर में होखे त। इहो कहली कि ढेर तिलक दहेज ना दे पाईब। काहे कि तीन गो बेटी के वियाह करे के बा। दू गो के कर देनी।

मामा बतवले ,"एगो हमार भगिना बा। ओकर माई बाबू नइखन । लइका बी0ए0 पास बा।अभी एम0ए0 में पढत बा। बाकिर एगो पांव से लंगड ऊ पेटे में के ऐबाह बा। तनी हुचूक के चले ला। ओकर बियाह करे के बा। "

"ठीक बा हम आदमी भेजब देखे खातिर । "

वियाह से लवट के अपना गांव आ गइले । मामा बता देले रहन कि लइका फलना होस्टल में रहत बा। ऊ लोग एक दिन भोलू के देखे खातिर होस्टल में आ गइल लोग । बाकिर भोलू से कुछुओ बतवले ना रहन मामा कि केहू देखे खातिर जाय वाला बा। । भोलू के देख के गइले लोग। घरे राय सलाह कइले लोग कि पढ़ल बा अभी आगे पढ़तो बा। पढ़ें में तेज बुझात बा। एकर कतही नोकरी लाग जाई। अभी लंगड बा तिलको अपना सावंग से दिआई। ढेर किफायते मे फरिया जाई। नोकरी लाग जाई त ओकरा ढेर तिलक मिले लागी। एही चलाकी में ऊ लोग लइकी देखे खातिर ओकर मामा लगे खबर पेठवले। आ लइका पसन परला के सूचना देले। माई बाबू ना रहे से मामा अभिभावक के भूमिका में रहन। लइकी देखे खातिर निहोरा कइल लोग ।

एक दिन आके लइकी देखले लोग। पसन पर गइल लइकी । लइकी के नाम अरूणा रहे । मामी ओह लइकी के नाचत गावत देखले रही। ऊ उनुका खूब पसन रहे। लइकी ढेर पढ़ल ना रहे। ऊ गांव के मीडिल इस्कूल तक पढ़ल रहे। मामा सोचले कवन ओकरा मेहरारू से नोकरी करावे के बा। ओकरा के बनाई खिआई अउरी का करे के बा।

ऊ कह देलें " लइकी हमनी के पसन बिया। "

अब लइकी पार्टी वियाह करे खातिर निहोरा करे लागल ।

( 3 )

एने मोहल्ला के एक दू गो मेहरारू अरूणा से कहली सं , "सुननी हां जा कि जवन लइका से तोर वियाह होखे वाला बा ऊ लंगड़ बा । हतना सुनर लइकी के कइसे लंगड़ लइका से बियाह करत बा लोग? "

मोहल्ला के लोग कहे लागल कि तिलक देवे के चलते बेटी के लंगड से वियाह कके भांठत बाड़े सं । ऊ लइकी सुनलस कि लंगड़ लइका से वियाह हो ता त भड़क गइल ।

ओकरा बहाना मिल गइल आ अपना माई से कह देलस, " हम लंगड़ लइका से वियाह ना करब।"

ऊ आपन जीजा जोरे अझुराइल रहे। ओकर जीजा बराबर आवत जात रहन। ममिला ढेर आगे तक बढ़ गइल रहे। शारीरिक संबंध तक बन गइल रहे ।

ऊ कहे लागल ," हम दोसरा से वियाह ना करब। ओहू में लंगड़ा से एकदम ना। "

ओकर माई आपन इज्जत बचावे के चलते जल्दी बियाह कके माथ के बोझा उतारल चाहत रही। ना त कवनो ऊंच नीच क दी बेटी त बडा बदनामी होई। दोसर बात रहे कि ऐबाह लइका बा कमे तिलक में फरिया जाई । बड़ी दबाव दिआइल त लाचारी में ऊ वियाह करे के तैयार भइल । भोलू के गांव पर के घर खपरैल रहे। मेन दुआरी पर खाली कवाडी रहे। घर में कवाडी ना रहे । गांव के नियरे एगो मंदिर में विआह क दिआइल। भोलू कुछ रोपया जोगा के धइले रहे। भोलू के एम0ए0 के इंमतिहान हो चुकल रहे। विआह भइल त भोलू अपना गांव में कुछ लइकन के पढावे।

ओही से ओकर घर चलत रहे। बाकिर जब वियाह कके मेहररू आइल त झनक पटर करे लागल। भोलू ओकरा पसन एकदम ना रहे। वियाह कके ससुरा आइल त आपन पति के आपन देह छुए ना देवे।

ऊ साफ कहे , " माई बाबूजी हमरा के भांठ देले बा लोग। हमरा के बरियारी तोहरा संगे वियाह करा देले । तू हमरा एकदमे पसन नइख । एगो त लंगड़ ओहू मे महागरीब। बिना कवाडी वाला घर । ना घर में चाउर दाल बा ना आंटा बा। रोज किनाय के बा रोज खाय के बा।"

ऊ मनमना करे लागल। ऊ चाहत रहे कि ऊ उबिया के हमरा के छोड देस। अपना मरद के बरोबरे अपमान करे लागल । घासो बरोबर आपन मरद के इज्जत ना करे। भोलू बहुत समझावे बाकिर ओकरा कवनो असर ना। अब सवाल रहे कि ई समान त ना ह कि खराब निकल गइल त जाके जवन दोकान से लिआईल बा बदल के दोसर ले लिआव। गरीब आदमी के खातिर तलाक लेल आसान ना। ऊ आपन रोजी रोटी के फेर में रहो कि इहे कोर्ट कचहरी में दउड़े ? भोलू आपन नियति मान के चुप लगा गइल । दूनो अलग अलग धर मे।

एक दिन ओकर मेहरारू कहलस ," चलS हमरा के नइहर पहुंचा दS।"

भोलू पहुंचावे चल गइल । पहिला बेरा ससुराल गइल रहे। बाकिर ऊहां ओकर मान जान तनिको ना होत रहे। ओकर तबीयत तनी मंदा हो गइल त पांच छव दिन रुके परल।

अरूणा अब इहां आवते फोन से जीजा से बता देलस कि हम आ गइल बानी। अब आई भेंट करे खातिर। भोलू आ अरूणा के आइला के पांचवा दिन ओकर जीजा अरूणा से भेंट करे खातिर आ गइले । इनिका आवते सेवा में सब लोग लाग गइल। जइसे घर में रौनक आ गइल । हेने बइठाव तो होने बइठाव होखे लागल । नोकरिहा होखे से खूब मान जान होखे। भोलू समझ गइल कि इज्जत रोपया के होला। बेरोजगार गरीब के, के पूछे वाला बा । भोलू बेचारा फरके टरात रहे। ओकरा एक गिलास पानियो के केहू पूछत ना रहे। पिआस लागे त अपने से चपा कल पर जाके पानी पी लेवे। दुपहर बाद अब अपना गांव पर लवटे लागल ।

ओकर सास कहली, "अतना दिन रहनी त आज भर रूक जाई मीट मछली मंगवले बानी। बिहान चल जाइब।

(. 4. )

" अतना दिन हम सवखे थोरे रही। तबीयत मंदा हो गइल एह से रह गइनी । जहां तक मीट मछली के बात बा त हमरा खातिर थोरे आइल बा। ई त आपन नोकरिहा दमाद खातिर मंगवले बानी। हमरा खातिर थोरे मंगवले बानी।

आपन दमाद के खिआई आ खाई। हमरा नइखे रहे के हम जात बानी। "

भोलू वापस अपना गांव पर आ गइल।

जीजा के देख के अरूणा के चेहरा चहके लागल। उहे उनुकर सेवा में जादे लागल रहे। चाय पानी से लेके खायक पानी सब अरूणा देत रहे। भोलू आपन गांव अकेले आ गइल । अपमान के घूंट पी के उहां रहल ओकरा निम्मन ना लागल।

मन लगा के पढ़े लागल। बैंक के बहाली निकलल रहे। फारम भर देलस। इंतिहान भइल । छव महीना के भीतरे रिजल्ट निकलल। भोलू अब बैंक में कैशियर बन गइल । कुछ रोपया बटोराइल तो खपरैल घर तुर के पक्का के मकान बनावे के गते गते काम लगा देलस। गते गते घर तैयार हो गइल । जब नोकरी लागल आ घर बनल तब ओकर मेहरारू के बेचैनी छवलस । भोलू कसम खा लेले रहे कि अब ससुराल ना जाइब।

फोन से भोलू के सास के कहे के पर गइल," आपन परिवार आके लिआ जाई।"

ऊ साफा कह देलस," हमरा गरीब आदमी लगे काहे के आई? ऊ आपन रहो नोकरिहा जीजा संगे। हम के हई ओकर? खाली मांग में सिंदूर भर देला से केहू पति पत्नी थोरे हो जाला। हमरा के अपमान करे से एको दिन बाज आइल बिया ?

भोलू के नोकरी लागते ढेर हित मित पैदा हो गइले। जवना घरी मुसीबत में रहे केहू झाकी ना मारे आइल रहे। दोसरा के कहो आपन मेहरारू ओकर गरीबी लाचारी के उघटा पुरान करत रहे । ऊ सब दुर्गति सह के नईहर में अगोरले रहे। अब मरद के दिन दुनिया सुधरे लागल त मरद भीरी आवे के बेचैनी लेस देलस। अरूणा के आखिर में अछता पछता के अपना ससुराल में बिना लिउतहर के आवे परल । बाकिर भोलू ओकरा के ले आवे खातिर ससुराल ना गइले ।

बड़ी दिन प अइला के बादो आपन रंग ढंग में बदलाव ना ले आइल। अबो भोलू से भर मुंह बात ना करे। भोलू आपन अकेले रूम में सुतत रहे। अरूणा अलगे रूम में सुते। वियाह कके भी दाम्पत्य सुख ना मिलत रहे भोलू के। भोलू अपना मेहरारू से काम भर ही बात करे। ओकर हर जरूरी चीज जवन मांगे ऊ खरीद के देत रहे। गहना गुरिया जवन जवन कहलस सब बना देलस। जवन चीज चहलस भोलू ओकरा के देलस कि तबो ओकर मन पसिजो। बाकिर ना आजो ओकरा दिल में आपन जीजा के प्यार जिन्दा रहे। ऊ भोलू से प्यार ना कइलस ।ओकरा दिल में तनिको प्यार रहीत त भोलू से जरूर माफी मांग के सुखद दांपत्य जीवन के निर्वाह करीत। बाकिर माथा पर सनक सवार रहे। दुनिया के नजर में मरद मेहरारू जरूर रहन सं। बाकिर अंदर के बात बाहर के लोग के ना पता रहे। भोलू से लोग बाल बच्चा खातिर डांक्टर से देखावे के सलाह देत रहत रहे लोग। बाकिर मुसका के रह जाय। भीतर के दरद केहू के बुझाय ना देत रहे।

एक दिन अरूणा के पांव फिसल गइल आंगन में गिरे से ओकर गोड के हड्डी टूट गइल। ऊ सोचत रहे कि मोच आइल होई। हल्दी छपाई त कुछ दिन में ठीक हो जाई। सांझ के भोलू आफिस से आइल त ऊ बइठ के दर्द से कहंरत रहे। भोलू अस्पताल लेके गइल ओकरा के। एक्स रे भइल। हड्डी टूट चुकल रहे। फेर डांक्टर प्लास्टर कइले। थोरे दरी बाद दवाई लेके अरूणा के लेके घरे ले अइलें। कुछ दिन तक अरूणा के सेवा कइले पेशाब पैखाना निष्कामभाव सब साफ करत रहे भोलू। पति होखे के आपन फर्ज निभावत रहे ।अरूणा आपन छोट बहिन अनिमा के बुला लेलस देखभाल करे आ खायक पानी बनावे खातिर।

अनिमा खायक पानी बनावे आ अपना दीदी के सेवा करे लागल। कबो कबो अनिमा खायक पानी में बाझल रहत रहे त भोलू अपनही अरूणा के गंदा भइल कपडा बदल देत रहन। अनिमा संगे रहत रहत भोलू के लगाव बढल जात रहे। भोलू के व्यवहार से आ बहिन के सेवा करत देख के अनिमा मने मने सोचे काश हमरो अइसने दूल्हा मिलते। दीदी कतना भाग्यशाली बिया कि अतना बढ़िया दुलहा मिल गइले। बाकिर दीदी के कवन पागलपन चढल बा कि जीजा जी के कुछ बुझते नइखे। जीजा जी अतना सीधवा बाड़े कि दीदी के मान जान करे में तनिको पीछे नइखन हटत।

( 5 )

ढेर दिन रहे से जीजा साली में लगाव बढ़े लागल। दिन पर दिन एक दोसरा के बीच के दूरी सिमटे लागल। भोलू आ अनिमा के मन में प्यार के लावा फूटे लागल। भोलू प्यार के भूखल रहले रहे। अनिमा बड़ी मान जान करे भोलू के। डेढ से दू महीना संगे रहे से एक दोसरा से प्यार गहिड हो गइल, कवनो अचरज के बात ना रहे। संगे रहे से त कुता बिलाई से लगाव हो जाला। अब दूनो एक दूसरा के पसन करे लगलें। बाकिर समस्या रहे कि ई पत्नी के रहते विआह कइसे होई ?

भोलू एक दिन अनिमा से अपना संगे बियाह करे प्रस्ताव रखले त अनिमा राजी हो गइल। अब ऊ मन बना लेले अनिमा से बियाह करे के। ऊ जानत रहन कि समाज के लोग इहे कही कि बाल बच्चा ना भइल त बियाह क लेलस। अनिमा के भोलू से बढत नजदीकी देख के अरूणा छनकल। अब डर सतावे लागल कि हमरा के छोड़ मत देस। छोड़ दिहे त ना एने के रहब ना ओने के। अब अरूणा काम चलावे भर ठीक हो गइल रहे। अब अनिमा के वापस लवट के रहे।

अरूणा कहलस, " अब हमरा कवनो दिकत नइखे। अनिमा के गांवे पहुंचा दी। "

भोलू कुछ ना बोलल। ओकर मन में दोसर बात चलत रहे। ऊ ससुराल जाके सास से बात करे के मन बना लेलस।

भोलू चार साल बाद दूसरा बेरा ससुराल , अनिमा से शादी खातिर बात करे गइले। बेरोज़गारी के अपमान के घूंट पी के आइल रहे। मान सम्मान पावे खातिर पाकिट के भारी रहल जरूरी बा। पाकिट भारी ना रही त दुनिया में केहू ना पूछी। बेरोज़गार आदमी के सलाह नीमनो होई तबो केहू ना माने।

सास से कहलस, "आज तक हम कुछ ना कहनी आज हम एगो बात बतावे आ कुछ मांगे आइल बानी। बात ई बा कि अरूणा आपन जीजा से प्यार करत रहे तब हमरा से बियाह कके हमरा गला में ई ढोल कहे टांग देनी जा ? "

"ई का कहत बानी पाहुन ? पांच साल वियाह कइला भइल। कतना बेर बेटी आइल गइल तनिको भनक ना लागल।

ना लागल त सुनी, " ओकरा से हमरा कवनो सुख स्वार्थ ना मिलल। हमरा से आज तक भर मुंह ना बोलल। हम सुतब एह घर में त ऊ सुती ओह घर मे। ऊ त साफ कह देलस कि एगो दिल रहे ऊ हम आपन जीजा के दे देले बानी। हमरा भीरी का बा जवन तोहरा के दी। ई शरीर उनुके नांवे समर्पित बा। एह शरीर पर तोहार हक नइखे। हम भर जिनिगी फरके सुतब। तोहरा लगे कबो ना। हम आपन प्यार एह जनम में ना पवनी त ओह जन्म में हम जरूर पा के रहब।

ऊ कहले रहे नू रावा से हम दोसर लइका से वियाह ना करब तबो रावा सभे हमरा गले मढ़ के हमार जिनिगी से खेलवाड काहे कइनी जा ? ऊ जेकरा के चाहत रहे उनुके से नू वियाहे करे के चाही ? हमरा गला ढोल काहे मढ़ देनी ? "

ई सब जवन बात कहत बानी कि ऊ फरका सुते ले, आज तक हमरा से चाहे भउजाई से बतवलस? हम का जानत बानी? हम सोचत बानी अतना साल हो गइल बाल बच्चा काहे ना भइल। तबो रावा अतना साल से रानी बना रखले बानी जवन गहना गुरिया इहां ना पन्हले रहे तवन रवा पेन्हावत बानी। रावा देवता बानी। अब रउवे कही। का कहल चाहत बानी...?"

"हम अब अनिमा से वियाह कइल चाहतानी। अब ऊ इहां ना अइहे। ऊहो राजी बाडी। खाली रावा हां कर दीं।"

" कइसे खडे खडी हां कह दी जा। घर में सब परिवार बा सब के सलाहे से नू होई कवनो काम?"

" ठीक बा अब हम चलत बानी। सलाह कके हमरा लगे खबर भेजब। "

"ठीक बा कम से कम पानी त पी के जाई। असही पानी आ मिठाई रावा लगे धइल बा मुंह में तुरियो के ना डलनी। "

(. 6. )

" जहां अपमान होला उहां हम पानी ना पी। ई हम ओही समय कसम खइले बानी जब पहिला बेरा इहां आइल रही।

" अब कहिया कहिया के बात के गिरह बन्हले रहब?"

"दू दू गो अभी रावा दमाद बाडे एक आदमी के , ना आवे जाय आ ना खइला पिअला से का बिगडे के बा। अब हम निकलत बानी हम जाके मंदिर में वियाह क लेब। "

"ठीक बा जाई , रवे मनवा के नू बा। हम का कही। "

घर में एह बात के सब परिवार मिल के चर्चा करत रहे लोग।

अरुणा के बाबू सोचले एके घर में एके आदमी से वियाह कइला से गांव में बड़ी शिकायत होई।आपने बहिन शौतिन हो जाई । काठो के शौतिन पसन ना कवनो मेहरारू के।इहो लोग कहे लागी कि इहो बेटी के ओही लंगड़ा के संगे गांथ देले। समाज के लोग इहो कही कि जब तिलक दहेज देवे कूबते ना रहे त बेटी जनमवले काहे रहे ?

अरुणा के माई कहली ," कहे दी लोग के, केहू एको रोपया देवे वाला बा? कतना करजा देही पर लादब ? जेकरा, जेकरा कहे के बा कहत रहो का फरक परत बा। इहां कतना लोग दूदूगो वियाह कइले बा। के केकरा फेर में बा? कवनो काम कइला प चाहे कतनो बढ़िया काम होखे, कुछ लोग बढ़िया कही त कुछ लोग खराब कही। हमनी के आपन नफा नोकसान देखे के बा। एह चलते हम कहत बानी अरूणा के पापा जवन होत बा होखे दी। हमनी के कवनो रोक नइखे लगावे के। "

"ठीक बा जइसन तोहरा लोग के मन। "

भोलू मंदिर में जाके अनिमा से वियाह क लेले। अब दूनो पति पत्नी प्यार मोहब्बत से रहे लगलें। भोलू अब अनिमा के खूब माने जाने। गते गते अरुणा उपेक्षा के शिकार होखे लागल। अब अनिमा के हर जरूरत भोलू पूरा करे । अब अरूणा के जवन पहिले मान जान एकतरफा भोलू करत रहन सब अब खतम हो गइल । अब अरूणा के अखरे लागल। अब अनिमो आपन दीदी से कम बोले लागल। अब सौतिन वाला व्यवहार शुरू करे लागल। भोलू अब अरुणा ओरे तकबो ना करे ।

समय पलटा मरलस। अरूणा घर मे पति से अपना के दूर रखलस अब ओकर पति ओकरा से दूर हो गइल। अब त घर में केहू ओकरा के पूछतो ना रहे कि खइबू कि ना? अब अरूणा जवन बोअले रहे अब काटे लागल। अब पछतावे के सिवाय ओकरा कुछो ना बांचल। गते गते अरुणा के चेहरा के चमक उतरे लागल। जवानी में बुढ़ापा के असर लउके लागल । अरुणा अब जादे नईहर रहे लागल। बाकिर अब नईहरो में जिनिगी पहाड़ हो गइल। । भउजाई संगे लडाई झगड़ा रोज कुकुराह होखे लागल। भउजाई से उबिया गइल रहे अरूणा ।

ओकर भउजाई कह देलस, " आज तक ई अपना पति के आपन हक अधिकार ना देलस। ना मान सम्मान कइलस त एकरा के केहू काहे इज्जत करी ? भतार छोड़ के नईहर अगोरले बिया।"

घर के शांति भंग हो गइल । अब अरूणा के जिनगी नरक होखे के शुरूआत रहे। अब ओकर जीजा मुंह मोड़ लेले। ओकर फोन हमेशा खातिर बंद क देले। अब गते गते ओकर प्यार के भूत उतरे लागल। ससुराल में अब आपन बहिन अब सौतन हो गइल रहे। अब ओकरो जोरे बोलाचाली ना रह गइल ।

अब भोलू शहर में किराया के घर लेलस। अनिमा के अपना संगे लेके चल गइल । भउजाई के कुकुराह से उबिया के लाचारी उहां से आवे परल अरूणा के । घर में अकेले रहे लागल। अब तनाव में रहे लागल। अब ओकर दिमाग में सब पीछे के बात याद आवे कि का कइनी , का पइनी ? अब आंख से लोर ढरकत रहे। कबो कबो आपन गलती के पछतावा में आपन माथ के बाल नोचे।

(. 7. )

एक दिन खबर आइल कि अरूणा के लकवा मार देले बा। भोलू छुट्टी लेके अनिमा संगे गांव अइले। अस्पताल में भर्ती करवा देले। इलाज शुरू हो गइल । कवनो फायदा ना भइल । खटिया ध लेलस। परले पेशाब पैखाना खोके। जतना दिन छुट्टी रहे भोलू सेवा कइलस अरुणा के । छुट्टी खतम भइल त जाय लगले त अनिमा से इहें रह के आपन बहिन के सेवा करे के कहले। अनिमा इहां रह के आ सेवा करे से साफ इनकार क देलस।

भोलू कहलस ," एकरो के संगही लेले चलल जाव।"

अनिमा कहलस," उहां एके घर बा त कहां रखल जाई। आ सेवा के करी? हमरा से एकर सेवा ना होई। एहिजे एगो दाई लगा देल जाय। "

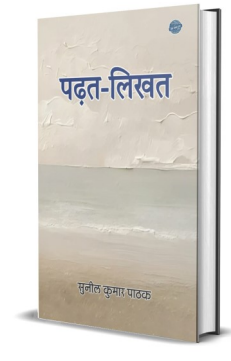
भोलू कहलस ," तोहार बहिन ह त तू ना सेवा करबू ? "

"ना जी हमरा से ना होई। "

भोलू के संगही चल गइल अनिमा । एगो मोहल्ला के औरत अरूणा के सेवा करे खातिर पइसा पर रख देले। बाकिर ऊ बढ़िया से सेवा ना करे। एक दिन बीच कके ओकर बिछावन बदलत रहे। परले परले महक गइल । देह के गींजन हो गइल । बिछावन पर परल परल घाव हो गइल । देह दुरे से बसाय लागल।

❑❑

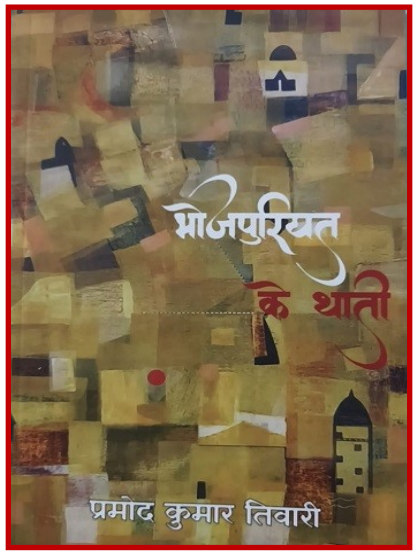
**पकड़ी , आरा ,भोजपुर , बिहार**





# भोजपुरियत के थाती से कुछ बात-बतकही

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी




भोजपुरी भाषा आ साहित्य पर अनथकले सन् 2001 से काम करे वाला बेकती, पेशा से अध्यापन आ मन से पूरे का पूरा भोजपुरिया डॉ प्रमोद कुमार तिवारी जी के भोजपुरी के ई पहिल कृति ह। इहाँ के भोजपुरी भाषा खातिर समर्पित संस्था 'आखर' के थिंक टैंक का रूप में चर्चित बानी। भोजपुरी में कउनो विषय के तर्क आ प्रमाण का संगे राखे में इहाँ के महारत हासिल बा। महारत हवा में हासिल ना होला, मने इहाँ के जबर पढ़ाकू बानी। जवना के बानगी इहाँ के लेखनी से निकसल कउनो रचना में बखूबी देखल जा सकेला।

'भोजपुरियत के थाती' के बघार दू खंड में बा। पहिलका खंड में गुरु गोरखनाथ से लेके शैलेंद्र तक के भोजपुरिया समाज से संबंध के देखे के कोशिश भइल बा आ दोसरका खंड में भोजपुरी के जरूरी किताबन से बतकही भइल बा। खंड एक – 'नेंव के ईंट' में कुल 8 गो आलेख संकलित बा। खंड – 2 किताब से बतकही में 7 गो आलेख संकलित बा। हर आलेख में लेखक अपने बात के तर्क आ प्रमाण के संगे प्रस्तुत करे के परयास करत देखात बाड़ें। उनका परयास भोजपुरी के एह बातिन के विमर्श के मंच तक चहुंपावे के परयास का रूप में देखे के चाही, अइसन लेखक के कहानगियो बा।

पहिल आलेख 'जगावे वाला गुरु गोरखनाथ आ भोजपुरी'में लेखक गुरु गोरखनाथ के ओह सगरी पक्ष के रखले बाड़न जवना के भोजपुरिया समाज उहाँ के नायक का रूप में देखल आपन सौभाग्य मानत रहे। लोक आ शास्त्र के चकरी में पिसात गोरखनाथ के ऊपर अकादमिक काम के ना भइला के उल्लेख देख-पढ़ के मन भकुआ गइल। भोजपुरिया लोगन के ओह चरित्र पर लेखक अंगुली उठावत देखात बाड़े, जवन अपने नायक के प्रति उचित न्याय ना कर पवेला। बाक़िर लेखक गोरखनाथ के भोजपुरिया समाज के एगो पोढ़ नायक का रूप में निरूपित करे में कोताही नइखे कइले। 'भोजपुरी आ कबीर' में लेखक अभिजात्य, संस्कृतवादी, वर्चश्ववादी, ब्राह्मणवादी संस्कृति के समानान्तर लोक के बहुजनवादी, समूहिकतावादी, मेहनतवादी,श्रमशील लोगन के प्रतिसंस्कृति के प्रतीक पुरुष का रूप में कबीर के खाड़ करत बाड़ें। एह आलेख में लेखक के एगो सवाल मन के छू जात बा, कि हिन्दी के लोग कबीर के भाषा के भोजपुरी कहे से काहें मुँह चोरावेले? कबीर पर बात करत लेखक भोजपुरिया समाज के मेहनतकस होखे आ बिरोधी तेवर वाले संस्कार के जनले बिना कबीर के समझल मोसकिल बा, कह के साँच से परिचित करा रहल बाड़ें। मैनेजर पाण्डेय के शब्दन में 'कबीर मनुष्य के स्वतन्त्रता के कवि हैं'। "कवना समाज के हीरो हउवन रैदास" के बहाने लेखक एक बेर फिरो ई सवाल उठवले बाड़न कि 'भोजपुरिया सामाज के लोग अपना नायकन के सम्मान देवे कब सीखी। लेखक तेग अली तेग के भोजपुरी में लिखला का वजह से उनुका सनमान जवन चाहत रहे, ना मिलल। एकर कारण ई बा कि भोजपुरिया लोग अपना भाषा भा अपना नायकन के सनमान देवे ना सिखलस। ई बाति ढेर थोर अजुवो बा। 'किंवदंती बने बदे मजबूर महेंदर मिसिर' पर बात करत लेखक ओह सगरे तथ्यन के पड़ताल करत देखात बाड़ें, जवना कारन से महेंदर मिसिर के उनुकर यथोचित सनमान ना मिलल। एह खातिर लेखक भोजपुरिया समाज से आह्वान करत बाड़ें कि महेंदर मिसिर के भोजपुरिया स्वाभिमान के प्रतीक बनावे खातिर माँग उठावे के चाही। रघुबीर नारायण के गीत 'बटोहिया' के विवेचन बहुत बारीक आ स्वाभाविक भइल बा। ई उहे गीत ह जवना के गांधी जी भोजपुरी के बंदेमातरम कहि के सम्मान देले रहलें। 'भिखारी ठाकुर के नाटक आ भोजपुरी समाज'पर आपन कथ्य राखत लेखक उहाँ के समाज के नब्ज के जानकार मनले बाड़न, जवना के कवनो दीठी से देखला पर उचित बुझात बा। भोजपुरी समाज गुण-दोष के विवेचन पाठक के साँच से रूबरू करा रहल बा। समाज से संबंध बनावे के सबसे शानदार माध्यम नाटक के आपन हथियार बनाके समाज के जवन सनेस देवल चाहत रहलें, बखूबी देवे में सफल भइलें। अलग-अलग नाटकन में पात्रन के नाव का माध्यम से भिखारी ठाकुर एगो क्रान्ति के मसाल जलवले बाड़न। शैलेंद्र जी के गीतकार शैलेंद्र का रूप स्थापित करे में उनुके भोजपुरियत के अनदेखा नइखे कइल जा सकत, लेखक बेर-बेर एह तथ्य के उजागर कइले बाड़न।

‘भोजपुरियत के थाती’ के दोसरका खंड में किताब से बतकही बा। जवना में 7 गो किताबन पर डॉ प्रमोद कुमार तिवारी जी आपन मंतब्य रखले बाड़न। अवध बिहारी सुमन के किताबि ‘जेहल कS सनदि’,दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह के किताबि ‘भोजपुरी लोकगीत में करूण रस’,हंस कुमार तिवारी आ राधा बल्लभ शर्मा के संपादित किताबि ‘भोजपुरी संस्कार गीत’,डॉ उदय नारायण तिवारी जी के किताबि ‘भोजपुरी भाषा और साहित्य’,डॉ शशि शेखर तिवारी के किताबि ‘भोजपुरी लोकोक्तियाँ’,रामनाथ पाण्डेय के पहिल उपन्यास ‘बिंदिया’, चन्द्रशेखर मिश्र के महाकाब्य ‘कुँवर सिंह’ पर शोध परक विश्लेषण भइल बा। कम शब्दन में कहल जाव त ई कि ‘ई भोजपुरी साहित्य के उ थाती बा,जवना के दरकिनार क के भोजरी साहित्य के बात कइल बेमानी बुझाई।’

डॉ प्रमोद कुमार तिवारी जी ‘भोजपुरियत के थाती’ का माध्यम से बहुत कुछ अनछुवल पहलुवन का ओर धियान खींचले का प्रयास कइले बाड़न, जवन गुजरत बेर पाठक लोग के जरूर बुझाई। पछिला पाँच बरीस से ई किताबि भोजपुरी साहित्य जगत के सोझा बा। ढेर लोग एह किताबि से कुछ ना कुछ जरूर सीखले-पढ़ले होई, ई हमरा बिसवास बा। एकरा संगही डॉ प्रमोद कुमार तिवारी जी के बहुत बहुत बधाई आ शुभकामना।

**पुस्तक- भोजपुरियत के थाती**
**लेखक – डॉ प्रमोद कुमार तिवारी**
**विधा- आलेख**
**मूल्य-रु0 199.00**
**प्रकाशन वर्ष-2021**
**प्रकाशन संस्थान – साहित्य विमर्श प्रकाशन , गुरुग्राम, हरियाणा**

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)



**डॉ० दिनेश प्रसाद सिन्हा**

## मितवा हो

मितवा हो, तोहसे मिले के,
मन करेला, कइसे बुलाई।
आजा ना जोन्ही रतिया में,
संग बइठ तनिक बतियाई।

तोहरे सुरतिया जादू करेला,
उड़ा ले जाला मोरी निंदिया।
तोहरे हँसी के मीठ बोलिया,
देला मनवा रोज हरसाई।

चुनरी उड़ि-उड़ि बात कहेला,
पुरवइया देला मुसुकाई।
पिरितिया के ई कलिया,
आव धीरे-धीरे खिलाई।

रूठब त हमहीं मना लेब,
अँखिया के लोर सुखाई।
कहब, "अब मत रूठऽ।"
चल स्नेह फेर जगाई।

चनमा गवाही आज देई,
तरेगन संग दूधिया अजोर बिछाई।
हाथ पे हाथ धर, मितवा मोरा,
सपनवा सच हो जाई।

जनम-जनम के नेहिया माँगी,
दूजा कुछ ना चाही।
मितवा हो, तोहरे संगहीं,
जिनगी हँसत-खेलत बिताई।

❑❑

❍ मुजफ्फरपुर , बिहार



अंकुश्री

# बिरोध

मुखिया के चुनाव में रामप्रसाद फेर हार गइलन। उनका हारे से जादे एकर दुःख रहे कि महेंद्र प्रसाद जीत गइल रहस। पछिला पाँच साल में महेंद्र प्रसाद जनता के हित में बहुत काम कइले रहस। सड़क, नाली, सफाई, सोलर रोशनी, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा सब तरफ उनकर काम देखाई देत रहे। हर तबका के लोग उनकर काम से बहुत खुश रहे। एहसे चुनाव में उनका भोट माँगे खातिर जाएके ना पड़ल, उनकर कामे उनका के जिता देलस।

रामप्रसाद लगे पइसा रहे, चुनाव में खूब खरचा कइलन। भोट माँगे घरे-घर गइलन। ऊ कवनो विकास के बात ना करत रहस। ऊ सबके एके बात कहत रहस, 'पाँच साल के मुखियागिरी में महेंद्र प्रसाद सरकारी निधि खा गइलन आ कवनो काम नइखन करइले।'' बाकिर रामप्रसाद के कुप्रचारों के बाद महेंद्र प्रसाद भरपूर भोट से जित गइलन।

महेंद्र प्रसाद के कामे उनकर पहचान रहे। गाँव-जवार के लोग उनका के पसंद करते रहे, सरकारी तंत्रों में उनकर नीमन पहचान बन गइल रहे। उनकर ई बढ़ंती रामप्रसाद के बहुत खराब लागत रहे। ऊ जल-भून के रह जात रहस। महेंद्र प्रसाद के विरोध में ऊ सरकारी महकमा में लिखा-पढ़ी करे लगलन। गाँवों में उनका विरोध में मीटिंग कर-करके लोग के भड़कावे लगलन। बाकिर गाँव वाला महेंद्र प्रसाद के ईमानदारी से कइल काम देख के बहुत खुश रहे। आसपास के पंचायतो में उनकरा काम के चर्चा होखे लागल रहे।

रामप्रसाद के जब महेंद्र प्रसाद के बिरोध में कुप्रचार के कवनो लाभ ना बुझाइल त ऊ पंचायत भवन के सामने धरना पर बइठ गइलन। शांतिपूर्ण धरना रहे, बाकिर दिन भर माइक के हो-हल्ला से उहवाँ के वातावरण अशांत हो गइल रहे। पहिलका दिन धरना स्थल पर करीब दू दर्जन लोग रहे। बाकी दूसरके दिन से उहवाँ आदमी के संख्या कम होके चार-पाँच पर आ गइल। रात के उहवाँ मुर्ग मुसल्लम के बेवस्था रहे। एहसे दिन में भले चारे-पाँच आदमी देखाई देत रहस, बाकिर साँझ होअते उहवाँ कुछ आउर लोग आ जात रहस। धरना स्थल पर लोग आवे आ खा-पी के ओह लोग के पक्ष-विपक्ष में बतिआ के चल जात रहस।

पंचायत भवन लगे धरना एकदम असफल हो गइल। रामप्रसाद सोचलन कि महेंद्र प्रसाद के असली बेइज्जती प्रखंड कार्यालय लगे धरना देला से होखी। ऊ उहवाँ धरना शुरू कर देलन। चाय-पानी के बेवस्था देख के दूर-दराज से आइल दोसरो इलाका के लोग उहवाँ बइठ जात रहस। प्रखंड कार्यालय में लोग तरह-तरह के काम खातिर आवत रहस। खड़े-खड़े थाक गइला पर ऊ कुछ देर धरना स्थल पर बइठ के चाय-पानी पी लेवत रहस। रामप्रसाद मीडिया वालन के बोला के बन्हिया से नास्ता-पानी करवा देले रहस। जब पता चलल कि धरना महेंद्र प्रसाद के बिरोध में हो रहल बा त दोसरे दिन से मीडिया वाला आवल बंद कर देलस। महेंद्र प्रसाद के गुणगान मीडिया में हमेशा होत रहत रहे।

प्रखंड कार्यालय के बाद रामप्रसाद जिला कार्यालय लगे धरना देवे के मन बनइलन। बाकिर मुद्दा मालूम भइला पर उनका धरना के अनुमति ना मिल पाइल। कुछ वकील लोग केस करे के राय देलस। बाकिर रामप्रसाद के विरोध में कवनो दम ना रहे। ऊ एगो नया तरीका सोचलन। दू गो मजदूर ले के रात में जहाँ-तहाँ के सड़क आ नाली तुड़वावे लगलन, जेसे महेंद्र बाबू के काम में नुक्स निकल सको। ई बात मीडिया वालन के मालूम हो गइल। दूसरके दिन रामप्रसाद के करतूत के चर्चा सब जगह होखे लागल। बात आगे बढ़ल आ सरकारी संपत्ति के नुकसान पहुँचावे के आरोप में ऊ गिरफ्तार हो गइलन। जेल में आपन कहानी बतावत ऊ कहलन, 'अगिला चुनाव में महेंद्र प्रसाद के हराके जरूर हम मुखिया बन जाएब।''

❑❑

8, प्रेस कालोनी, सिदरौल,
नामकुम, राँची (झारखंड)–834 010



# भोजपुरी के जाति गीत : संदर्भ आ सौंदर्य

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरी लोक साहित्य में लोकगीतन के बहुते समरिध परंपरा बा। लोकगीतन में सगरे समाज के संवेदना मुखर होके सोझा आइल बा। कवनो परिवार आ समाज के जाने-समुझे के एगो बरियार माध्यम लोकगीतनके मानल जा सकेला। भोजपुरिया समाज अपने रीति-रेवाजन के जी भर जियेला,बरतेला आ ओहमें सउनाइलो रहेला। जब भोजपुरिया समाज में मनोरंजन के कवनो साधन ना रहे त लइकन-बचवन के बझावे-मनावे खाति जवन सभे ले कारगर उपाय रहल, उ कहनी सुनल-सुनावल रहल। ओहि लेखा समाज आपन मनोरंजन गीत,संगीत आ नाच में हेरत -पावत रहे ।एकरा चलते भोजपुरी समाज के सोझा लोकगीतन के लमहर भंडार तइयार भइल । मनई त मनई ,भोजपुरी समाज के महिला लोग अपना प्रेम, बिरह, खुसी आ पीर के एही लोकगीतन में हेरत-पावत रहलीं। इहे उ भोजपुरिया लोक संस्कृति ह, जवन सदियन से बलखात अल्हण नदी लेखा बहत चलल आ रहल बा।

भारतीय सभ्यता संस्कृति ओकर पौराणिक जन-जीवन , रहन –सहन , खान-पान , दुख-विलाप , हर्ष-उल्लास का साथे जीवन का हरेक पहलू जनम से लेके मरन तक के बखान हमनी का लोकगीत भा लोकगाथा में गतिबद्ध बा, जवन एक पीढ़ी से दूसरा पीढ़ी तक आसानी से पीढ़ी दर पीढ़ी भेंटत बा।

भोजपुरी जाति गीत समाज के विभिन्न व्यवसाय आ जीवनशैली के सोझा परोसे आ मनोरंजन के एगो अंग रहे । भोजपुरी में जातिगत गीत मूल रुप से जातिगत ना हो के श्रम आधारित गीत ह बाकिर सदियन से वर्ण-व्यवस्था में कर्म के लिंक जाति से भइल त जाहिर बा एह कर्म-विशेष गीत , जाति विशेष गीत बन गइल ।

**अहीर जाति के गीत :**

कर्म शील लोगन में जाति आधारित गीत खूब गवात रहलें, जवना में मेहरारून के सुख-दुख त रहबे कइल, उनुका मनोरंजन का संगही थकान मेटावे के एगो अस्त्र लेखा रहे। अक्सरहाँ एह गीतन के थकान के भुलवावे भा काम पर जाये के पहिले के तइयारी के बेरा गावल जात रहे।

*'कतनों अहिरा होई सुजान*
*बिरहा छोड़ि न गावै आन।'*

सभेले चर्चित जाति गीतन में बिरहा के जिकिर होला । बिरहा में मेहनतकश आदमी के पीर आ ओकर मन के विरोध सुनाई पड़ेला।एगो बिरहा में स्त्री के पीड़ा देखीं-

''पिया पिया कहत पियर भइली देहिया, लोगवा कहेला पिंडरोग।
गंउवा के लोगवा मरमियों ना जानेले, भइले गवनवा ना मोर।''

अहीर जाति के एगो अउर गीत विधा ढेर प्रचलित रहे, जवन अब गवें गवें बिला रहल बा। ओह विधा के फरुवाही के गीत कहल जात रहे। ई समूह गीत हवे , जवना 10-12 लोग के समूह मिल के गावत रहे आ बीच बीच में करतब देखावत रहे। जवना के भोजपुरिया इलाका में लोग खूब पसन करत रहे । एगो फरुवाही गीत देखीं-

*''धुरिया लगावे धुरियाहवा कहाले, गिरही मारेले फरुवाह*
*उलटा दोकछवा मारे अहिरा बलकावा,*
*जिनकर बटुरि नंवेले करिहावा।''*

लोरिकी भा लोरिकायन गाथात्मक गीत होलीं जवन अहीर जाति के सभेले प्रिय गीत हवे । चरवाही करत बेर अक्सरहाँ लोग गावत रहे । एह गीतन के प्रवृत्ति बीर गाथात्मक होले । एगो गीत देखीं जवना में लोरिक के युद्ध कौशल के बरनन बा-

*''नौ सौ फउदिया मुंडवा काटी दिहलस गिराय*
*जैसे त काटे य दादा खेती तेगा किसान*
*तैसे त कटत फउदिया लोरिकवा पछिम चलि रे जाय*
*घुमि घुमि पलटन के दादा काटत रे बाया।''*

**धोबी जाति के गीत :**

काम पर जाये के पहिले के तइयारी के बेरा धोबी जाति के एगो गीत देखल जा सकत बा-

*"मोटी-मोटी लिटिया लगइहे धोबीनिया की बिहने चले के बा घाट,*
*तीनहूँ चीज मति भूलिहे धोबिनिया की टिकिया, तमाकु, थोड़ा आग।"*

रोपनी सोहनी गीतो अपने में महिला लोग के दुख-दरद का संगही इच्छो के अपना मरद के सोझा राखे क एगो सुखद मोका लेखा होत रहे । अबो रोपनी के समय में रोपनी करत बेरा अइसन गीत सुने के भेंटा जाले । एह गीत में मेहरारू अपने मरद से जवन-जवन निहोरा करी रहल बा , उ देखे जोग बा-

*रतिया में हमरा सेजरियो नाही भावे,*
*मोर बलमुआ रे, सलवा–दुसलवा मँगाव। 2*
*सलवा-दुसलवा से चढ़ले सिर गरमिया*
*मोर बलमुआ रे, रसे-रसे बेनिया डोलाव ।2*
*बेनिया डोलवते मोर मुरुकल कलइया*
*मोर बलमुआ रे, पटना से बयदा बोलाव ।2*
*पटने के बयदा रे, मागे सात सै रुपइया*
*मोर बलमुआ रे, मोहर भजवलो ना जाय। 2*
*मोहरा भजावत हमरा पलटल पुतरिया*
*मोर बलमुआ रे, मेहर लइका जियरा के जवाल।2*

**तेली जाति के गीत :**

भोजपुरी लोक साहित्य में श्रम गीतन के लमहर परंपरा रहल बा। अलगा-अलगा श्रम करे वाली जातियन के आपन पारंपरिक काम करत बेरा ओह गीतन के गावे क रेवाज़ देखाला। उ रेवाजन से बेसी उनके अपने काम में मस्ती के सुवास भरत रहे । तेली जाति ओह लोगन के बीच एगो अइसन समूह रहल जवन तेलहन से तेल निकाले के काम करत रहे। एगो गीत जवना में घानी अउर ओहसे तेल निकाले का जिकर बा। जवना में तेली अपने मेहरारू से पूछ रहल बा कि कवने जूने घानी लगवले बाड़ू आ तेलिन ओकरे के बता रहल बा-

*कौनी जुनियां तेलिनि घनिया लगावे*
*अरे कौनी जुनियां ना।*
*कोइलरि सबद सुनावे कि कौनी जुनियां ना*
*आधी की रतिया तेलिनि घनिया लगावे*
*कि पिछली रतिया ना।*
*कोइलरि सबद सुनावे कि पिछली रतिया ना।*
*कौनी जुनियां बाबा पूता के जगावे*
*कि कौनी जुनियां ना।*
*गोरिया चुड़िया खन-खनकावे कि कौनी जुनियां ना।*
*भिनुसहरा के बेरिया बाबा पूता के जगावे*
*कि भिनहीं बेरिया ना।*
*गोरिया चुड़िया खन-खनकावे*
*कि भिनही बेरिया ना।*

**गोड़ जाति के गीत :**

गोंड जनजाति के संगीत आ लोकगीत उनके समृद्ध संस्कृति, प्रकृति प्रेम आ परंपराके अहम हिस्सा हाएह लोगन के पेशा पानी भरल आ लकड़ी चिरला का संगे भड़भूजा झोकल रहे। एगो गीत में गोड़िन कह रहल बिया-

‘‘खुर खुर खुर खुर टाटी बोले, हम जानि पियवा मोर।
पियवा के भेसे अइले, कंगना ले गइले चोर।’’

**गड़रिया जाति के गीत :**

सिउरिया भा पड़ोकिमार ई अइसन विधा ह, जवना के गड़रिया समुदाय अवसर विशेष पर गावत रहे। गवें गवें ई लुप्तप्राय हो चुकल बा।

*मथवा पर पगरी आ हथवा में डंडा, बहेलिया रहला का*
*पिया हो पिछले जनमवा में गड़ेरिया रहला का।*

**कहरउवा गीत:**

ई भोजपुरी के एगो प्रमुख लोकगीत ह। पुरान समय में रानी लोग भा नई दुलहिन के नइहर भा सासुर जाये के एगो महत्वपूर्ण साधन डोली रहे। डोली के चार लोग कन्हा पर ढोवत रहे। ई काम कहार जाति के लोग करत रहे। डोली ढोवत बेरा थकान मेटावे के क्रम में जवन गीत उ लोग गावत रहे, ओकरा के कहरउवा गीत कहल जाला। एगो गीत में बूढ़ा कहार अपना बारे में कह रहल बा-

‘बुढ़वा कंहरवा के आई बुढ़इया तौ फेके तलौने में जाल।’

**माली जाति के गीत :**

माली जाति के गीतन में समाज के सान , रंगदारी आ संस्कृति के देखावत बतावत गीत होली। देवी गीतन में माली भा मालिन बात जरूर देखाला। सभेले चर्चित देवी पचरा जवन हर मंगल काज में सभेले पहिले गावल जाला।

*निमिया के डाढ़ मईया लावेली झुलुहवा हो की झूली रे झूली ना*
*हो की झूली रे झूली ना*
*की मईया मोरी गावेली गीतियाँ हो की झूली रे झूली ना*

**सन्दर्भ :–**

1. भोजपुरी लोकगीत में करुण रस- दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह
2. कृष्णदेव उपाध्याय, लोकसाहित्य की भूमिका, साहित्य भवन, इलाहाबाद,
3. भोजपुरी लोकगीतों की सामाजिकता - डॉ. जितेंद्र कुमार यादव
4. कृष्णदेव उपाध्याय : भोजपुरी लोकगीत, भाग 1

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)



# छठ गीत

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

1.

आजु कहनी सुनाएब बार बार सइयाँ जी।
छठी माई क महिमा,अपरम्पार सइयाँ जी॥

त्रेता में सीता मइया कइली छठ बरतिया
रामराज पसरल, परजा सुखी दिन रतिया
जुग जुग के मिलल माई क दुलार सइयाँ जी॥
छठी माई क महिमा------

द्वापर में कुंती जब कइली छठ बरतिया
करण जइसन बेटा पवनी अद्भुत सुरतिया
उनुका पराकरम के खिस्सा हजार सइयाँ जी॥
छठी माई क महिमा------

जुआ में हरलें पांडव आपन दउलतिया
द्रोपती के छठ बरत के सुनाइल बतिया
माई किरपा से लउटल सब असरार सइयाँ जी॥
छठी माई क महिमा------

राजा प्रियब्रत के ऋषि पुत्रेष्टि जग करवले
नवें महीना मालिनी रानी के बेटा जनमलें
मुअल लइका देखि राजा बेजार सइयाँ जी।
छठी माई क महिमा------

आत्मघात के सोचलें राजा जात समसाने
राजा के सोझा हे अइली छठी माई बहाने
कहलीं पूजा के किरती अपार सइयाँ जी।
बेटा होते गूँजल जय-जयकार सइयाँ जी।
छठी माई क महिमा------

अजुओ ले छठी माई के लमहर किरीतिया
आई मिली जुली सभे कइल जाव बरतिया
माई कामना पुरइहें हर बार सइयाँ जी।
छठी माई क महिमा------

❑❑

2.

भीरिया के मारल तिवइया
तिवई काहें पछताय।
भगती संग करी ना पुजनिया
छठी माई होइहें सहाय।
दउरा में भरि भरि फर फरहरिया
नंगे पाँव चलेलें बरती डहरिया
उग्गत सुरूज़ के अरघिया
सुरूज़ देव होइहें सहाय।
माई के गीत गूँजत भर नगरिया
घर के सवांग सब बनिहें कंहरिया
भगती में रंगल लोगवा
पूजे छठी माई के जाय।
बेटा बेटी चाही भा कवनो परेसनियाँ
छठी मइया दूर करि दीहें निसनियाँ
जेपी के रचल गीतिया
उनुका पूजन बनि जाय।

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)



छठ गीत रिकार्डिंग टीम



धीरेंद्र पांचाल

## कउने जनम भरब हम हानि

लेहीं खेवइया कइसे मईया
मर जाई हमरो पानी।
कउने जनम भरब हम हानि।।

ताना मारी बुढ़ गदेला।।
काहें उतराई ले लेला।।
बेला कठिन रहे रघुवर क
कइला पुरजोर तू मनमानी।
कउने जनम भरब हम हानि।।

तोहके लाज ना आयल भईया।।
काहें मांग लिहा उतरईया।।
नइया पार लगावे वाला सबकर
केहू न हमके जानी।
कउने जनम भरब हम हानि।।

सबकर होई सवाल अनेका।।
तू त कई दिहला अनदेखा।।
कइसे एक सुहागिन क लिहला
तू कँगन बिछुआ मांगी।
कउने जनम भरब हम हानि।।

हम त राम के जानी मानी।।
तोहरो करम फुटल अभिमानी।।
होखी गांव घरे में को को लो लो
पची न पेट क पानी।
कउने जनम भरब हम हानि।।

❑❑

❍ भीषमपुर , चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

राजेश मृदुल



## गांव के याद!

१
गांव त गांव भुला दिहलअ पर गांव के याद के कइसे भुलइबअ।
साथी संहाती संगे लरिकाई के खेल के साध के कइसे भुलइबअ।
दादा आ दादी ऊ काका आ काकी के नेह अगाध के कइसे भुलइबअ,
मांगे बिना चुमि-चूमि के माथ ऊ आसिरबाद के कइसे भुलइबअ।।

२
माई के कोरा में कूदल फानल लोटल पोटल जाइके भुइयां।
पास बोलावे प आवे के नाहीं आ भागल ऊ अगराइ बकइयां।
बाऊ के कान्हें चढ़े कबहू कबहू कबहू चढ़ि जात पिठइयां।
आडर देत बजावल माई आ बाऊ के ऊ जस चाकर नइयां ।।

३
भाई के भाव लगाव भला दिदिया के दुलार के कइसे भुलइबअ।
बूआ के चूमल चाटल मीसल चांतल प्यार के कइसे भुलइबअ।
तूं बड़की अम्मा बड़का पापा पुचकार के कइसे भुलइबअ,
पास पड़ोस के प्रेम के तूं रिमझिम रसधार के कइसे भुलइबअ।।

४
ऊ बकसा वाला घरवा अंगना आ चुल्हानी के कइसे भुलइबअ।
ऊ छोटकी छोटकी कोठरी खिड़की आ पटानी के कइसे भुलइबअ।
ऊ पकड़ी निमियां छइयां एक ओर पलानी के कइसे भुलइबअ,
मोद मनावत धावत ऊ दुअरा आ दलानी के कइसे भुलइबअ।।

५
खेते कबों खरिहाने कबों बगिया बगवानी के कइसे भुलइबअ।
जोतल बोवल काटल दांवल खेती किसानी के कइसे भुलइबअ।
प्यास लगे अंजुरी अंजुरी भरि पीयल पानी के कइसे भुलइबअ,
घाम लगे कसिके मिरदुल तब छाहें छहानी के कइसे भुलइबअ।।

❑❑

❍ मेंहदावल,संत कबीर नगर, (उ.प्र.)



डॉ० दिनेश प्रसाद सिन्हा

## कुण्डलिया छन्द

१

नारी तन-मन नोचत बाड़ें, अपनों के इहें बीच।
पाथर भइल करेजा सबके, मुँह सिलले बाड़ें नीच ॥
मुँह सिलले बाड़ें नीच, कवनो मतलब ना रखत।
लुटावऽते लाज पराई, बइठ के चरचा करत ॥
सझत ना कवनो उपाय, पड़ल बा विपदा भारी।
"दिनेश" करे सवाल, कब ले सहिहें नारी ॥

२

अबला बूझें आज काहें, दुनिया के समबन लोग?
नरभक्षी इयार दौर में, फइल गइल अइसन रोग ॥
फइल गइल अइसन रोग, आस न्याय के बुझाइल।
घर-घर बइठल चीख, दरद केहू से ना गइल ॥
सुनत नइखे जमीर, बहरी हो गइल दुनिया।
गूँजत बा हर ओर, चीख चीख पुकारे मुनिया ॥

३

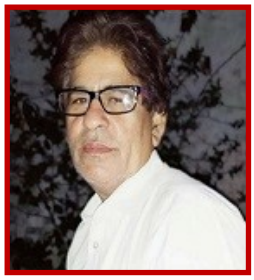
कब ले सहति जइहें, बेचारी अबला नारी?
अत्याचार के पड़ल बा, इहाँ बाटे सब संहारी ॥
इहाँ बाटे सब संहारी, आग हर हिय में लगानी।
चीख रहल गलियारा, रोअता जग के कहानी ॥
जागो अब हे वीर, मेटावऽ सभहू पापी।
तबे बची इरु लाज, डरे जब जग के पापी ॥

❑❑

मुजफ्फरपुर , बिहार



संगीत सुभाष



## गीत

आदित! कण-कण जोति तहार।
गिरि, कन्दरा, अवनि, नभमंडल,
पसरल किरिन पथार।

अक्षय ऊर्जा-उष्मा के बा तहरे घर भंडार।
अति उल्लास, हुलासे तहके पूजे ई संसार।

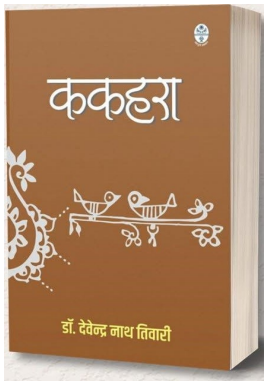
मनके बाती, तृप्ति तेल से तनके दियना बार।
आँखि मूँनि तहके सुमिरत में सब लउकत उजियार।

तहरे किरिपा आजु अगिनि- जल एक साथ बा ठाढ़।
नदिया, पोखर, ताले के जल अगिनि लेत अँकवार।

भावभरल दउरा बहँगी धरि मनई बनल कँहार।
पहुँचा दिहलसि भार घाट पर, अब तूँ हरिहऽ भार।

❑❑

**प्रधान सम्पादक,**
**सिरिजन, भोजपुरी तिमाही ई पत्रिका**





डॉ रजनी रंजन

## छठ गीत

भोरे भोरे रउरा के बोलाइले,
छठी मइया आईं ना अंगनवा।
तिवई के मनसा पुराई ना
छठी मंइया  आईं ना अंगनवा ।।

खरना उपास करी रोटिया पकवनी,
साठी के चउरा के खीरवा बनवनी।
नवो नोह जोड़ माई के अंगना बोलवनी,
केरवा के पतवा पर भोग लगवनी।
हाथ जोड़ करिले विनतीया हो माई ना अंगनवा।।

जोड़े कलसुपवा माई के अरगिया,अयपन सेनुर साथ।
पहिरी पियरिया चलली तिवइया,लेके सिन्होरवा हाथ।।
माई के करब दरशनिया हो, माई आईं ना अंगनवा।।

जाये के बेरिया छोड़ब ना अँचरवा,
माँगब अँचरा पसार।
नइहर सासुर के हित मांगबी,
मांगब सुखी संसार।
मांग के सेनुरवा हो,मइया आईं ना अंगनवा।।

2.

पनीया में ठार बरइतिन करेली गुहार हो,
उगी हे सुरूज देव भइले भिनुसार हो।
हाथ कलसुपवा लिहले करे इन्तजार हो
उगी हे सुरूज देव भइले भिनुसार हो।
लाली किरिणिया के लेके ओहार
अइले सुरूजदेव घोड़ा असवार हो।
कर जोरि तिवई दिहली अंचरा पसार हो
राखब  शरनिया देव  विनती हमार हो।
हंसेले सुरूजदेव अरगा सवीकार हो
भगतन के हमरा रहे सुखी सनसार हो।।

❑❑

घाटशिला , झारखंड

## बेमेल बिआह



कनिया तेरह बरीस में बाबूलाल के घरवाली बन के अइली। उनकर दूध के दाँत भी ना झरल रहे। ई बिआह बाबूलाल शौक से ना कइले एकरा पीछे एगो कहानी हो गइल रहे।

बाबूलाल के  पहिलका  बिआह सत्रह बरीस में  ही हो गइल रहे बाकिर बिआह के सात दिन बाद ही पत्नी के अकाल मृत्यु हो गइल।  पत्नी के अंतिम संस्कार के प्रभाव अइसन पड़ल कि फेर ऊ दोसर बिआह करे के तइयार ना भइलन।

बाबूलाल के रजपुतानी ठाट बिरादरी में उनुका पूरखन से ही खूब चर्चा में रहे। एकबेर उनका पड़ोस के गांव में एक जगह बारात जाए के पड़ल ।राजा लाल ठेठ राजपूत रहलन।उनकर बाप दादा के संपत्ति सभ उनकरा दानी सोभाव के कारण खतम हो गइल। उनकर बेटा आपन गरीबी के जीवन भी बाप के पदचिन्ह पर चल के गुजारत रहलन, बाकिर संस्कार में आजुओ आगे रहलन।ऊ अपना बेटी के बिआह बाबू लाल के कहला पर बंशीधर के घरे ठीक कइलन। लइका शहर में नौकरी करत रहे।लइका साधारण रहे बाकिर ओकर नौकरी बढ़िया रहे। बंशीधर के अपना बेटा पर बड़ी भरोसा रहे।ऊ अपना बेटा के लड़की के चुपचाप से देखा दिहले। ओकरा हामी भरला के बाद आज बारात के ई शुभ मुहूरत आइल।

बारात में साधारण सजावट देख के लइका के संघतिया सभ हँसी उड़ावत कहले - इहे घर मिलल।ई लड़कियो तहरा बराबरी में नइखे। अचानक लइका गायब हो गइल। लड़की के बाप के जब पता चलल कि दुलहा भाग गइल त उ जान देवे  के कोशिश कइलन। कइसहूं गाँव के लोग उनका के बचवलस। ऊ कहे लगलन - अब एकर बारात फिर गइल त हमार बाकी बिटियन के बिआह भी मुस्किल हो जाई।अब हम जी के खाली दुःख में रहब।

बाबूलाल आपन रुतबा देखावत बात सँभारे खातिर कहलन- ठीक बा।हम एकरा के अपना घरे ले के चल जात बानी रउरा चिंता मत करीं। बंशीधर कहले - का कहत बानी? कवना हैसियत से ले जाएब।  बाबू लाल कहलन-जिमेदारी लेहब सभे पंच के सामने। फेर बंशीधर कहले - रउरा बूझत नइखीं,बिना रिश्ता के लोग का कही?

पंडित जी बीचे में कहलन-एगो हमार  बिचार बा ऊ हम कहतानी,  यदि पंच ठीक समझे।उमिर के अंतर त ढेरे बा बाकिर जब जिम्मेदारी लेबे के चाहतानीं तऽ बिआह बंधन में बांध के ले जाईं।बाबू लाल कहलन-का कहतानी पंडित जी! ई ठीक लागी।

बीचे में एगो बुजुर्ग कहलन- हमरा त ई ठीक लागता। एगो नाम मिल जाई तऽ लइकी अधिकार से ऊ घर में रह सकी। खाली

बोलला से ना होई। बा हिम्मत त बिआह करके ले जाई।

बाबू लाल अपने बात खुदे फँस गइल रहले। सकपकात फेर कहले - ई ठीक होई। कहाँ हम उमिर के अंतिम समय में आ कहाँ ई अभी छोटे! बीचे में एगो बुजुर्ग कहलन- एही से कहल जाला ढेर ना फेंके के चाहीं। ओकर बाप तइयार बा तऽ अब काहे के पचरा !

ई घरवा रउरे देखावल रहे ,जइसन लइका ओइसने जवार। इज्जत से ले जाके राखीं।ना तऽ रहे दीं, जाईं लोग।जे होई गाँव के लोग देख ली। बाबू लाल के रजपुताना जोश जाग गइल ऊ लइकी के बाप के आगे जाके कहलन - अगर इहे बात बा तऽ हम तइयार बानी।

लड़की के बाप का करस मन मार के तइयार हो गइलन।

एगो बेमेल बिआह संपन्न भइल।

बिदाई घड़ी लइकी के कवनो खास भाव ना दिखल।ऊ बाबू लाल के संघे पीछे पीछे चल दिहली।

बाबू लाल के बिआह के खबर गाँव में आग जइसन फइल गइल। दुआरी पहुँच के अभी गाड़ी ठारे भइल कि उनकर बूढ़ महतारी जेकरा के लोग आजी कहत रहे,लगे अइली आ कहली - अब हम चैन से मर सकब।छोट बड़ का?तहार सेवकाई करी नु। भगवान जे करेले ठीक करेले।

घर में नात पुतोह सभे फुसफुस करे बाकिर जवना लड़की से कुछ बुझे के चाहे लोग तऽ ऊ हँस के डेहुरी के पीछे घुस के बइठ जाय फेर ओकरा के बाहर ले आइल मुस्किल हो जात रहे। आजी के बिना ऊ बहरी ना आवे।

तेरह आ तिरपन एक दूसरा के बूझे में असफल रहले।दादी बीच में बुझावे के जोगाड़ में रहस। धीरे-धीरे घर गिरहस्ती में कनियवा रम गइल।पाँच छह बरिस बीतला पर आजी ओकरा के ददिया सास के सब गुण सिखा देहली।अब सज धज के दादी के संघे बइठ जात रहली। नौकर चाकर से चाकरी करावे के सुख पाके आपन उमिर के अंतर के भी पाट दिहली। बाबू लाल तऽ संकोच करस बाकिर कनिया हक से बाबू लाल के साथे उठस बइठस। कबो-कबो बाबू लाल से मजाको करस। बाबू लाल सब चुपचाप सुन लेस बाकिर कुछ कहस ना।

बढ़त उमिर के साथे कनिया के मन बदले लागल। लोग के मजाक अब ऊ समझे लगली। आपन पूरा जोग जुगत बाबू लाल के अपना वश में करे खातिर लगावे के शुरू कर दिहली। एहमें आजी खूब ओकर साथ देत रहली।

आजी के जिद से बाबू लाल आपन मड़ई अलग कइलन। अब घर में तीने गो लोग रहे।सभे खुश रहे। बाबू लाल के अब इहाँ संकोच भी कम भइल।अब बेधडक घर में आना जाना होखे लागल। कनिया एह से खूब खुस रहली। बाबू लाल के फटफटिया पर बइठ के जब नइहर भा कतहीं जात रही त खूब खुस होत रही। बूढ़ बंशीधर बेटी के खुस देख के संतुष्ट भइले। भाई बहिन सब उपहार पाके खुश रहें।

बाबूलाल के जीवन भी तनी खुशगर हो गइल। एक दिन आजी बाबूलाल के कहली- तहरा संकोच काहे बा जब कनिया के कवनो आपत्ति नईखे। घर संसार बढ़ी त वंश आगे बढ़ी। बाबूलाल माई के बात के कवनो जबाब ना देहलन आ घर में चल गइले।

अब बाबूलाल के कनिया सब खेत-पथार के हिसाब-किताब भी बूझे लगली। सेठानी बन के उनका खूब गुमान रहे। साठ साल पर बाबूलाल बाप के दरजा पइले। कनिया चहक चहक के सभके आपन लइका देखावस, लाड़ करस बाकिर बाबूलाल तनी सकुचास।बाकिर बच्चा के देख के खूब हरखें। भर जवार के भोज दिहले।उहे पंडित छठियार करावे आइल रहलन जे बिआह करवले रहलन।चुटकी लेत कहलन - बाबू साहब! ई शुभ दिन हमरे दियावल हामोट बक्सीस लेब। बाबूलाल कहले- दिआई।

जेकरा जे मिले के रहेला मिलबे करेला,कहत कनिया के देखलन त ऊ लजा गइली।आज उनका आपन परिवार खूब भरल पूरल लागल।आज के दिन उनका खातिर सचहूँ भाग्य के लेखा रहे जवना खातिर ऊ कबहूँ क्षणभर खातिर भी ना सोचले रहले। अकेला जीवन में माई के जिम्मेदारी ही उनका हिसाब से जीवन के आरंभ आ अंत रहे बाकिर संजोग बनल आ परिवार बन गइल उहो जेकर भविष देखे के सपना अब उनका आंख में जगमगात रहे।

❑❑

घाटशिला , झारखंड



# जगमग शहर आ भक्ति के उल्लास

अभियंता सौरभ कुमार

आश्विन महीना के उजाला पाख (शुक्ल पक्ष) रहे। शहर के कोना-कोना रौशनी से जगमगात रहे। दूर-दूर से माता रानी के दर्शन करे खातिर लोगन के भीड़ उमड़ल रहे। पंडाल के भव्यता देख के लागत रहे की खुद स्वर्ग धरती पर उतर आइल होखे। ऊँचा-ऊँचा झालर, रंग-बिरंग के गेंदा आउर गुलाब के माला, आउर चन्दन के महक से पूरा वातावरण सुवासित हो रहल रहे।

पंडाल के बीचो-बीच माँ दुर्गा के विशाल, भव्य आउर ममतामयी प्रतिमा स्थापित रहे। माँ के दसों हाथ में अस्त्र-शस्त्र रहे, लेकिन उनकर चेहरा पर अइसन वात्सल्य आउर करुणा छलकत रहे, जवना के देख के कवनो दुखी मन के भी शांति मिल जात रहे। माइक पर भक्ती गीत गुंजत रहे आउर ढोल-ढाक के थाप पर पण्डित जी मंत्रोच्चार करत रहले। हर ओर 'जय माता दी' के जयकारा से आकास गूँजत रहे।

एही जगमगाहाट आउर उल्लास के बीच, पंडाल के मुख्य द्वार के ठीक बगल में, एगो बूढ़ी अम्मा थर-थर कांपत खड़ा रहली। उनकर उमर करीब अस्सी साल के पार रहे। गाल धंसल, आँखिन के रोशनी धुंधला गइल आउर देह पर एगो पुरान, जर्जर आउर जगह-जगह से मैइला भइल सूती साड़ी रहे। एक हाथ में लकड़ी के लाठी आउर दोसरा कँपकत हाथ में एगो खाली कटोरा!

सबेरे से एको दाना पेट में ना गइल रहे। आंतड़ी भूख के मारे आइठाट रहे, लेकिन बूढ़ी अम्मा के भीतर के स्वाभिमान अभियो तनी बाकी रहे। ऊ केहू के कपड़ा ना पकड़त रहली, ना जबरदस्ती हाथ फैलावत रहली; सिरिफ कँपकत हाथ से कटोरा आगे बढ़ा के उम्मेद भरल आँखिन से आवे-जाए वाला लोगन के मुँह तकत रहली।

लोग रेशमी कुर्ता आउर बनारसी साड़ी पहिन के, हाथ में थारी भर-भर के फल, काजू, किशमिश आउर छप्पन भोग के सामान लेके माँ के अर्पण करे जात रहे। लेकिन बाहर खाड़ ई जीवंत देवी पर केहू के नजर ना परत रहे। अगर केहू के नजर परियो जात, त ऊ आपन आंचल आउर कुर्ता बचा के अइसन निकल जात रहे की बूढ़ी अम्मा कवनो बीमारी होखस।

भीड़ के धक्का आउर उपेक्षा सहते-सहते अम्मा के आँख से जर-जर आंसू बहे लागल। उनकरा आपन बीतल दिन याद आवे लागल। अइसन ना रहे कि अम्मा हमेशा से भिखारी रहली। एक समय रहे जब उनकरो घर-परिवार रहे, दुगो बेटा रहले जवना के ऊ मजदूरी क-क के पढ़ावली-लिखावली। लेकिन बूढ़ भइला पर जब हाथ-पैर जवाब दे देलस, त बेटन के अम्मा 'बोझ' लागे लगली। बहुरिया लोग के किचकिच आउर बेटन के बेरुखी से तंग आ के, एक दिन अम्मा घर छोड़ के निकल गइली।

अम्मा मन ही मन माँ दुर्गा के विशाल प्रतिमा के ओर देख के कहली— "हे माई! तू त सब जानत बाड़ू। तू त जगत् के जननी बाड़ू। लोग तोरा आगे छप्पन भोग सजावत बा, लेकिन तोहरे ही बनावल एक संतान आज एक-एक दाना खातिर तरसत बा। का तोरा ई दिखावा पसंद बा माई?"

सांझ के समय महाआरती सुरु भइल। कपूर के गमक आउर घंटी-घड़ियाल के आवाज से पूरा पंडाल गूँज उठल। सगरी धनवान आउर संभ्रांत लोग आगे खड़ा हो के आरती उतारत रहे।
एही बीच, सहर के एगो छोट खन स्कूल के मास्टर साहब, राहुल, आपन सात साल के बेटी 'आन्या' के साथे दर्शन करे आइल रहले। राहुल जी हमेशा आपन लईकी के बाहरी आडंबर के जगह सच्चा धरम आउर इंसानियत के पाठ पढ़ावत रहले।

आरती खत्म भइला के बाद लोग प्रसाद खातिर टूट पड़ल। राहुल जी आन्या के हाथ में एगो पेड़ा के दोना थमावलें आउर कहले— "बेटी, ई माँ के प्रसाद ह।"
आन्या प्रसाद लेके जैसे ही मुड़ल, ओकर नजर मुख्य द्वार पर कँपकपात खाड़ बूढ़ी अम्मा पर पड़ल। आन्या तनी देर खातिर रुकल। ओकर मासूम दिल में अम्मा के बेबसी देख के गहरी चोट लागल। ऊ दौउड़ के आपन पापा के पास गइल आउर पूछलस "पापा! माँ दुर्गा त हमनी के माई हई, त ई बाहर खड़ी अम्मा केकर माई हई? ई काहे भूखे पियासे आउर रोवत बाड़ी?"

राहुल जी के पास आन्या के ई मासूम लेकिन कड़वा सवाल के कवनो जवाब ना रहे। उनकर आँखि नम हो गइल।

डॉ० सुप्रिया सोनी



# अइसे केहू साहित्य के 'वटवृक्ष' ना बन जाला

आन्या बिना कवनो देरी कइले, आपन हाथ के प्रसाद आउर साथ में रखल पूरी-सब्जी के दोना लेके सीधे अम्मा के पास पहुँच गइल। ऊ आपन छोट-छोट हाथन से दोना अम्मा के कटोरा में रख देलस आउर मीठ बोली में बोलल—"अम्मा! ई ल, माता रानी के प्रसाद खा ल।"

अम्मा कई घंटा बाद भोजन देखली। उनकर कापत हाथ प्रसाद के ओर बढ़ल आउर आन्या के सिर पर आशीर्वाद बन के टिक गइल। अम्मा के आँख से आंसू के धार बहे लागल , लेकिन ई आंसू दुख के ना, तृप्ति आउर दुलार के रहे।

ई दृश्य देख के आसपास खाड़ लोग सहम गइल। जवन लोग हजारन रुपया के चंदा दे के आउर महंगा भोग चढ़ा के आपन धरम मानत रहे, ओहन के आज एक सात साल के लईकी असली पूजा के मतलब सिखा देले रहे।

राहुल जी आगे बढ़ले, अम्मा के प्रणाम कइले आउर फैसला कइले कि ऊ अम्मा के कवनो वृद्धाश्रम में सुरक्षित पहुंचावे के पूरा व्यवस्था करिहें, ताकि उनकरा आगे भीख ना मांगे के परे।

"माटी के मूरत के छप्पन भोग चढ़ावे से पहिले, अगर कवनो जीवित इंसान के भूख मिटा दिहल जाव, त ओही में ईश्वर के सच्चा वास होला। धर्म सिरिफ कर्मकांड आउर प्रदर्शन में ना, बल्कि इंसानियत, दया आउर भूखा के अन्न देवे में बा। जवना समाज में जीवित माई-बाप के सड़क पर छोड़ के पत्थर के मूरत पूजल जाला, ऊ समाज धार्मिक त हो सकत बा, लेकिन संवेदशनशील ना।"

❑❑

सिवान, बिहार



मूलतः हम हिंदी में ज्यादा लिखीला आ पढ़ी ला, और भोजपुरी में थोड़ा कम लिखिले, बाकिर कवनो विशेष प्रसंग के तहत हम भोजपुरी भाषा आ साहित्य पर भी कुछ गंभीर काम करत रहनी। ओहू बिसय के तह तक जाए के छटपटाहट हमरा के जाने कई गो किताब खंगाल डाले पर मजबूर कर देहलस। अक्सर पढ़त-लिखत आ मनन करत बेरा मन में अइसन कुछ गहिर जिज्ञासा जनम ले लेला, जवना के सहज उत्तर किताबन में भा आम चरचा में ना मिल पावे। अपना स्तर पर हम कई गो परिचित विद्वान मित्रन से ब्यक्तिगत रूप से आ दूरभाष के जरिये संपर्क कइनी। सब लोग अपना-अपना सामर्थ्य के हिसाब से जबाब दिहली, बाकिर मन के कोना कतहू ना कतहू अतृप्ते रहि गइल; ऊ संशय पूरी तरह से ना छँट पावल, जवन भीतर ही भीतर कौंध रहल रहल।

तभिए अचानक मति के पटल पर एगो अइसन नाम उभरल, जवना के भोजपुरी जगत में श्रद्धा से केउ 'वटवृक्ष' कहे ला, केउ 'परम आदरणीय' माने ला, त केउ उनका के 'विद्वानन के विद्वान' के उपाधि देला। एतना ही ना, अकादमिक जगत में उनका के चलता-फिरता 'इसाइक्लोपीडिया' भा 'विकिपीडिया' कहे वाला लोगन के कमी नइखे। ऊ बानी -भोजपुरी भाषा आ साहित्य के जीवंत हस्ताक्षर, आदरणीय डॉ. ब्रजभूषण मिश्र।

बिना एगो पल गँवाए हम उनका के फोन नंबर हासिल कइनी आ संकोच अउरी उत्साह के मिलल-जुलल भाव के साथ उनका के फोन मिला दिहनी। फोन पर संपर्क होतही हम अपना ओही जटिल जिज्ञासा उनके समउर रख दिहनी।

आ फेरु अगिला दस मिनट तक जवन संवाद भइल, उ हमरा खातिर कवनो वैचारिक तीर्थाटन से कम ना रहल। ऊ फोन पर ही जेतना सहजता, प्रामाणिकता आ गहराई के साथ ओहू बिसय के परतन के खोललें, ओहू से एगो झटके में हमार सब भ्रम आ संशय हमेशा खातिर खतम हो गइल। उनके तर्क के स्पष्टता आ ग्यान के बिस्तार अइसन रहल की उ बिसय हमार मन-मस्तिष्क के पटल पर हमेशा खातिर अंगीभूत हो गइल बा।

उ दस मिनट के बातचीत हमरा खातिर खाली एगो जिज्ञासा के शमन भर ना रहल, बलुक एगो मूर्धन्य मनीषी के सान्निध्य में ग्यानार्जन के बहुत दुर्लभ आ चिर-स्मरणीय पल बन गइल। एकरा के महसूस करत बेरा सहजही मन में आदर भाव उमड़ पड़े ला कि आइसे केहू आसानी से साहित्य के 'इनसाइक्लोपीडिया' ना बन जाला।

❑❑

मुजफ्फरपुर,बिहार



रवि रंजन ओझा

## छूट जाला

ढेर बात पकड़ला से हाथ छूट जाला,
जोर जबरदस्ती कइला पर साथ छूट जाला ।।

हर संबंध में बँध के रहे के जिद्द मत करी,
रस्सी जादा खिचला पर गांठ टूट जाला ।।

हर बात के जवाब दिहल भी जरूरी ना ह,
कभी चुप रहलो पर भी बहुत जोर के बुझाला ।।

कुछ लोग साथ रह के भी साथ ना होला,
रहे कुछ लोग दूर त उ पास में बुझाला ।।

बात कतना ले दबाइब अपना मन के अंदर,
नफरत से भरल कलस भी खुद से फूट जाला ।।

समझदारी उम्र बढ़ला से आवे ई जरूरी ना ह,
गरीबी में बीतल बचपना जिंदगी भर कोस जाला ।।

❑❑

❍ एम.ए.(भोजपुरी) वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा



शुभम शास्त्री

## चलत रहिया

नैना से नैना लड़ावेले बालम चलत रहिया
हमरा के पागल बनावेले बालम चलत रहिया

मोरा छोटे-छोटे बात पर रिषियाइ के बोलस
दोसरा क नखरा उठावेले बालम चलत रहिया

कहालन उ अगहर सउसे गउआ समाज के
गीत झूठे-सांचे सुनावेले बालम चलत रहिया

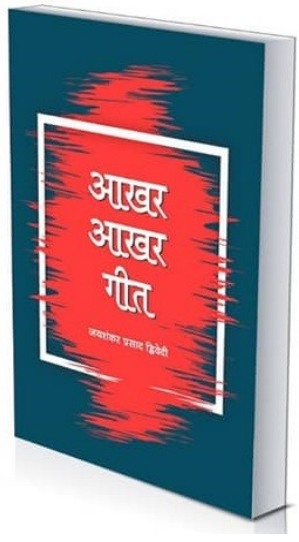
कहऽ करेलें पीरीत कइसन उ गुरबा गरीब से
रमुआ के रोजे मुआवेले बालम चलत रहिया

उ मुहब्बत के नाम प खूब मुशायरा करावस
दिल प गरदा उड़ावेले बालम चलत रहिया

जब जवन रहता से लेके निकल जाले कुछउ
ओह प कबहु न आवेले बालम चलत रहिया

'शुभम' बात मत करऽ फिर उनकर भुलइलो
बड़े बड़े रिश्ता निभावेले बालम चलत रहिया

❑❑








रामसागर सिंह

## कहँवा दुशासन के भय बा ?

ना शासन के भय ना प्रशासन के भय बा,
ना समाज के कवनो अनुशासन के भय बा,
खिंचात रहे साड़ी कबो सभा में द्रोपदी के
कलजुगवो में कहँवा दुशासन के भय बा ?

गिर गइल बा केतना नेतरी के पानी,
बदलल चरितर, बदल गइल बानी,

अब ना बेटी बचाओ के भाषण के भय बा,
कलजुगवो में कहँवा दुशासन के भय बा ?

गलियन में घूमे सीना तानी दुशासन,
धृतराष्ट्र बनल बाटे सत्ता के आसन,

अब सत्तवो के कहँवा सिंहासन के भय बा
कलजुगवो में कहँवा दुशासन के भय बा ?

अब नारी के इज्जत बनल बा तमाशा,
बुझाला कि जइसे हऽ लाई बतासा,

कहाँ का हो जाई अब कवनो ना तय बा,
कलजुगवो में कहँवा दुशासन के भय बा ?

जाने कहिया ले कानून धरती पर उतरी,
पांखि खोली के उड़िहें इ अंखियां के पुतरी,

अबहीं जुल्मी जुलुमवे के खेला में लय बा,
कलजुगवो में कहँवा दुशासन के भय बा!

बा कइसन ई जुग अब आइल ए भाई,
कंठ लोगवो के बाटे रुन्हाइल ए भाई,

रामसागर ई केतना मानवता के क्षय बा,
कलजुगवो में कहँवा दुशासन के भय बा ?

❑❑

# दू गो कविता

## अजब के उ लरिकाईं

अजब के उ लरिकाईं रहे,
लागे जस मिठाई रहे,
होई जवानी केतनो निमन,
एकरा से बीस, सवाई रहे!

बांड़ी, बेरा, काजर, टीका,
डाँडा में के कउड़ी, सिक्का,
चुनि चुनि के गुरिया, घुंघुर,
गुंँथले ओइमें माई रहे!

सियल टोपी, बान्हल गाँती,
माई के हाथे के थाती,
दउरी,मउनी, मोना,डगरी,
बरुआ से कइल बिनाई रहे!

मामा-गोटी, ओका-बोका,
शिशही गोली, सेमर के टोका,
अदल-गदल, आइस-पाइस,
खेला छुपम-छुपाई रहे!

गुल्ली डंडा, ठारी चिक्का,
कित-कित के ढ़ेर तरीका,
सतिलो,गेंदा, अउर कबड्डी,
साँझी के रोज खेलाई रहे!

घुमरी परउवा, घो घो रानी,
तुरल फरहरी चढ़ के छान्ही,
दे बैलन के सानी पानी,
भइंसी के दुध पिआई रहे!

सतुआ खाइल, लिबरी घोरी,
दुध, घीव के जरल खंखोरी,
झोंझी में घोनसार के भूंजा
गजब के उ सोन्हाई रहे!

दादा जी के पीठ पीठइयाँ,
बाबुजी के कान्ह कन्हैया,

मिथिलेश गहमरी



# भोजपुरी गजल

हजार ओर से एकही सवाल, रे भाई
पहाड़ तोड़ के, पानी निकाल, रे भाई

रहे उमीद सजी अँगना चान - तरइन से
भइल बा आज दियरियो मुहाल, रे भाई

बदल गइल बा समय केतना,का बताईं आज
बनल बा बेटी के बापे दलाल, रे भाई

सनेह तूरि के घर में खड़ा देवाल भइल
खटाई, दूध में दिहलस के डाल, रे भाई

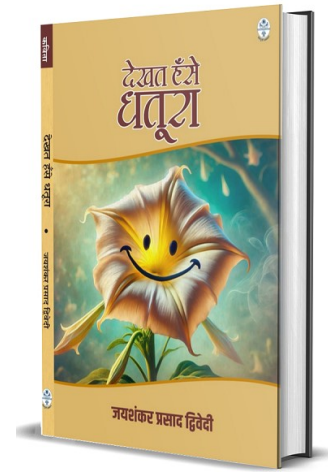
फँसल सुनात रहे जाल में जवन मछरी
खतम गँवें-गँवे कइलस ऊ जाल, रे भाई

दसों दिशाईं भइल आज बाज के कब्जा
गले ना पावे कबूतर के दाल, रे भाई

निगल रहल बा फसल, खेत के जे मेंड़ रहे
नया सदी के, ई देखऽ कमाल, रे भाई

❑❑

गहमर,गाजीपुर (उ0,प्र0)




कथा कहानी इया कहे..
लोरी गावत माई रहे!

घुघुआ रोज डोलावसु काका
बहिना समय के रहे पाका,
दुनु बेरा सबसे पहिले..
खाना देत बनाई रहे!

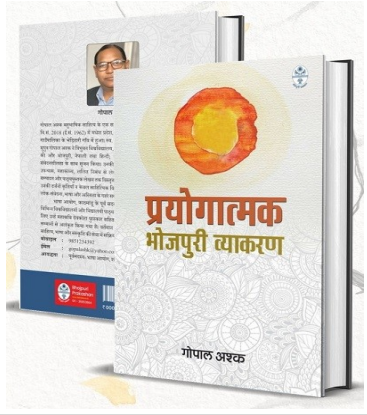
बुंट के होरहा, मीठा महिया,
लवटी दिन ऊ आई कहिया,
ताजा गुड़ में तिल के तिलुआ
धोंधा बान्हल लाई रहे!

गोड़ पकड़ि के हेंगी चढ़ल,
शवखे हर के परिहत धरल,
मजा करावे कठई गाड़ी...
झिलुहा देत झुलाई रहे!

केतना ले उ काथा कहीं,
लरिकाईं के गाथा कहीं,
रामसागर" उ लरिकाईं ना...
जिनगी के असल मलाई रहे!

❑❑

सिवान, बिहार





शम्स जमील

## भोजपुरी गजल

एके साँसे बस धावत गइनी
सगरी बोझा उठावत गइनी

जेकरा जब जरूरत पड़ल
हँसी आपन लुटावत गइनी

प्रीत पावे के लालसा रहे
नफ़रत उनकर पावत गइनी

आँख चोरा के भागल सभे
हम त बस मिलावत गइनी

पता बा अब कुछ सुधरी नाही
आस के ढ़िबरी जरावत गइनी

जिनगी ह क़ीमत चुकावे के बा
खुद ई बात समझावत गइनी

❑❑

❍ दुबई




बलजीत सिंह 'बेनाम'



## ग़ज़ल

1

प्यार के पहिली निशानी भूल जाई!
अपना बीतल कहानी भूल जाई!

दिमाग पर तोहरे असर होई!
के कइलस बदजुबानी भूल जाई!

खून में ओकरा धोखा बा अगर!
ई कमी बा खानदानी भूल जाई!

दू घड़ी के चैन खातिर!
प्यास अँसुअन से बुझानी भूल जाई!

आ गइल बाड़ कमजर्फ के महफिल में!
खुद हो जइब पानी-पानी भूल जाई!

2

जिनगी के फैसला फिर जो भी हो!
संग हवे भगवान फिर जो भी हो!

घूँट त पीहे के पड़ी उमर भर!
आँसू के स्वाद फिर जो भी हो!

मौत ही मंजिल बा जेकरा आखिरी!
दरद के केकरा दवा फिर जो भी हो!

बड़ी गनीमत बा तोर होंठ तक आइल त!
ऊ दुआ या बददुआ फिर जो भी हो!

जंग से भाग गइनी एक जना के!
बुजदिली पर चर्चा फिर जो भी हो!

❑❑

❍ हांसी, हिसार



अनीता मिश्रा सिद्धि

# हमरा गाँव के जेन जी (Gen Z)

हमरा गांव के जेनजी, पर बड़ा विश्वास बा।
उनके सुनर काम पर, मन में भरल विश्वाश बा।।

आजकल हमरा गाँव में बहुते बदलाव देखे के मिल रहल बा। पाहिले के जमाना अलग रहे, लोग दलान पर बैठ के खैनी रगड़त रहे आ कक्का-काकी के किस्सा-कहानी सुनत रहे। पर अब जमाना आ गइल बा हमरा गाँव के 'जेन जी' यानी आज के नया लईका-लईकिन के।

जेन जी के लईका सब के रहन-सहन आ सोच एकदमे अलगे बा। गाँव के पीपल तर बईठ के इ लोग अब गप्प-सप ना मारे, बल्कि हाथ में स्मार्टफोन लेके रील्स (Reels) बनावेला। गाँव के खेत-खलिहान अब खाली फसल उगावे खातिर ना, बल्कि 'इंस्टाग्राम रील्स के बैकग्राउंड' बन गइल बा। खेत के आरी पर खड़ा होके, माथा पर गमछा बाँध के जब गाँव के लईका 'ट्रेंडिंग सोंग' पर डांस करेले, तब देखे में लागैला कि जमाना सचहुँ बदल गइल बा।

ई नया पीढ़ी (Gen Z) बहुत चालाक आ होशियार बा। इ लोग खाली रील्स ना बनावे, बल्कि इंटरनेट के सही इस्तेमाल भी जानेला। गाँव के लईका अब खाली खेती-बारी या सरकारी नौकरी तक सीमित नईखन रह गइल। अब त गाँव के लईका घरही बईठ के फ्रीलांसिंग कर रहल बा, यूट्यूब पर ब्लॉगिंग (Vlogging) करके गाँव के संस्कृति के पूरा दुनिया में देखा रहल बा, आ अनलाइन पढ़ाई करके बड़का-बड़का परीक्षा पास कर रहल बा।

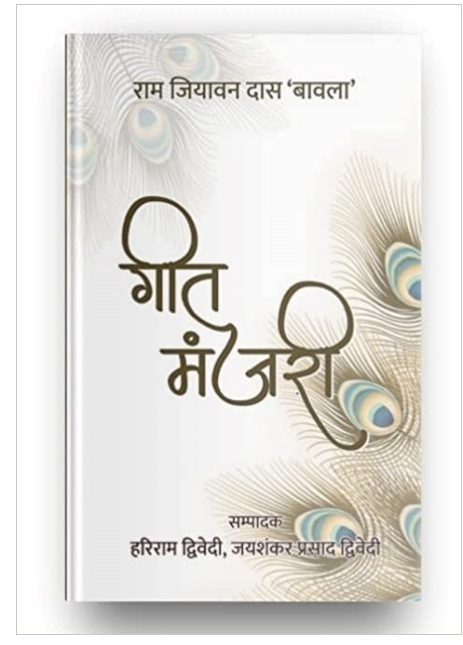
जेन जी के सबसे बढ़िया बात ई बा कि इ लोग बात-बात में तर्क करेला। कवनो पुरानी रूढ़िवादी सोच या अंधविश्वास के इ लोग आँख मूँद के ना माने। अगर कवनो गलत परंपरा बा, त इ लोग ओकरा पर सवाल उठावेला। लईकी सब भी अब खाली चौका-बर्तन तक सीमित ना रह के, लईकन के साथ कंधा से कंधा मिला के कॉलेज जा रहल बाड़ी आ आगे बढ़ रहल बाड़ी।

हालाँकि, कभी-कभी गाँव के बुजुर्ग लोग शिकायत करेला कि "आजकल के लईका सब दिनभर मोबाइल में मुँह घुसावले रहेला, कवनो बात के सबुर (धैर्य) नईखे इ लोग के पास।" ई बातो कुछ हद तक सही बा, काहे कि जेन जी के सब कुछ 'इन्स्टेंट' (तुरंत) चाही—खाना होखे चाहे सफलता!

लेकिन सच ईहे बा कि ई जेन जी हमनी के गाँव के नया पहचान दे रहल बा। ई लोग परंपरा आ आधुनिकता के अइसन संगम बा, जोना के एक हाथ में गाँव के माटी के सुगंध बा, त दूसरा हाथ में पूरा दुनिया से जोड़े वाला स्मार्टफोन!

❑❑

❍ विश्राम निवास
कालीकेत नगर बेली रोड ,पटना





कनक किशोर

# देवता

रघुनाथ बाबू अबहीं अपना घर से दूरे रहलें बाकिर उनुका घर ओरि से आवत हल्ला गुला के आवाज कान से टकराइल त तनी सचेत हो गइले। लइकन के आवाज रहे। जल्दी - जल्दी गोड़ बढ़ावे लगले।

लड़ाई के कारण रहे - जामुन के पेड़, जवन उनुके क्वार्टर के हाता में रहे। पड़ोसी के लइकन जामुन के कुछ फल - फूल के ईंट - पत्थर मारि के गिरा देले रहन सं। रघुनाथ बाबू के आवते देखि के उनुकर लइकन के आवाज तेज हो गइल आ दूसर लइकन के आवाज घटे लागल, बाकिर ऊ बाहर ना रूक के सीधे भीतरे चल गइलन अउर हाथ के इशारा से लइकनों के आवे के कहले।

लिफाफा कमीज के ऊपर वाली पाकिट से निकाल ओह में के चिट्ठी के अपना पत्नी शीला के ओरि उछाल देले। शीला चिट्ठी के उठा खोलि के पढ़े लगली .... ट्रांसफर। उनुकर चेहरा उदास हो गइल।

सबके नजर रघुनाथ बाबू के ओरि उठ गइल। ऊ खटिया पर बइठ गइल रहन। लागल कहत बाड़ें - कहत रहीं त तू लोग ना मानत रहऽ। आज जामुन के फल - फूल खातिर मारे - मरे के तइयार बाड़ऽ लोग, काल्हु केहू पूरा काटि के गिरा दी त देखहूं ना अइबऽ।

" अब का होई? " शीला रघुनाथ बाबू से पूछली।

" होई का? अब जाये के पड़ी। दू - चार सप्ताहो ना लागी। जगह ठीक नइखे। छोटहन स्टेशन ह। लइकन के पढ़े - लिखे के बेवस्था दूर शहर में करे के होई। कवनो सोसाइटी नइखे ओहिजा। चिकित्सा सुविधा ना के बारे में बा। आस पास गाँवन के लोग बढ़िया रहे बाकिर रेल कर्मचारियन सब कोइला, लोहा, सिमेंट चोरवा बेचवा के उन्हिन के हाथे ना मुँहो करिया कर देलन स। अगर ओहनी के ऊपरवार ना भेंटाई त केकरो के खूनो कर दिहन सं।.... हाय राम! का बुढापा में नरभक्षी बनावल चाहत बाड़ऽ। " रघुनाथ बाबू के उदासी घर - आंगन के उदास करि मौन बनिके फैल गइल। हर घरी खामोशी के तह बढ़त चलि गइल।

साँझि के ढंग से खाना तक ना बनल। सब केहू खाये के रस्म अदायगी करि सुते चलि गइल।

सब लोग सुत गइल बाकिर उनुकर बड़ लड़िका के आँखिन में नींद गायब। ऊ सोचत रहे एह तबादला रोकवाये खातिर कुछ करे के। ओकरा जानकारी रहे कि शर्मा साहेब के तबादला भइल रहे त ऊ मुख्यालय गइल रहन। पाँच हजार रुपया स्थापना प्रभारी के देके आपन तबादला आदेश रद्द करा देले रहन। सिंह जी के तबादला भइल रहे त ऊ चार महीना के छुट्टी ले लेले रहन आ बाद में अपना मनचाहा जगह तबादला करा लेले रहन। सिन्हा जी के तबादला आदेश तबतक ना आ पावे जबले ऊ ना चाहस, उनुकर बड़ साला रेलवे बोर्ड में बड़ पदाधिकारी बाड़ें। पांड़े जी के त रिलिभरो आ गइल रहे, जे स्थानीय एगो नेता के संबंधी रहे। पांडे जी दउरल दिल्ली चल गइले। दूसरे दिन दिल्ली से स्टेशन में तार आ गइल कि रिलिभर के तत्काल मुख्यालय वापस भेज देल जाय आ अगिला आदेश के इंतजार कइल जाय।.... ऊ सोचत रहे कि बाबूजी भीरी ना त रुपया बा, ना कवनो संबंधी रेलवे बोर्ड में आ ना कवनो बड़ नेता तक पहुंच बा।

ओकरा अपना बाप पर खीस बरत रहे। आजु जब चारों ओरि लूट मचल बा त धर्मराज बनि रहल बाड़ें। अपने त मरते बाड़ें हमनी सब परिवार के मारत बाड़ें। महीना के अंत में तनख्वाह आवते उधार खाता के भरपाई में चल जाला। पूरा परिवार पूरा महीना आवश्यकता आ आभाव के दू पार्ट के बीच पिसात रहत बा। ना कबो नसीब भइल ढंग के खाना आ ना कपड़ा। आजु ले ना कवनो नेता के एको पाई चंदा देले आ ना हँस के बतिअइलो होइहन, केहू के कवनो नाजायज काम करे के त बाते दूर के बात बा। हमेशा बमभोला बनल रहले। कहले कि हमरा का पड़ल बा केहू के तेल लगावे के? आपन उल्लू सीधा करे खातिर दूसरा के खुशामद करे वाला लोग उनुका नजर में घटिया हवन सं। चुपचाप पड़ल बाड़े। ना पड़स त का करस? का मुँह लेके जइहन कवनो नेता भा पदाधिकारी के पास?

नेता के बात पर इयाद आइल कि लखन सिंह इहाँ के स्थानीय बड़ नेता हवें। ऊ उनुका खातिर पोस्टर बना दिवारन पर साट देत रहे। उनुका कार्यालय के दिवार पर ओकर हाथि के बनल तस्वीर टंगल रहन सं। ऊ बराबर वादा करत रहन- समय पड़ला पर मदद करे के।

दीवार घड़ी टन टन के आवाज से बारह बजे के सूचना देलस। कवनो माल गाड़ी बगल से हड़हड़ात गुजर गइल। ऊ खटिया से उठल। घर के सभ लोग सुतल रहे। ऊ क्वार्टर से बाहर आइल। रेलवे कालोनी में चारों तरफ रोशनी फइलल रहे। डराइल तनिको ना आ जाके लखन सिंह के पार्टी कार्यालय के पास खड़ा हो गइल। ऊ जानत रहे की लखन सिंह शराबी ह।

चरित्रो के ठीक आदमी ना ह। केकरो जवान बेटी - बहिन के अकेला पा गइला पर ना छोड़ेला। कुछ लइकनों के साथो उनुकर नाम सुनल गइल बा। उनुका साथे गुंडों रहलन सं जे इशारा पावते खून करे के तइयार रहलन सं।

अइसन आदमी से मिलल उचित ना जान पड़ल ओकरा। लउट जाये के सोचलस। लउट जाये के निर्णय के बावजूद अभी ले रूकल रहे। सोचत रहे, हमरा जोरे बड़ भाई जस बेवहार करेलन। आपन बुरा आदतन के छुपा के भद्रता से पेस आवेलन।

लखन सिंह बाहर से आवत रहे। ओकर चाल आ आवाज कहत रहे की निशा में बा। गुस्सा में जोर - जोर से पुलिस अफसरन के गाली देत रहे। उनुका साथ के लोग डगमगात चाल आ कांपत आवाज में उनुका हाँ में हाँ मिलावत रहे।

ई देखि के ऊ डर गइल आ उल्टे पैर भाग चलल। लखन सिंह ओकरा के भागत देख लेलन।

" देखऽ, देखऽ सं के भाग रहल बा? लागत बा कार्यालय देने से गइल ह। " लखन सिंह गरजले।

" भगवान बड़ा दयालु बाड़े। बुझात बा आजु के माल - पानी बेकार ना जाई। " कहत ओकर चेला चपाटी दउरलन सं। रात के सन्नाटा में धमाधम होखे लागल। ऊ भाग ना सकल आ ऊ सब पकड़ के घसिटत ओकरा के लखन सिंह के पास ले गइलन सं। ओहनी के गंदा बातन आ हरकतन से आगे के कार्यक्रम स्पष्ट करत रहन सं। ऊ डेराइल, सिमटल

घसिटात चल गइल।सिर मुड़ावते ओला पड़ल रहे।

लखन सिंह के पास गइल आ हाथ जोड़ि के प्रणाम कइलस। लखन सिंह पहचान लेले बाकिर तनी मुँह घूमा के पूछलन, " का करत रहस? " जबाब खातिर रूकलन ना बोललन, " छोकरा हमार छोट भाई ह। कवनो संदेह कइल गलत होखी। सबेरे बाति कर लियाई। अबहीं डेरा पर पहुंचा आवऽ। "

" कवनो इमर्जेंसी बा? " लखन के सवाल सुन के, " ना ' कहके चल देलस।

डेरा के पास आइल त भाग के भीतर चल गइल। जात खानी किवाड़ी खुले छूट गइल रहे, किवाड़ी ना खोललस तबो आवाज हो गइल, जल्दबाजी में किवाड़ी से टकरा गइल रहे।

रघुनाथ बाबू आवाज देलन " के ह? "

" हम हईं पेशाब करे गइल रहीं। " कह के अपना बिछवना पर जाके सुत गइल। ओकरा महसूस भइल माई जाग गइल बाड़ी। डेरात रहे कि पूछिहन की पेशाब करे बाहर काहे आजु गइल रहस त का जबाब देब। बाकिर ओकर जरूरत ना पड़ल। रात भर जागत रहल। भोर पहर झपकी लागल बाकी रघुनाथ बाबू के खडाऊँ के खटर - पटर से टूट गइल।

सोचे लागल लखन सिंह आके पूछताछ करे लागल त ना जाने बाबूजी का सोचस। लखन बाबू बहरी नल पर गइले तब ऊ पीछे के दरवाजा से क्वार्टर के बाहर चल गइल। एने - ओने घूम के समय बितावत रहे कि लखन सिंह के डेरा से बाहर निकलत देखि के उनका सामने जाके प्रणाम कइलस।

लखन सिंह जोरे चाय के दुकान देने चल देलस।

" पिताजी के ट्रांसफर हो गइल बा। जगह ठीक नइखे। बड़ी दिक्कत होखी। "

" समझ गइनीं? रघुनाथ बाबू जाइल नइखन चाहत। "

" रउवा रहते उहाँ के ओहिजा जाए के पड़ी त लोग का कही। "

" लोग के कहला के चिंता हम ना करीं। तू का चाहत बाड़ऽ से कहऽ। "

" तनी मदद कर देल जाय। "

" कइसन मदद? "

" तबादला रूकवा देल जाय। "

" केकरा से कहे के पड़ी? "

" ऊ त रउवा जानीं। "

लखन सिंह रूक गइले। किनारे बइठ के लघुशंका कइले। फेरु राहि चलत बढ़ले त कहले " आज दिल्ली जात बानीं। काम हो जाई बाकिर हमरा साथे चली के? हम कब कहाँ फँस जाइब केहू ना जानेला। केहू साथे चलित त ठीक रहित।

ओह घरी लखन सिंह के बाति में पड़िके तइयार हो गइल।साथे चल गइल रहे। घर वाला लोग के जानहूं ना देले रहे। आज छुप छुप के रोवेला। माई के चुरा के ले आवल गहना लखन सिंह के दे देले रहे। लखन सिंह आ ओकर साथी नेता लोगिन के सब इच्छा के पूरा कर चुकल रहे। ओकर दरद अंग - अंग में पइस गइल रहे। चउदह - पंद्रह के कांच उमिर, अनजान जगह,एह नरभक्षियन के चंगुल से निकल के कवनो तरी भाग गइल चाहत रहे।दिल्ली आइल तीन दिन हो गइल रहे बाकिर काम जहाँ के तहाँ। मंत्री जी हाथ लगावे के तइयार ना रहन। आजकल के जाँच आयोग के बात कहत रहन। डेरात रहन। का करी? का ना करीं? बात समझ में ओकरा ना आवत रहे। दरद से नस - नस फाटत रहे। काम हो जाये खातिर देवी - देवतन के गोहरावत रहे, जे होखे के रहल से त होइए गइल रहे। आजु लखन सिंह मंत्री से

लड़ गइल रहे। कहत रहे कि काल्हु कवनो दुसर मंत्री से मिलब। ऊ आजकल रेल विभाग के मंत्री नइखे। कबो रहे, बाकिर बिहार के रहे वाला ह। दिल्ली के पावरफुल नेता ह। देखीं का होत बा।..... ना जाने कब आँख लागि गइल। आवाज कान में गइल त आँख खुल गइल। लखन सिंह जोरे पांच - छव गो नेता पियत रहन सं आ बातचीत चलत रहे। आगे के कार्यक्रम सोचके बेहोश हो गइल। होश में आइल त भोर हो गइल रहे। कमरा में केहू ना रहे। एगो बढ़िया रात खातिर भगवान के इयाद करत बाथरूम में घुस गइल।

दूर से आवते देख ओकर छोट बहिन घरे पहुंच बोललस " भइया आ गइल। भइया आ गइल। "

सुनके क्वार्टर के बाहर निकल के माई आ गइली। क्वार्टर के बाहर सामुहिक नल पर रहे, सब लोग ओकरा ओरि देखे लगले।

ओकर गोड़ डगमगात रहे। ओकर शरीर के भार कसहूं उठा पावत रहे। बड़ी कठिनाई से चल पावत रहे। मुँह सूख - सूख जात रहे। रास्ता में ट्रेन में जब - जब लैट्रिन गइल रहे, खून आ जात रहे। कमजोरी महसूस करत रहे। दउड़ के माई से लिपट गइल। आँखिन में लोर छलक गइल। माई के कंधा पर पोछ देलस।

पांच दिन से मुर्दा पड़ल घर में जान आ गइल। केहू कुछ ना पूछलस। छोट बहिन माई के कहे से पहिले पानी ले आवे रसोई घर के ओरि चल गइल रहे।

पिताजी के कमरा से बाहर आवत देखि के जेब से निकाल के तबादला रद्द के चिट्ठी उहाँ के ओरि फेंक देलस।

रघुनाथ बाबू लिफाफा खोलि के पत्र निकललें। पढ़िके आँखिन पर बिसवास ना भइल। फेर पढ़े लगले।

" कइसे भइल ह रे? "

मन में आइल कि लखन सिंह के करतूत के बखान कर दीं। बाकिर अब का होखी? ई का बिगाड़ लिहन उनुकर? मन के बाति के मन के भीतर दफना देलस आ बोलल " रउवा के सरप्राइज देल चाहत रहीं।तीन दिन त दिल्ली में असहीं बीत गइल काहे कि मंत्री जी बाहर गइल रहन। अइले त लखन सिंह के साथ मिलनी आ सब बाति खोल के कह देनीं। "

" चार बरिस हो गइल बा तबहूं रूकवावल चाहत बाड़s? "मंत्री जी लखन सिंह से पूछले त लखन सिंह एक सांस में कह देले, " रूकवावल के चाहत बा? का उनुका ऐहिजा बसे के बा? जगह ठीक नइखे आ एगो बच्ची के शादी के बाति चल रहल बा। नया जगह में दिक्कत होखी। "

" हमार विभाग रहित त....। "

" विभाग के गोली मारीं, एक बेर कहके त देखीं। "

मंत्री जी खुद फोन लगवले। सबकुछ समझा के कहले, " ओकर आदमी जा रहल बा। आजुवे लेटर दिलवा दिहs। "

उधर से कवनो पदाधिकारी बोलत रहे। ऊ कहलस, " काम दिक्कत के बा। "

" एह से कि हमार विभाग नइखे। ऊ त काल्हु मिल सकत बा। देखs साफ कहs तोहरा से काम हो जाई कि केहू अउर से कहीं? काम त होखहीं के बा। "

ओने से अफसर सोच के बैलल - " ठीक बा, भेज दिहीं।'

फोन रखि के मंत्री जी कहले, " अउर कुछ? तोहार काम ना होखी त केकर होखी? "

" ना। तनी जल्दबाजी बा। अबहीं चलत बानीं। सांझ के दर्शन करब। " कहके लखन सिंह उठ गइले। हमहूं उनुका देखा देखि मंत्री जी के चरण स्पर्श कइनीं आ चल अइनीं।

" दफ्तर में देर ना लागल रहे. जाते लेटर तइयार मिलल रहे। रास्ता में एक दिन लाग गइल। " बोलते रहल तले पेट में मरोड़ उठल। लोटा में पानी लेके लैट्रिन के ओर चल देलस।

" लखनऊ बाबू आदमी ना देवता हवें। " ओकर माई कहली।" सुनीं, एक दिन लखन बाबू के खाना पर जरूर बुला लेब। "

❑❑

राँची झारखंड





मनोज भावुक

# भोजपुरी गजल

1

भइलें नेता चोर उचक्का थू थू थू
लोकतंत्र के कइलें कचरा थू थू थू

चुन के भेजनी जा संसद में जेकरा के
ऊहो निकलल खोटा सिक्का, थू थू थू

भ्रष्टाचार के बाढ़ में का नइखे डूबल
करियर, बिजनेस, सेहत, शिक्षा, थू थू थू

बाढ़ से पहिले कागज पर पुल बन जाता
कइसन-कइसन खेला होता, थू थू थू

जे विरोध में बोली ऊ लाठी खाई
अइसन बा उन्मादी सत्ता, थू थू थू

जंतर-मंतर पर होता हुलेलेले
कुर्सी खातिर गजब तमाशा, थू थू थू

फंड विदेशी लेके नाचत बा जे गैंग
लोकतंत्र पर बाटे खतरा, थू थू थू

लइकन के साथे कुछ पाखंडी बुढओ
कइलें बाड़ें ही ही हा हा थू थू थू

नइखन जानत ई प्रोटेस्ट होता काहे
भीड़ में बाड़ें गदहो, पाड़ा, थू-थू-थू

सुननी ह, अच्छा दिन आइल बा अइसन
बीच सड़क पऽ लाज लुटाता, थू थू थू

एह से बढ़के अउरी थू थू का होई
बोलत बाड़ें लइको-फइका थू थू थू

घर में हरदम चैन-सुकून रहे 'भावुक'
ना चाहीं लफड़ा कवनो ना थू थू थू

❑❑

2

सास बकेली हिंदी, इंग्लिश छाँटेली बहुरानी
भोजपुरी के थाती बस ढोवेली दादी-नानी

चुक्की-मुक्की, चाल करऽ, ठेकुआ, ओरहन, अगरासन
पीहू पूछेली मम्मी से – '' क्या हैं इनके मानी ''

मैडम बोलेली पीहू से- '' बिगड़ेगी ही भाषा ''
क्यों सुनती रहती हो तुम दादी से कथा-कहानी

भोजपुरी के दर्द का कहीं, हम रउरा से साहेब
टूटल खटिया, उसरल लेवा, फाटल मच्छरदानी

तीस करोड़ लोग बोलेला देश-विदेश में जे के
ऊ भाषा अभियो उदास बा, मांगत बाटे पानी

प्रेसिडेंट, पीएम, सीएम, नेता, अफसर जे देलस
ऊ भाषा सरकारी नइखे, होखत बा हैरानी

भोजपुरिये में वोट मांगके रउरा सत्ता पवलीं
भोजपुरिये के नाव प काहे संसद में चुप बानी

अष्टम अनुसूची में शामिल भइल ना ई भोजपुरी
तबहूँ रउरा मंच से लामा-लामा फेंकत बानी

शायद हमनी के कोशिश में कहीं कमी बा वरना
कइसे ना अधिकार मिली जब सब मिल-जुल के ठानी

भोजपुरी जीवन-शैली हऽ, संस्कार हमनी के
'भावुक' हो, एही से दुनिया हमनी के पहचानी

❑❑

( *लेखक मनोज भावुक भोजपुरी साहित्य आ सिनेमा के जानकार हईं.* )

❍ नोएडा (उ०प्र०)



# हाली - हाली उगऽ ये अदितमल

तनुजा द्विवेदी

भारत के धरती तीज आ त्योहारन के धरती ह। इहवाँ हर मौसम मे कवनों ना कवनों त्योहार पड़बे करेला। देवारी के बीतते आउर भाई दूज के बाद सगरो छठ परब के तैयारी चले लगेला। छठ बरत भगवान सूर्य के समर्पित एगो अइसन बरत ह जवन शुद्धता , स्वछता आउर पवित्रता के संगे मनावल जाला। जइसे–जइसे छठ बरत के दिन नीयरे आवेला , जेहर देखीं, ओहरे छठ के तइयारी शुरू होत दिखाई देवे लगेला। छठ के बाति के साथे अपने सभ्यता-संस्कारन के झलक उभरे लागेले , सभे कुछ अपनत्व से भरल पूरल देखाए लगेला। भोजपुरिया संस्कृति में देवी-देवता के संगे प्रकृति पूजा-उपासना के ढेर महातिम दियाला। ओही में सूर्योपासना खातिर छठ के परब मनावल जाला। छठ व्रत षष्ठी तिथि के होला एही से एकर नाम छठ पड़ गइल। कातिक अँजोर के छठी पर मनावे जाए वाला छठ के ढेर महातिम ह। एकर बरनन भविष्य पुराण मे मिलेला। ई बरत आदिकाल से घर - परिवार के सुख-समृद्धि के खातिर मनावल जाला। एह परब के मरद-मेहरारू सभे संगही मनावे ला लो।

एगो पौराणिक कथा ह कि लंका विजय के बाद भगवान राम आउर माता सीता एह बरत के विधि विधान से कइले। छठ बरत के संबंध मे एगो इहो कहनी ह कि पांडव लोग जब जुवा मे आपन राज पाठ हार गइने , त द्रौपती छठ के बरत कइनी आउर उनुकर मनोकामना पूरन भइल। एगो लोक कथा इहो हवे कि राजा प्रियब्रत आ रानी मालिनी संतान हीन रहले। पुत्र खाति कश्यप ऋषि से जग करवने , बाकि मुवल लइका के जनम भइल। ई सुनके राजा बहुत दुखी भइलें आ आत्महत्या करे क मन बना लीहलें। जइसे उ आत्महत्या करे चललें , त छठी माई परगट होके कहलीं , " हम देवी छठी हईं आ सभके पुत्र के सौभाग्य देहीलें"। राजा आउर रानी कातिक अँजोर के छठी माई के बरत कइने आउर उनके घरे लइका के जनम भइल।

वइसे त वैदिक परंपरा के कूल्हे बरत त्योहार के वैज्ञानिक कारण ह , त छठों के बा। ओह घरी सुरूज़ भगवान के जवन पराबैगनी किरन धरती पर पड़ेले उ धरती के सभे जीव जंत आ मनई खाति ढेर लाभकारी होले । कार्तिक शुक्ल के छठी के दिने मनावल जाये वाला छठ पवित्र परब हऽ। पहिले ई व्रत के मेहरारू लोग करत रहे , बाकि अब त अदमी लोग संगे करे लागल बाड़न। एकरा के बेटा ला करे जाये वाला परब कहल जाला। समय के संगे लइका आ लइकी मे अंतर ना रह गइल बा आ आजु के समय मे तनाव से जूझत मनई खाति ओकरे तनाव से मुक्ति के बरत कहल जाव त अतिशयोक्ति ना होई।

छठ पूजा के शुरुवात कार्तिक शुक्ल चतुर्थी के 'नहाय-खाय' से, जब व्रती घर के सफाई कइला के बाद कद्दू, रहिला क दाल आउर भात खाय के जमीन पर सुतेलन। इहवे से व्रत के शुरुआत होला। अगले दिन 'लोहंडा' आउर 'खरना' पर सांझी के बेरा में गुड़ के संगे साठी के चाउर के खीर बनाके केरा के पत्ता में ओकर भोग लगावल जाला। षष्ठी के सबेरहीं से डूबत सूरूज़ के अरघ देवे के तइयारी शुरू हो जाला। अरघ में मौसमी तरकारी आउर फल के बांस के सूप भा मिट्टी के ढक्कन में सजावल जाला। व्रती एही सजल सुपली के लेके पश्चिम दिशा में पानी में खड़े होके सूर्य के नमन करेलन। ई एगो अइसन परब ह , जवने मे अस्त हो रहल सूरूज़ के पूजा कइल जाला। सूर्य के अस्त होखला के बादे व्रतधारी घरे लौटेलन।

लोक जीवन सहजता के जीवन होला। एह सहजता में अपनत्व आ प्रेम के लमहर धार दिखाई देवेला। व्रत-त्योहारन के बेरा जवन गीत गवाला ओहू में लोक-जीवन के आषीश, प्रेम, अपनत्व, सहयोग, समरसता दिखाई पड़ेला। एही बदे छठ के सामाजिक समरसता के बरत कहल जाला। साँचो मे छठ के कारने बैर भाव मरि जाला आ नेह उपजि जाला। एह परब पर ई लोकगीत जरूर गावल जाले –

काँच ही बाँस के बहँगिया
बहँगी लचकत जाय।
बाट जे पूछेला बटोहि सर
ई बहँगी केकरा घरे जाय ?
आँख तोर फूटो रे बटोहिया
ई बहँगी कवन बाबू के घरे जाय।।

भगवान सूर्य के बरत भा छठी माई के बरत भा सूर्य षष्ठी के बरत के नाँव से परसिद्ध ई परब लोक उत्सव बेसी ह। एह बरत के विधि –विधान आउर ओकरे संगे गावे जाये वाला

लोकगीतन के रंगत आ उमंग अलगे रहेला। सुरूज़ भगवान से अपने दशा के बतावत मेहरारू लोग जब ई गावेलीं सुने वालन के आँखि से लोर रुकबे ना करेला ---

काल्ह के भुखले तिरियवा
अरघ लिहले ठाढ़ऽ।
हाली-हाली उग ये अदितमल,
अरघा जल्दी दियावऽ।।

छठ के गीतन में लइका के बात कवनों न कवनों रूप मे आइये जाला। देखीं गंगा माई से जुडल एगो गीत –

गंगा माई के झिलमिल पनिया
नइया खेवेला मल्लाह,
ताही नइया आवेले कवन पूत
एहो कवना देई के साथ।
गोदिया में आवेलें कवन ललना
एहो छठी मइया के घाट।।

छठ पुजा मे परसाद खाति केरा, नेबुवा , दही, सेब ,सिंघाड़ा, उंख, हरदी, आदी, चिउरा, सूरन, कोंहड़ा के परयोग होला जवन प्रकृति के अँचरा से मिलेला, एही से एह परब के प्रकृति पूजा के परब कहल जाला। ई बरत सामूहिक समरसता के बरत ह, जवने मे हित नात से लेके अड़ोसी - पड़ोसी तक ब्यवस्था बनवावे मे बराबर शरीक होलें। एकर मतलब त इहे ह सभे केहु चाहे उ बरत करत होखे भा न करत होखे। कहीं कहीं कुछ लोग अइसनो भेंटाला जे बरत कवनों कारन से ना क पावेला बाकि कवनों बरती के बरत मे सहजोग जरूर देवेला -

कवन देई के अइले जुड़वा पाहुन,
केरा-नारियर अरघर लिहले।

भोजपुरिया लोक जीवन मे छल कपट कमे मिलेला। जइसे इहवाँ के लोग मन से निश्छल होलें ओइसही इहाँ के धरती से किसिम किसिम के फल–फूल उपजावेले। कवनो गाँव में चलऽ जाईं, हर जगह लौकी, कोंहड़ा, नेनुवा , सरपुतिया भा नेबूआ, केरा, हरदी, सूरन लउकबे करी। तबे न ई ढेर गावलों जाला–

केरवा जे फरेला घवद से,
ओहपर सुगा मेरड़ाय,
सुगवा के मरबो धनुष से,
सुगा गिरे मुरछाय।

धरम जाति के भेद भुलाके हित-मीत, गाँव-घर-समाज छठ पूजा मे समान रूप से सामिल होखेला। बरती सभे दोसरों के बरत करे खाति एकर महातिम बताके उसकावेला। देखीं न –

महादेव के लगावल फूलवरिया
गउरा देई फूल लोढ़े जाँय,
लोढ़त-लोढ़त गउरा धूपि गइली
सुति गइली अँचरा बिछाय।

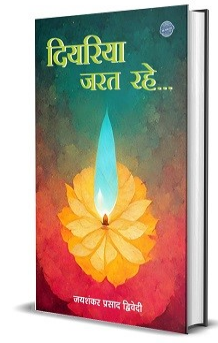
ई कहलों गइल बा कि मेहरारू लो के भरल-पूरल स्वरूप माई बनले मे होला। मेहरारू लोग भोजपुरिया समाज मे कर्मठता आउर त्याग के मूर्ति ह लो। ओह लोगिन के परान उनके संतति मे बसेला। ओकरा के पावे खाति कुछों करे खाति हरमेसा तइयार रहेला लो। पूत खाति त लालायित रहेला लो बाकि बेटी दमाद के बातों ना भुलाला। देखीं तनि-

रूनुकी झुनुकी बेटी मांगीला , पढ़ल पंडितवा दमाद
हे छठी मइया ------

छठ मे भोजपुरिया संस्कृति आ संस्कार क असली रूप उभर के आवेला। सोरह सृंगार, सोलहो कला भा पूर्णता के प्रतीक सोरह आना के झलक सांचो मे देखे आ समझे के होखे त अपना के एक बेरी एकरा मे समाहित होके समझीं। फेर रउवों ई क़हत न अघाब कि - छठ सांस्कृतिक संपन्नता, पावनता आ वैभव के व्रत हऽ।

❑❑

❍ **अवंतिका , गाज़ियाबाद उ0 प्रदेश**





डॉ राम बचन यादव

## प्रेम

उ सब प्रेम कइलन
अरथहीन पोथी से
आ बेजान पत्थर से

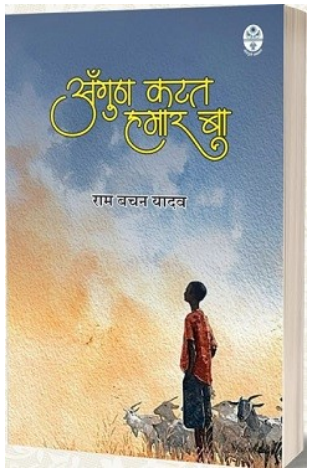
उ सब प्रेम कइलन
झूठ-मूठ के सान-सउकत से
अउर अमानवीय धरम से

उ सब प्रेम कइलन
निरमम नियम अ परंपरा से
खूनी सस्त्र अ सासतर से

उ सब प्रेम कइलन
धन-दउलत से लेके गोबर तक से
बाकिर ऊ सब ओह आदमी से
तनिको भी ना कइलन प्रेम
जेकरा सबसे जादा जरूरत रहल
प्रेम के।

❑❑

आदित्य नारायण राजकीय इंटर कॉलेज, चकिया–चंदौली






अजय साहनी

## गजल

जिंदगी राह में रहल अब तक।
चैन के रात ना मिलल अब तक॥

दर-ब-दर ए तरे भइनी हम,
घर चले के समय रुकल अब तक॥

देख पढ़के चुए लोर नैनन से,
उनकरा हाथे ख़त लिखल अब तक॥

रोकलस के वसंत के हमरा ? ,
बाग में फूल ना खिलल अब तक॥

ए 'अजय' धूप के छांव अब मानीं,
पेड़ पत्थर के बहुते उगल अब तक॥

❑❑

महुली, सारण (बिहार)

भोजपुरी के मान बढ़ाईं, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाजियाबाद, उ.प्र.



# 'भीरिया के मारल तिवइया' के बहाने लोक आस्था आ लोक बिसवास के बाति

ज्योति पांडेय

भोजपुरी लोकजीवन में छठ महापर्व आस्था, भक्ति, लोकविश्वास, पारिवारिक मंगलकामना आ सामाजिक एकजुटता के अद्भुत पर्व ह। प्रस्तुत गीत 'भीरिया के मारल तिवइया' में गीतकार जे पी (जयशंकर प्रसाद द्विवेदी) छठी मइया आ सूर्यदेव के प्रति लोकमन के अगाध श्रद्धा के अत्यंत सहज, सरस आ लोकधर्मी भाषा में अभिव्यक्त कइले बाड़ें। गीत के मूल स्वर भक्ति, विश्वास, समर्पण आ मंगलकामना ह।

गीत के आरंभिक पंक्ति "भीरिया के मारल तिवइया / तिवई काहें पछताय" में लोकजीवन के एगो भावनात्मक स्थिति सोझा आ रहल बा। मनुष्य के दुख, चिंता आ परेशानी के बीच छठी मइया पर भरोसा रखे के संदेश गीतकार दे रहल बाड़ें। "भगती संग करी ना पुजनिया / छठी माई होइहें सहाय" में ई विश्वास अउरी प्रगाढ़ होत देखाई दे रहल बा कि सच्चा मन से कइल गइल पूजा-भक्ति जीवन के संकट से उबारे के शक्ति रखेला।

गीत के अगिला अंतरा छठ पर्व के दृश्यात्मक चित्र खींच रहल बाटे—

"दउरा में भरि भरि फर फरहरिया
नंगे पाँव चलेलें बरती डहरिया"

एह पंक्तियन में छठ के पारंपरिक अनुष्ठान, दउरा, फल-प्रसाद आ नंगे पाँव घाट तक जाए वाली व्रती के तपस्या के सुंदर चित्र उकेरल गइल बा। 'डहरिया', 'फरहरिया', 'बरती' जइसन शब्द गीत के भोजपुरी लोकस्वर आ लोक मानस से जोड़ रहल बा। इहाँ भाषा आ भाव किताबि के ना बलुक सोझे लोकजीवन से निकलल बा।

"उग्गत सुरूज के अरघिया / सुरूज देव होइहें सहाय"

गीत के धार्मिक आ आध्यात्मिक केंद्र ह। उगत सूर्य के अर्घ्य देवे के दृश्य छठ पूजा के सबसे पवित्र क्षणन में से एगो ह। गीतकार सूर्यदेव के जीवनदाता आ संकटहारी शक्ति के रूप में देखत बाड़ें। एह अंश में प्रकृति-पूजा आ लोकआस्था के सुंदर समन्वय दिखाई दे रहल बा।

गीत के तीसरा अंतरा छठ के सामुदायिक स्वरूप के सामने ले के आ रहल बा —

"माई के गीत गूँजत भर नगरिया
घर के सवांग सब बनिहें कंहरिया"

छठ केवल व्यक्तिगत पूजा ना, बल्कि पूरा परिवार आ समाज के उत्सव ह। घर-आँगन से लेके गली-मुहल्ला तक छठी मइया के गीत गूँजेला। 'कंहरिया' शब्द के प्रयोग से गीत में लोक-संस्कृति के रंग अउरी गाढ़ हो गइल बा। "भगती में रंगल लोगवा" पूरा वातावरण के भक्ति के रंग में रंगाइल बा, एकर अनुभूति कवि महसूस करि रहल बा।

गीत के अंतिम अंतरा लोकमंगल के भावना के विस्तार करि रहल बा —

"बेटा बेटी चाही भा कवनो परेसनियाँ
छठी मइया दूर करि दीहें निसनियाँ"

संतान-सुख, पारिवारिक समृद्धि आ जीवन के अनेक समस्या से मुक्ति के कामना छठ-व्रत के लोकविश्वास के महत्वपूर्ण हिस्सा ह। गीतकार एह विश्वास के बिना किसी जटिलता के सरल भाषा में व्यक्त कइले बाड़ें। एह से गीत आम भोजपुरी समाज के भावनात्मक अनुभव से सहज रूप से जुड़ रहल बा।

गीत के सबसे उल्लेखनीय विशेषता भोजपुरी लोकभाषा के स्वाभाविक प्रयोग ह। 'तिवइया', 'पुजनिया', 'दउरा', 'फरहरिया', 'बरती', 'डहरिया', 'अरघिया', 'नगरिया', 'लोगवा', 'गीतिया' आदि शब्द गीत में लोकगीत के मिठास पैदा करि रहल बा। तुक, लय आ दोहराव के कारण ई गीत गावे में सहज आ सुनला में मधुर प्रतीत होई, ई हमरा बिसवास बा।

साँच कहल जाव त 'भीरिया के मारल तिवइया' छठ महापर्व के धार्मिक आ सांस्कृतिक चेतना के लोकधर्मी अभिव्यक्ति ह। एह में आस्था के साथे परिवार, समाज, प्रकृति आ लोकपरंपरा के सुंदर समन्वय मिलेला। गीतकार के सफलता एह बात में बा कि ऊ छठ के विराट सांस्कृतिक स्वरूप के सरल भोजपुरी शब्दन में समेट देले बाड़ें। ई गीत छठी मइया के प्रति लोकविश्वास, व्रती के तपस्या आ भोजपुरी समाज के सामूहिक भक्ति के मधुर दस्तावेज बनके सोझा आइल बा। अइसन सुघर आ सुमधुर गीत खातिर गीतकार के ढेर सारी बधाई आ शुभकामना।

❑❑

गाजियाबाद, उ0 प्रदेश



आशुतोष कुमार

## "मरखाह"

बाबा बात-बात पर कहत रहेलन
फलानवा बो चेव ना बोले
आपना मरद के सोझा।

हमरा आज ले ई ना बुझाइल
बाबा
फलनावा बो के
शालीनता के बखान करलें
कि
बाबू जी के माई के प्रति
मरखाह बनावल ??

❑❑

पटना , बिहार



सन्नी भारद्वाज

## फुटानी

ये बबूनी काहे खातिर अइसन तु परेशानी कइलु
झूठहु के नादानी कइलु ना

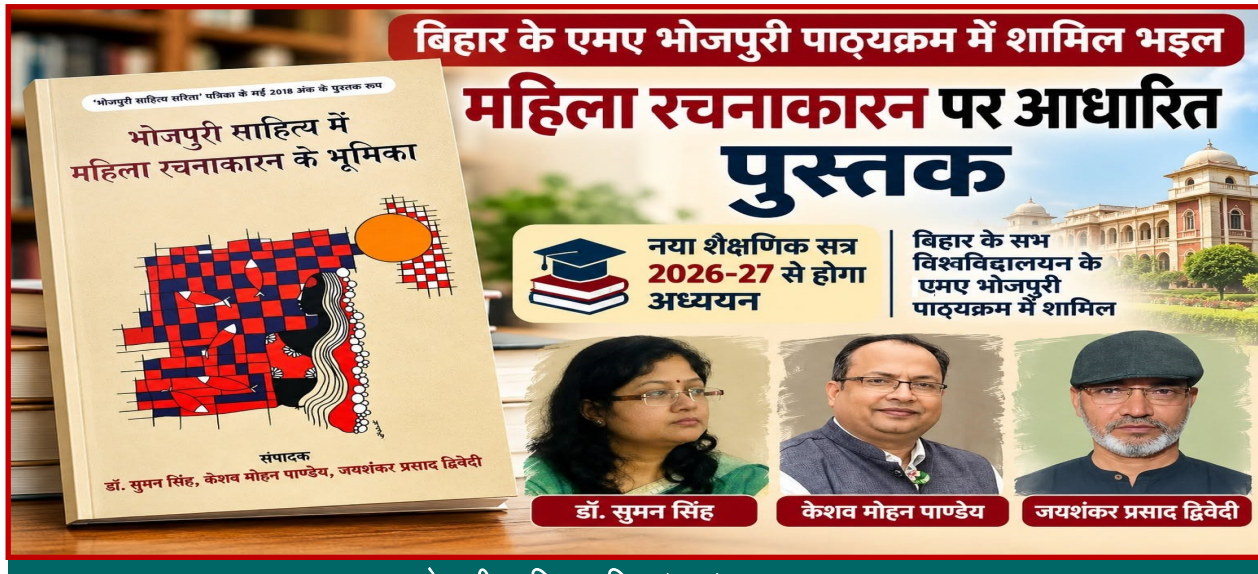
बतिया पूछत बालू निके
बाकी समय ई नइखे ठीके
खड़ा कटघरा में आजू जोर जवानी कइलु
झूठहु के नादानी कइलु ना।

मन में ओज जुबा प मुखरता
चेहरा पर बाटे सुंदरता
कारिया जीभ बनवलु कारिया आपन बानी कइलु
झूठहु के नादानी कइलु ना।

रण में देश, देश के पानी
लोहा दुनिया एकर मानी
तू त घरही बइठल थरिया में फुटानी कइलु
झूठहु के नादानी कइलु ना।

❑❑

कैमूर, बिहार





डॉ सुनील कुमार पाठक

## बापू!अपने जाइयो के जा पायेब का?

कहाँ चल दिहनीं रउवा
ना,ना ई गलती नइखे करे के
एतना रूखाई के जरूरत नइखे
केहू के अपना के तिआगल
नीमन ना कहाला!
मननीं कि अपने जवन
चाहत रहनीं
तवन ना भइल,
आ उहे सब होखे लागल
जवन रउरा
सपनो में ना सोहात रहे।
बाकिर ई कुल्ही
कव दिन चली?
फेरू देसवा गरमाई
घटा छाई
बिजुरी चमकी
अपने जवन बीया छिटनीं
ऊ एह धरतिये में नू बा
आ ई धरती बाँझ कब रहली?
जौ-जौ आगर हई !
रउवा चलि कइसे जाएब?
आ जाइयो के जा पायेब का?

❑❑

❍ फ्लैट नंबर–303,परमानन्द पैलेस
(दानापुर–801503(पटना),बिहार।

केशव मोहन पाण्डेय



## छठ गीत

अबकी अरज छठि मइया
होईं एतने सहाय
हर घर बसे सुख सुन्नर
नाहीं केहू कुम्हलाय।

बगिया के मलिया के मनवा ना मचले
फर फूल पावें नाहीं चैन बिनु नचले
अइसन अशीष मिले सबके
नाहीं कोढ़ी मुरझाय।

राग रंग बनल रहे भरल कोख माथ हो
अपने चहेतवा के सदा रहे साथ हो
माथ पर अशीष-वर राउर
सभे पा के अघाय।

हियरा के नियरा सपन-जग के बास हो
सभे बने सबका खातिर कुछ खास हो
हमरो अवगुनवा हे मइया
देतीं मन से बिसराय।

रउरे बलकवा बिकल नाहीं होखे
नाहीं मिले जिनगी में अब खाली धोखे
कs दीं किरिपा छठी मैया
अब हो जाईं सहाय।

❑❑

❍ उत्तम नगर, नई दिल्ली



# सामाजिक समरसता के व्रत-छठ

**केशव मोहन पाण्डेय**

दिवाली के चहक-महक बीतते चारु ओर पावन परब छठ के निर्मलता लउके लागेला। गाँव-देहात, देश-दुनिया, राजनीति-मनोरंजन, चारु ओर छठ व्रत पर अपना-अपना ढंग के छटा लउकेला। एकरा सथवे अपना सभ्यता-संस्कारन के छटा लउकेला। सभे छठ मैया के शरण में जा के मन के तृप्त करे के गोहार लगावत नजर आवेला। लोग-संस्कृति में देवी-देवता से ले के प्रकृति लेऽ पूजा-उपासना के परब-त्योहार ले तऽ बड़ले बा बाकिर थाती के रूप में आज छठ प्रस्तुत बा। लोक- जीवन के ओही पर्वन में सूर्योपासना खातिर छठ के एगो अलगे महत्त्व हऽ। छठ व्रत सूर्य षठी के होला जवना कारने एहके नाम छठ पड़ गइल। वइसे तऽ ई पर्व साल में दू बेर मनावल जाला बाकिर कातिक अँजोर के छठी पर मनावे जाए वाला ईऽ छठ सबसे प्रसिद्ध आ लोकप्रिय हऽ। परिवार के सुख-समृद्धि आ अनेक मनौतीअन के फल प्राप्ति खातिर ई पर्व मनावल जाला। ई पर्व मरद-मेहरारू सभे एक्के लखां मनावे ला। ई एको पहिलका पर्व ह जवना में उगत सुरुज के पहिले डूबतो सुरुज के आराधना होला। अरघ दिआला। छठ गीत से वातावरन एगो अलगे दुनिया के सिरजना करेला। सांस्कृतिक पहिचान के साथे श्रद्धापूर्ण संसार के रचेला। बेर-बेर सुने के मिलेला -

*केरवा के पात पर उगे ले सुरुजमल झाके-झूके*
*ए करेलू छठ बरतिया कि झाके-झूके*

छठ व्रत के संबंध में कहल जाला कि लोग माई छठ के पहिलका पूजा सूरजे भगवान कइले रहले। अगर विज्ञान के आँख से देखल जाव तऽ एह छठ पर्व के परंपरा में बहुत विज्ञान बा। खगोल विज्ञान के मानी तऽ षष्ठी तिथि अपने आपे में एगो विशेष खगोलीय अवसर हऽ। ओह दिन सूर्यदेव के पराबैगनी किरीन धरती के तल पर कुछ अधिक मात्रा में जमा हो जाली। इहो कहल जाला कि परब के पालन से सूरूज के पराबैगनी किरन के हानिकारक प्रभाव से जीव-जंतुअन के रक्षा संभव बा। सूरूज के किरीन धरती पर पहुँचला से पहिले वायुमंडल में प्रवेश करे से पहिले आयन मंडल से मिलेले। ऊँहवे पराबैगनी किरीन के उपयोग कऽ केऽ वायुमंडल अपना आक्सीजन तत्त्वन के संश्लेषित कऽ के ओकरा एलोट्रोप ओजोन में बदल देला। तब धरती पर एकर असर कम हो जाला। ज्योतिष के गिनती के अनुसार ई घटना कार्तिक आ चइत मास के अमावसा के छह दिन बाद पड़ेला।

एह तरे कार्तिक शुक्ल के छठी के दिने मनावल जाये वाला ई पर्व हर तरह से एगो पवित्र पर्व हऽ। साँच तऽ ई हऽ कि पहिले एह व्रत के खाली औरते लोग करत रहल, बाकिर अब ढेर तादात में पुरुषों लोग सहभागिता लेबे लागल बाऽ। जइसन कि पहिलहूँ कहल गइल बा, एह व्रत के सबसे अधिका उद्देश्य बेटा पावल, बेटा के दीर्घायु भइल रहल बा बाकिर आज तऽ ई व्रत सगरो कामना के पूरा करे खातिर मनावल जाला। आज के समय में ना बेटा-बेटी में भेद रहल आ ना छठ के एगो उद्देश्य। सच्चाई तऽ ई हऽ कि छठ माई के ई पावन व्रत भगवान भाष्कर के व्रत हऽ। भगवान भाष्करे के अरघा देहला के बाद व्रती लोग पारना करेला लोग। छठ व्रत के विधि का हऽ, ओकर सगरो विधान पूजा करत, तैयार करत के अवसर पर गावे वाला गीतन में सोंझहे लउके ला। सँचको बात ईहे हऽ कि लोक-उत्सवन के असली उमंग तऽ ओह अवसरन पर गाए जाए वाला गीतन के विविध रंगे से फूटेला। अदितमल से अरज करत औरत जब अपना दयनीय दशा के वर्णन करेली तऽ सुने वाला मनइयो के करेजा पसीजे लागेला। एगो गीत रउरो देखीं ना, -

*काल्ह के भुखले तिरियवा*
*अरघ लिहले ठाढ़ऽ।*
*हाली-हाली उग ये अदितमल,*
*अरघा जल्दी दियावऽ।।*

छठ व्रत में पारना के एक दिन पहिले वाला साँझ के बेरा डुबत अदितमल के, आ ओह दिन उगत अदितमल के, व्रती अरघा अर्पित करेला लोग। सूर्य देव के अरघा देबे के प्रक्रिया नदी, पोखरा आ तालाबन के किनारे पूरा कइल जाला। छठ के गीतन में गंगा जी के स्वच्छ आ झिलमिल जल के वर्णन मिलेला। एगो चित्र देखीं। देखीं ना, एगो भक्त परिवार छठ माई के पूजा करे नाव से घाट पर जाता। गंगा जी के झिलमिल पानी से चित्र और निखर जाता -

*गंगा जी के झिलमिल पनिया*
*नइया खेवे ला मल्लाह,*
*ताही नइया आवेले कवन बाबू*
*ये कवना देई के साथ।*
*गोदिया में आवेलें कवन पूत*
*ये छठी मइया के घाट।।*

लोक-जीवन के एह महान उत्सव खातिर कुछ दिन पहलहीं से सामान के व्यवस्था होखे लागेला। ई लोक-व्यवस्था के समरसता देखीं कि छठ पूजा में लागे वाला अधिकतर सामान प्रकृतिए के गोद से मिलेला। या तऽ ऊऽ सब प्रकृति देवी देली आ नाहीं तऽ कृषि आधारित होला। कहीं से केरा, कहीं से नेबुआ, कहीं से दही, सेब, सिंघाड़ा, ऊँख, हरदी, आदी, कोंहड़ा, चिउरा, ओल, सुथनी। ईऽ सगरो सामान आस-पड़ोस, सगा-संबंधी से मिल जाला। छठ के गीतन में तऽ ईहो वर्णन मिलेला कि घरे आवे वाला हीतो-नात अरघा के सामान जुटावेला लोग। देखीं -

कवन देई के अइले जुड़वा पाहुन,
केरा-नारियर अरघर लिहले।

भोजपुरी लोकमन ईहाँ के मटिए जइसन उर्वर आ निर्मल बाऽ। जेऽ तरे लोग के पावन मन में अनगिनत लालसा के जनम होला, ठीक ओही तरे भारत के माटियो पर किसिम-किसिम के फल-फूलन के ऊपज होला। भारत के धरती अनगिनत फल-फूल, धन-धान्य से भरल धरती हऽ। ई रतनन से भरल वसुन्धरा माई हमनी के सबकुछ दे देलीऽ। हर तरह से संपन्न करेली। हमनी के सुख-दुख, हँसी-खुशी, उछाह-उमंग, सबके ध्यान राखेली। आजुओ ईहाँ के गाँवन में, जहवाँ रेंगनी के काँट से जीभ छेंद के भाई के बचावे खातिर सरपला के व्रत भैया-दूज चाहे भाई-टीका होखे भा छठ, पिड़िया, बहुरा, पनढरकउआ आदि लोक व्रत-त्योहार लोक उत्सव के रूप में जीवित बा, ओह मौका खातिर सामानन के व्यवस्थवो सोंचल जाला। शहर के गति से पिछुआइल हमनी के गाँवन में कातिके-अगहन नाऽ, सालो भर मौसम के अनुसार फल-फूल, साग-सब्जी के मनमौजी लता-लड़ी बेसुध होके घरन के छत-छान्ह पर पसरल रहेली आ अपना उन्मादल हरिहरी से मानव-मन के आकर्षित करत रहेली। कवनो गाँव में चलऽ जाईं, हर जगह लौकी, कोंहड़ा, घेंवड़ा, तिरोई आ चाहें नेबूआ, केरा, हरदी, ओल, कोन, सुथनी के आकर्षण लउके ला। सगरो व्यवस्था मोहबे करेला, -

केरवा जे फरेला घवद से,
ओहपर सुगा मेरड़ाय,
सुगवा के मरबो धनुष से,
सुगाा गिरे मुरछाय।

लोक जीवन! माने सहजता के जीवन। एह सहजता में अपनत्व बाऽ, प्रेम बाऽ आ समर्पण बाऽ। व्रत-त्योहारन के अवसर पर गावे जाए वाला गीतीयनो में लोक-जीवन के आशीष, प्रेम, अपनत्व, सहयोग, समरसता के सथवे अमरख आ बैरो के स्वरूप मिल जाला। एह आधार पर छठ के सामाजिक समरसता के व्रत कहल जाव त सबसे सही रही। सचहूँ, छठ के कारने बैर बिला जाला, नेह समा जाला। बैर आ बाउर नजरी के डरो लउकेला, -

काँच ही बाँस के बहँगिया
बहँगी लचकत जाय।
बाट जे पूछेला बटोहिया
ई बहँगी केकरा घरे जाय?
आँख तोर फूटो रे बटोहिया
ई बहँगी कवन बाबू के घरे जाय।।

छठ के गीतन के सांस्कृतिको पक्ष अद्भुत बाऽ। कहीं पार्वती माता शिव जी की फूलवारी से फूल तुरत लउकेली तऽ कहीं मालीन अपना काम में लीन। सभे श्रद्धा के भाव से छठ माई के पूजा-अर्चना में लीन भइल रहेला। अगर छठ माई के व्रत-पूजा के सामानन के व्रत-पूजा कहल जाव तऽ कतहीं से गलती ना होई। एह व्रत में हर किसीम के सामानन के व्यवस्था कइल जाला। एह व्रत में सामाजिक सहयोग के कवनो सीमा ना रहेला। ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, छोट-बड़, आपन-बीरान के सगरो भेद -भाव के आडंबर से परे हो के सभे उत्सव के सहयोग में जुट जाला। आनन्द आ उछाह के निमित्त बन जाला। सभे सबके मंगल के याचक बन जाला। एगो गीत देखीं ना, -

महादेव के लगाावल फूलवरिया
गउरा देई फूल लोढ़े जाय,
लोढ़त-लोढ़त गउरा धूपि गइली
सुति गइली अँचरा बिछाय।

आज के बेगवान समाज के बौद्धिक स्तर भले ऊँच हो ताऽ, बाकिर आज के जन मानस में बेटा-बेटी के प्रति सोच बदलत लउकता। आज के समय में खाली सुहाग के जोड़ा, बाँह में चूड़ी, माँग में सेनूर लगवले में नारी के नारीत्व पूरा ना होला। पहिले तऽ बेटा खातिर औरत लोग कवनो उद्यम करे खातिर तैयार रहत रहे लोग, आज बेटा-बेटी में भेद के सोंच बदलल बा। ई सोच औरते लोग के कारन बदलल बाऽ। सचहूँ औरत लोग अदम्य साहस के अक्षय-कोष हऽ लोग। एगो औरत के चित्रण देखीं जवन खाली पाँच गो बेटा पाऽ के संतुष्ट हो जइहें। छठ के गीतन में ईहो मनोभाव देखे के मिलेला, -

खोंइछा अछतवा गड़ुअवा जुड़ पानी,
चलेली कवन देई अदितमल मनावे।
थोर नाहीं चाहीं अदितमल, बहुत माँगीले ना,
पाँच पूत ये अदितमल हमरा के देतीं।

भले आज अत्याधुनिक सभ्यता आ श्रेष्ठ शिक्षा के चमत्कार के कारन अपना प्राचीन धारणा आ विश्वासन में वैज्ञानिक आ तार्किक परिवर्तन भइल बाऽ, बाकिर भोजपुरी के लोक-संस्कृति के कलकल करत नदी के धारा आजुओ अपना पहिलके गति से बह रहल बा। लोग आजुओ ओही तरे छठ के व्रत राखता आ अपना मन के कामना के पूरा होखे खातिर छठ माई के विधिवत पूजा-व्रत राखत बा लोग।

एही कारने देश में रोज राजनैतिक, सामाजिक आ आर्थिक व्यवस्था के साथे धार्मिक परिवर्तन होत बाऽ तऽ काऽ, आजुओ छठ मइया के प्रति आस्था बढ़ते बुझाता। खाली बुझाते नइखे, सच्चाइयो सिद्ध होऽ ता कि छठ सामाजिक समरसता के व्रत हऽ। छठ सांस्कृतिक संपन्नता आ वैभव के व्रत हऽ। छठ पावनता के व्रत हऽ।

जब तथाकथित बुद्धिजीवी लोग से सामाजिक शोषण के महागाथा सुनेनी तऽ क्षोभ होला। क्षोभ एह बात के कि कबो भइल होई शोषण, बाकिर आजु तऽ अपना समाज के जवन रूप लउकत बा, ऊ त दोसरे तथ्य उजागर करेला। आजु तऽ खाली छठ व्रत के देखि के डंका के चोट पर कहल जा सकेला कि ई व्रत सामाजिक व्यवस्था में एकरूपता, समरसता आ भाईचारा के व्रत हऽ। सामाजिक व्यवस्था के व्रत हऽ।

बाकिर समय के साथे समाज बदलत बा आ समाज के साथे ओकर रीति-रिवाज, परंपरा आ जीवन-मूल्यन के व्याख्या बदलत रहेला। एह बदलाव के बीच छठ के महत्त्व आ ओकर सामाजिक प्रासंगिकता पर नये सिरे से विचार करे के जरूरत बा। आज हमनी के अइसन समय में जी रहल बानी जा, जहाँ तकनीकी विकास आदमी के जीवन के बहुत सहज बना देले बा, बाकिर सामाजिक संबंधन में दूरी बढ़वले बा। एक ओर दुनिया डिजिटल माध्यम से सिमट के हथेली में आ गइल बा, दोसरा ओर पड़ोसी से पड़ोसी के संवाद कमजोर पड़त जा रहल बा। परिवार के संयुक्तता टूट रहल बा, गाँव के सामूहिकता पर शहरी जीवनशैली के दबाव बढ़ रहल बा आ आदमी अपना निजी सुख-सुविधा के दुनिया में सिमटत जा रहल बा। अइसन समय में छठ के सामूहिक स्वरूप हमनी के फेर से एक-दोसरा के नजदीक आवे के अवसर देला।

छठ के सबसे बड़ विशेषता ईहे बा कि एहमें आदमी खाली अपना खातिर पूजा ना करेला, बल्कि पूरा परिवार, समाज आ लोकमंगल के कामना करेला। घाट पर खड़ा व्रती के सामने कवनो जाति, धर्म, वर्ग आ आर्थिक हैसियत के पहचान ना रहेला। सबके नजर उगत आ डूबत सूरज पर रहेला। सबके हाथ में अरघ के सूप रहेला आ सबके मन में मंगलकामना। एह दृश्य में भारतीय समाज के ऊ आदर्श साकार होला, जेकर कल्पना हमनी के संविधान के प्रस्तावना में समानता, स्वतंत्रता आ बंधुता के रूप में कइले बानी जा। छठ के घाट पर सामाजिक समरसता के ई दृश्य खाली धार्मिक आस्था के परिणाम ना ह, बल्कि ई सामूहिक जीवन के एगो अइसन पाठशाला ह, जहाँ बिना कवनो औपचारिक शिक्षा के आदमी बराबरी, सहयोग आ सह-अस्तित्व के अर्थ समझेला।

आज जब समाज के भीतर जातीय आ धार्मिक पहचान के आधार पर विभाजन के अनेक स्वर सुनाई पड़त बा, तब छठ के घाट पर बनत ई सामूहिकता अउरी महत्त्वपूर्ण हो जाले। एह पर्व में डलिया सजावे वाला, दउरा उठावे वाला, घाट साफ करे वाला, रास्ता बनावे वाला आ व्रतियन के सहयोग करे वाला लोग के बीच कवनो बड़-छोट के भाव ना रहेला। सबके श्रम के सम्मान होला। छठ के ई सामाजिक चरित्र हमनी के याद दिलावेला कि समाज के वास्तविक शक्ति ओकर विविधता में बा, ओकरा बीच के संवाद में बा आ एक-दोसरा के सुख-दुख में सहभागी बने के भाव में बा। सवाल ई बा कि जे समरसता हमनी के चार दिन के छठ में जीअत बानी जा, का ओकरा अपना रोजमर्रा के सामाजिक व्यवहार में उतार सकत बानी जा?

आज के समय में छठ के एगो अउरी महत्त्वपूर्ण पक्ष पर्यावरण चेतना से जुड़ल बा। प्रकृति के पूजा करे वाला एह पर्व में धरती, जल, वायु, वनस्पति आ सूर्य के प्रति मनुष्य के कृतज्ञता के भाव समाहित बा। छठ में इस्तेमाल होखे वाला अधिकतर सामग्री प्रकृति आ खेती-किसानी से प्राप्त होला। बाँस के सूप, दउरा, माटी के दीया, गन्ना, नारियल, केला, नींबू, सिंघाड़ा, अदरक, हल्दी आ मौसमी फल-सब्जी—ई सभे हमनी के प्रकृति से जुड़ल जीवन-पद्धति के परिचायक ह। एहमें कृत्रिमता से अधिका सहजता बा आ बाजार से अधिका लोक-श्रम के महत्त्व बा। बाकिर आज के उपभोक्तावादी समाज में छठ के एह सहजता पर बाजार के प्रभाव बढ़ रहल बा। पूजा के सामान अब स्थानीय कारीगरन आ किसानन के घर से निकल के बड़-बड़ बाजार आ ऑनलाइन मंचन तक पहुँच गइल बा। सुविधा बढ़ल बा, बाकिर कहीं-न-कहीं स्थानीय अर्थव्यवस्था आ पारंपरिक हुनर के महत्त्व घटे के खतरा पैदा भइल बा।

छठ के अवसर पर स्वच्छता अभियान चलावल, नदी-तालाब के सफाई कइल, प्लास्टिक के इस्तेमाल कम कइल आ स्थानीय स्तर पर पर्यावरण के अनुकूल सामग्री अपनावल एह पर्व के आधुनिक समय से जोड़े के सबसे सार्थक उपाय हो सकेला। छठ के घाट खाली चार दिन खातिर सजावल ना जाय, बल्कि सालो भर ओकर स्वच्छता आ संरक्षण के जिम्मेदारी सामूहिक रूप से निभावल जाय। आखिर जे जल में खड़ा होके हमनी के भगवान भास्कर के अरघ देत बानी जा, ओही जल के स्वच्छ रखे के संकल्प तऽ लेबे के चाहीं। ई संकल्प छठ के आध्यात्मिकता के पर्यावरणीय चेतना से जोड़ी।

सोशल मीडिया पर छठ के गीत, तस्वीर, वीडियो आ शुभकामना संदेश के व्यापक प्रसार एह पर्व के वैश्विक पहचान दे रहल बा। भोजपुरी लोकगीत अब खाली गाँव के चौपाल आ घर के आँगन तक सीमित नइखे। ऊ दुनिया के अलग-अलग कोना में सुनल आ

गावल जा रहल बा। बाकिर एह डिजिटल विस्तार के साथे एगो सावधानी के जरूरत बा। छठ के मूल भाव प्रदर्शन ना, बल्कि साधना ह। पूजा के समय फोटो खिंचवावे, वीडियो बनावे आ सोशल मीडिया पर लोकप्रियता हासिल करे के होड़ में कहीं-कहीं व्रत के आंतरिक अनुशासन आ आध्यात्मिक एकाग्रता पीछे छूटत देखाई देला। तकनीक के इस्तेमाल परंपरा के प्रसार खातिर होखे, ओकरा मूल संवेदना के विस्थापित करे खातिर ना।

छठ के आर्थिक पक्ष पर आज नया दृष्टि से विचार करे के जरूरत बा। ई पर्व लाखों किसान, फल विक्रेता, बाँस के कारीगर, कुम्हार, सूप-दउरा बनावे वाला परिवार, फूल विक्रेता, परिवहनकर्मी आ छोट व्यवसायियन के आजीविका से जुड़ल बा। छठ के नजदीक आवते बाजार में मौसमी फल, पूजा सामग्री आ पारंपरिक हस्तशिल्प के मांग बढ़ जाले। गाँव के कारीगरन के बनावल बाँस के सूप आ दउरा के विशेष महत्त्व बा। ई खाली पूजा के सामान ना ह, बल्कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलत आ रहल लोककला आ श्रम-संस्कृति के प्रतीक ह। अगर हमनी के स्थानीय कारीगरन से सामान खरीदीं, स्थानीय किसानन के उपज के प्राथमिकता दीं आ पारंपरिक उत्पाद के सम्मान करीं, तऽ छठ लोकआस्था के साथे स्थानीय अर्थव्यवस्था के मजबूत करे वाला पर्व बन सकेला।

एह सबके बीच छठ के एगो अइसन पक्ष बा, जेकर चर्चा अपेक्षाकृत कम होला। ऊ ह समाज में श्रम के प्रतिष्ठा। छठ के आयोजन में घाट के सफाई करे वाला कर्मचारी, रास्ता पर रोशनी के व्यवस्था करे वाला श्रमिक, बाँस के सामान बनावे वाला कारीगर, फल-सब्जी उगावे वाला किसान आ पूजा के सामान पहुँचावे वाला छोट दुकानदार—सभकर योगदान बराबर महत्त्व रखेला। हमनी के ई ना भूले के चाहीं कि छठ के भव्यता कवनो एक व्यक्ति चाहे परिवार के कारण ना, बल्कि अनगिनत हाथन के सहयोग से संभव होला। एह पर्व में श्रम के जे सम्मान दिखाई पड़ेला, ओकरा के सामाजिक जीवन के स्थायी मूल्य बनावल जरूरी बा।

आज जब दुनिया जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, प्राकृतिक आपदा आ संसाधन के अंधाधुंध दोहन के संकट से गुजर रहल बा, तब सूर्योपासना के ई परंपरा हमनी के प्रकृति के प्रति अपना संबंध पर फेर से विचार करे के अवसर देत बा। सूरज के बिना जीवन संभव नइखे। जल के बिना धरती पर हरियाली संभव नइखे। माटी के बिना अन्न संभव नइखे। आ मनुष्य के बिना समाज के कल्पना संभव नइखे। छठ एह चारो के बीच के संबंध के एगो सुंदर सांस्कृतिक सूत्र में बाँध देला। ई हमनी के सिखावेला कि प्रकृति पर मनुष्य के अधिकार से अधिका ओकरा प्रति मनुष्य के जिम्मेदारी बा।

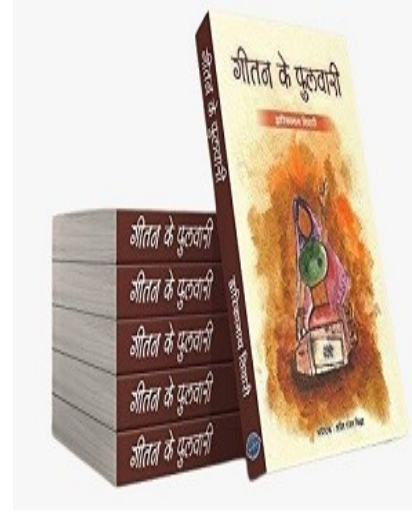
अंततः, छठ के सामाजिक समरसता के व्रत कहे के पीछे खाली एह पर्व के आयोजन में दिखाई देवे वाला सामूहिकता नइखे, बल्कि ओकर तर निहित जीवन-दर्शन बा। ई अइसन दर्शन ह, जहाँ प्रकृति आ मनुष्य के बीच संबंध बा, परिवार आ समाज के बीच अपनत्व बा, श्रम आ श्रद्धा के बीच सम्मान बा, परंपरा आ आधुनिकता के बीच संवाद बा। छठ हमनी के सिखावेला कि समाज के समृद्धि खाली आर्थिक विकास से ना, बल्कि आपसी विश्वास, सहयोग, समानता आ संवेदना से होला।

आज जरूरत बा कि हमनी के छठ के घाट पर लेहल संकल्प के घाट से बाहर निकलला के बादो निभाईं। नदी के स्वच्छता के चिंता पूजा के बादो करीं। बेटी-बेटा के समानता के भाव गीत आ व्यवहार दुनो में उतारीं। गरीब आ वंचित के सहयोग खाली पर्व के अवसर पर ना, बल्कि जीवन के हर दिन करीं। स्थानीय कारीगर, किसान आ श्रमिक के सम्मान करीं। आ सबसे बढ़के, सामाजिक भेदभाव के ओह हर दीवार के गिराईं, जे मनुष्य के मनुष्य से अलग करेला।

छठ खाली आस्था के पर्व नइखे, ई सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक चेतना, पर्यावरण संरक्षण आ मानवीय समानता के जीवन-दर्शन ह। डूबत सूरज के प्रणाम आ उगत सूरज के अरघ के बीच ई हमनी के सिखावेला कि सम्मान सबके मिले, सहयोग सबके मिले आ उजास सबके जीवन में पहुँचे।

❑❑

○ उत्तम नगर, नई दिल्ली





शरण आशुतोष

# पतझर के टेसू

जाड़ा के सुबह रहे। कवियन के नायिका के कमर जइसन ऊ गली के एगो घर के केवाड़ी थोरिका सा खुलल । पल्लवन के फाँफर से गरीबन बानो के झुर्रिदार चेहरा बाहर निकसल। चोर-नजर से सामने के घर के देखली, अगल-बगल झँकली आ कमर के पीछे हाँथ में झाड़ू छिपवले बाहर निकललली। ऊ अंदाजन ओह समय में दरवाजा के चबुतरा पर झाड़ू लगावे निकलल रही, जब सामने वाली नगमा बानो आपन ड्योढ़ी के साफ-सफाई करके जा चुकल होखस। एकरा पहिले कि ऊ धूप में देह सेंके ओकर चबुतरा पर आवस,

गरीबन जल्दी-जल्दी झाड़ू लगाके हट जाइल चाहत रही। एने दू-तीन दिन से दूनो मोहतरमात में मुँहफुलौवल चलत रहे। ई कोई नया बात ना रहे। अकसर कोई न कोई बात पर दूनो हमजोलियन के रुठ के बातचीत बंद करल, एक दूसरा के सामना करे से गुरेज कइल,आ फिर मेल करल, चलत रहे ला।

गरीबन आ नगमा पनरह-सोलह बरस के उमिर में बियाह के, ई गली के आमने-सामने के घर में आइल रही। काँच उमिर के दोस्ती उमिर के ढलान तक परवान चढ़त रहल। सुख-दुख के साझीदार रहल ई दूनों अब उमिर के आखिरी दहलीज पर बाड़ी, पर नादान उमिर के नादानियन आज भी ओहनि में बाकी बचल बाड़ी स, जे बखत-बेबखत झलक ही जाली स।

गरीबन झाड़ू लगावते रही कि उनकर नजर ताड़ के पत्ता के चटाई बगल में दबवले, बतख-चाल में गली पार करत नगमा पर पड़ल। ओकर चाल देखके गरीबन हँसी ना रोक सकली। नजर नीचे कइले नगमा उनकर चबूतरा पर अइली, गरी के तेल के डिब्बा धूप में रखली आ चटाई बिछाके धूप में बैइठ गइली। गरीबन मुँह बिचकाके बहारल जारी रखली। नगमा मुँह फेर लेली आ कहली,

“उँह नखरा देखावत बाड़ी खुदपरस्त। अपने चाहे जेतना कड़ुआ बोलस, दोसर के बोली में मध धुलल चाहीं।”

गरीबन बड़बड़ात झाड़ू लगावत रही,

“जानत बानी। मुँह के गरीब हईं हम, लेकिन लल्लो-चप्पो करे ना आवे। एही से जिनगी भर बात के लात खात रह गइनी।”

नगमा के आवाज नरम भ गइल, “आच्छा, चलऽ बात छोड़ऽ आ आपन गलती मान ल बीबी।”

गरीबन मुस्कइली, झड़ू रखके नगमा भीरी आवत कहली, “चलऽ तोहरा खातिर आपन गलती मान लेत बानी, नम्मो। जरा घसकऽ ओने।”

अइसे त अमूमन नगमा के नगमा ही पुकारे ली गरीबन, लेकिन जब ढेर प्यार उमड़ेला त नम्मो।

नगमा जगह बनावत कहली, “अब बैइठबू कि हमरा सिर पर खड़े रहबू।”

“बइठल-उठल अतना आसान नइखे रे नम्मो!”

“हँ गरीबन! हमार भी इहे हाल बा। खड़ा बानी त बइठल ना जाला आ बइठल बानी त उठल मुस्किल।”

“बुढ़ापा के सौगात हऽ बहिनी। लेवऽ हीं के पड़ी। झेलऽ हीं के पड़ी।...चाह-वाह त नाहींए पीअले होखबू ?”

“ना। दूध आउर चाय लागि पइसा बचल बा ना। आ बसीर भी अभी तक आइल ना! त पेंसन केकरा से निकलवईंती?”

“हम बकरी के ताजा दूध निकलऽले बानी। चाह बनाके ले आवऽतनी।”

“हम भी चलीं का?”

“अरे रहे दऽ। अभी एतना भी बूढ़ नइखी भइल, नगमा! तूँ आराम से धूप सेंकऽ।”

गरीबन चाय बनावे चल गइली। बइठल-बइठल नगमा के दिमाग में बात आइल कि

गली पार करते बखत ओकरा के देख के गरीबन हँसत काहे रही? गरीबन चाय लेके अइली। दूनों सुड़क-सुड़क के पिये लगली। चाय के सुड़की के दौरान नगमा आखिर पूछ ही देली।

गरीबन हँसत कहली, “बीबी, तूँ काँख में चटाई दबवले अइसन चलत रहू ,जइसे कोई बत्तख तेजी से चलल आवत होखे।”

दूनो हँस पड़ली।

गरीबन पूछली, “गरी के तेल धूप में पिघलावत बाड़ू। बाल में लगावे खातिर न?”

“हाँ। बहुत रूखा भ गइल बा।”

“चल हम अच्छा से तोहरा बाल में तेल लगा देतऽनी। हमरा अइसन सिर मालिस करे वाली तोहरा ढूँढ़लो ना मिली।”

“ तोहार सिर के बाल भी तऽ सूखल-सूखल सा बा।”

“हँ हो, सूखले नइखे गंदा भी भ गइल बा। ठंढ कम हो जाई त सिर धोअब, तबे तेल लगाइब। अभी खुनक बहुत बा। सबनम खाला से मुल्तानी मिट्टी लेके रखले बानी।” नगमा के बाल में तेल लगावत कहली, “ तोर झोंटा में त पतझड़ मुस्कुरात बिआ,नम्मो।”

“साँस के पतझड़ में अब बनाव-सिंगार का! बहार त अब लवट के आवे वाला नाइखे। बाल झरतरन त झरस।”

नगमा के उदासी भरल बात से गरीबन भी अछूता ना रहली।

“हाँ नम्मो ऊ साज-सिंगार के जमाना कब के पीछे छूट गइल!

खिजाँ के बाद त अब फना बा,बहार ना।"
नगमा भारी होखत माहौल के हल्का करत कहली, " बीबी, माँ-बाप तोहार नाम गरीबन काहे रखलन? तू तऽ दिल के अमीरन हऊ रे!"
"एकलौती औलाद रहीं, लमहर उमिर खातिर रखले होखीहें। तू बताव, तोहार नाम नगमा काहे रखलन?"
"हमरा नइहर में एगो वाजिद साहब रहलें,नामी गवैया। उनकरे दिहल नाम ह। तब के समय में हम बहुते बढ़िया गावत रहीं।"
दूनों चुप हो गइली। नगमा के एकाएक इयाद आइल त बोलली,
"बतकही में अइसन उलझनी कि तोहरा से पूछें के भूला गइनी। शबनम खाला के हाल-चाल कइसन बा?
"सख़्त मीर हई।...गाँठ में फूटल कौड़ी नइखे, आ रोब साही बेगम लोगिन के!"
"तभी त मुल्तानी मिट्टी तोहरा मुफ्ते में मिल गइल!"
आ दूनों बीबीअन के हंसी फूट पड़ल।
"नगमा अब चले के चाहीं। बहुत बतरस भइल।"
"हाँ। हम भी जात बानी गरीबन। धूप भी चलीए गइल। दुपहरिया में आइब। गोइँठा के राख तले सकरकंद दबा के आइल बानी। लूडो खेलत- खेलत खाइल जाई।"
दुपहरिया में सोन्ह-सोन्ह भुनल सकरकंद के मिठास के साथ लूडो के दू बाजी पूरा हो चुकल रहे। एक-एक बाजी दूनों बीबी जीत चुकल रही। तीसरकी निरनायक बाजी चलत रहे कि चुहानी से झन्न के आवाज आइल।
गरीबन छड़ी उठा के बोलली, " अरे मुई का गिरवलस रे। ठहर, आज तोर हड्डी-पसली एक कर के ही छोड़ब!" चुहानी के ओरिया दू डेग भी ना गइल रही कि एगो मरियल अस बिलाई छपाक से भाग निकलल। "देखके आवत बानी का नोकसान कइले बिया ई हरामजादी। नाक में दम कर के धइले बिया!...गोटीअन के हाथ मत लगइहऽ नम्मो।" कहत अंदर चल गइली।
लवट के अइली गरीबन त नगमा के बनावटी हाव-भाव देखके उनकर माथा ठनकल। बोई के धियान से देखली। नगमा के दूगो गोटी आगे बढ़ल रहे।
"देखा देलू न आपन जात! ई दूनो गोटी एहीजा ना रही साँ।"
नगमा भड़क उठली, "झूठा इलजाम मत लगावऽ। कह देत बानी!"
"त दिल पर हाथ रखके कसम खा!"
"हम कहऽतनी नु, गोटियन के छूअले तक नइखीं।"
बहस बढ़ल,तेवर चढ़ल,गारी चललीं सँ, बोड उलट गइल।
नगमा जाते-जाते बोलली, "हमार हिस्सा के टिकिया दे जइहऽ।"
गरीबन तैस में कहली, " जमींदार समझत बाड़ू? मुफत में दे दीं? ना देब जा!"
नगमा तेवर देखइली, " आ हम जे कोइला के चूरा आउर माँड़ देले रहीं ऊ?"
गरीबन भी पीछे हटेवाली रही ना, "ऊ? माँड पी गइनी आ चूरा चूल्हा में झोंक देनी। जा ना देब!"
"ठीक बा! अब फिर कबो ना आइब तोहरा इहाँ। कुट्टी कुट्टी कुट्टी!"
गरीबन भी गुस्सा में रही, "कुट्टी कुट्टी कुट्टी!"
दू दिन तक ना तऽ गरीबन केवाड़ी के फाँट से गर्दन बाहर निकाल के झँकली, नाहीं ओह पार के बत्तख गली पार कइली। तीसरका दिन के रात के सुरूआत अभी भइल रहे कि नगमा के दरवाजा पर दस्तक भइल। लिहाफ के गरमाहट में सिकुड़ल नगमा कसमसा के बिस्तर से निकलऽली। दरवाजा खोलऽली। सामने टूटल पसलिअन वाली टोकरी में टिकिया लिहले गरीबन के खड़ा देखके, हैरान रही नगमा। गरीबन के भीतर खींच के दरवाजा बंद कर देली।
"एतना खुद्दार हो गइल बाड़ू तूँ! जरा सा बात एतना चुभ गइल कि रात के अन्हरिया में टिकिया देवे आ गइलू।" नगमा के मन पिघले लागल, आँख भर आइल । टोकरी लेके कोना में रख देली। "चलऽ लिहाफ में। ठंढ से काँपत बाड़ू।"
आपन आँसू पोंछत धीरे से बोलली गरीबन, "तोरा बिना मन ना लागे नम्मो!"
नगमा कुछ ना कहली। उनकर हाँथ पकड़ के भीतर ले गइली। दूनों एक ही लिहाफ में दुबक गइली। ठंढ दूर भइल त गरीबन बोलली,
"कमबख्त अकेलापन काट खाएला। दिन त तोहरा से लड़त-झगड़त कट जाए ला, रतिया केतना लम्बा लागेले...नम्मो, रात के बड़ा डर लागेला। बंद घर में कौनो रात खुदा के प्यारी हो गइनी, तऽ?"
नगमा हल्का झिड़कन वाला पियार से कहली, "मरला के बाद का होखी ई सोचला से का फायदा! अइसन बेकार के बात कहे सोचत रहेलू?"
"पता ना बीबी!...तनहाई में ना जाने मन काहे भटकत रहेला?"
लमहर साँस लेत कहली नगमा, " हँ,बीबी। बुढ़ापा के तनहाई जे भोगे, से जाने। इयाद के गठरी पर कसहूँ समय कटत बा। ना आँख में नींद ना मन में सुकून!"
"तनहाई में बीतल समय के इयाद कतना रोआवेला बीबी! इयाद पीछा नइखे छोड़त, आ जिनगी चोला।"
दूनों के अँखियन गंगा-जमुना बनल रही सँ। दूनो एक दूसरा से चिपक के देर तक रोअली। जब मन सांत भइल त गरीबन के इयाद आइल कि घर अकेला बा।
"चलऽतनी नगमा। रात गहरा रहल बिया।"
नगमा हँसके कहली, "एहीजे रह जा। साथ-साथ अल्लाह के पास चलल जाई।"
गरीबन भी हँसत कहली, "तोहरा जल्दी बा तऽ जा! हम त चललीं अपना घरे।"
"रुक, हम भी चलतनी। गिर-पड़ जइबू त मुसीबत हो जाई।"
लालटेन लेके दूनों गली में उतर ली। गरीबन के घर के दरवाजा के ओर बढ़त नगमा फिर कहली, "रात हमरा इहाँ ठहर जइतू त अच्छा रहीत। आज खुदाई-रात हऽ। साथे-साथे रतजगा करतीं जा।"
गरीबन कहली, " घर के अकेला कइसे छोड़ दीं बीबी। खुदा हाफिज।"
"खुदा हाफिज।"
दूनों आपन-आपन घरे आ आपन-आपन अकेलापन में लवट गइली।

❑❑

○ पटना, बिहार



कनक किशोर

# दू गो लघुकथा

## ठेकुआ

अबकी छठ में सोमेसर के छुट्टी के जोगाड़ ना भइल त मने मन सोचलन कि अंत ले एको दू दिन के छुट्टी मिल जाई त तत्काल में टिकट लेके निकल जाइब।ओने माई के रोज फोन आवे कि कसहूं चल आव बाबुओ तोरा बिनु छठ उदास हो जाई।माई से बात करत - करत सोमेसर भरूआ जास आ आँखि कगरी लोर आ जाय।ना उनुका ऑफिसे मन लागे ना घरे।नाहाय - खाय के एक दिन पहिले बास से कहले कि दू दिन के छुट्टी दे दीं सर हम सोमार के समय से ऑफिस आ जाइब,पारन के एतवारे ह। बास कहलन छुट्टी के दिक्कत बा ऑफिस के अधिका लोग पहिलहीं चल गइल बा, तूहूं जानत बाड़ऽ।ना मनबऽ त जा बाकिर सोमार इयाद रखिहऽ।सोमेसर सुनते स्टेशन तत्काल टिकट खातिर निकल गइले। कवनो ट्रेन में ना जाये के ना आवे के टिकट मिलल। दलाल स्लीपर के टिकट पटना के चार हजार माँगऽ सं। सोमेसर सोचलन कि चार हजार टिकट के दे देब त छठ आ लौटे के का होई। कवनो उपाय ना देखि मन मारि डेरा लौट गइलन।नहाय - खाय के दिन ना पहुंचलन त माइयो समझ गइली कि सोमेसर एह छठ में ना अइहें।

सोमेसर छठ के प्रसाद खाये बास के घरे बिना बुलवले चल गइलन।ऊ जानत रहन कि महेंद्र से माई छठ के ठेकुआ भेजी बाकी ना जाने ऊ कब अइहें।छठ के प्रसाद माँगी के खाइल जाला इहे सोच बास घरे भोरे - भोर पहुंच गइलन। मेमसाब सोमेसर के प्रसाद देली आ ऊ ठेकुआ उठवलन त ओह में उनुका माई के फोटो लउके आ ऊ गाँव के छठ घाट प माई के लगे पहुंच गइले।आँखि से लोर चल देलस।ई देखि मेमसाब टोकली सोमेसर प्रसादी खा,कहाँ चल गइलऽ तूं? ठेकुआ बगली में रखत कहले कि ठेकुआ देखि माई इयाद आ गइली ह। सोमेसर जल्दी - जल्दी प्रसाद खाके डेरा देने बढ़ गइले।

❑❑

## आस - पियास

छठ के घाटि पर भोरे के अरघ देला के बाद हमार मेहरारू, घरे के बड़की पतोहिया सब परबइतिन के आस - पियास अँचरा में देत रही। लगे हमहूं खाड़ रहीं। उनुकर आँखिन के लोराइल देखनी त ना रहाइल। पूछ देनीं का बात बा ? कवनो ऊँच - नीच त ना भइल ? ऊ अँचरा से लोर पोछत कहली कि ना जी कवनो बात नइखे, आस - पियास बाँटत खा अम्मा जी के इयाद आ गइल ह कि कइसे ऊहाँ के पत बे छठिया घाट पर आस - पियास लेत खानी कहत रहीं कि हमरा के दूगो सूखलका नारियल दिहीं, हमरा दूनो लइकवन के पसंद परेला। ई सुनते हमरो आँखि में लोर आ गइल। माई के बिनु ई पहिला छठ ह, अब के हमरा के आस - पियास दी।

❑❑

❍ राँची, (झारखंड)





जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

# बेहाया के बेहयाई कथा

का जमाना आ गयो भाया,आजु अचके भोरे भोरे मन गाँव के डगर धऽ लेहलस। अब जब मन गाँव के डगर चलि पड़ल बा , त गाँव के बातियो मन परे लागल बा। हमरा गाँव में जब पछिम का ओर से केहू जाई , त गाँव के चौहद्दी में डेग रखते पहिले पहिल एगो गड़ही देखाई पड़ी। लागेला जइसे कि सोवागत के सगरे दारमोदार ओकरिए ओपर बा। गाँव के लोगन से लइकइयाँ में सुनले रहली कि घर बनावे खातिर माटी टोला भर के लोग इहवें से निकलले रहे। एह घरी गाँव के पुरुब आ पछिम दूनों ओर प्रवेश द्वार बनि गइल बा। गाँव के विकास खातिर आवे वाले सरकारी धन के बंदरबाँट करे खातिर एहसे लमहर काज कुछ अउर होइयो ना सके। जब प्रवेश द्वार बनलें सन, त ओहनी के नामकरण के बातो ज़ोर सोर से उठल। पुरुब द्वार के नाँव गाँव के एगो स्वतन्त्रता सेनानी स्व0 श्री लक्ष्मी शंकर श्रीवास्तव जी के नाँव पर खुसी खुसी रखा गइल। बाक़िर पछिम के द्वार के नाँव राखे में खूब अझुरहट आ अंगुरी उठउवल भइल। राजनीति त पुछबे मति करीं, देस के राजनीतियो से लमहर भइल। खैर हार पटक के लोग पछिम द्वार के नाँव 'लोकतन्त्र सेनानी स्व0 श्री संकठा दुबे द्वार रखलें। पछिमी द्वार के भीतरि डेग रखते उ गड़ही जवन अब पोखरा के रूप धइ लिहले बा, चारो ओर पेड़ पालो लाग गइल बा। एगो-दूगो घाटो बन गइल बा।

हमनी के लइकइयाँ में गड़ही के उत्तर का ओर आधा से बेसी आ पूरे पूरा दखिन का ओर बेहाया के राज रहे। बरसात में बारिस के पानी से गड़ही भर जात रहे, जवन भर जाड़ा हरियर काई से लदाइल रहत रहे। बाक़िर गरमी में जब गड़ही सुखा जात रहे। गरमी में रोज संझा के बेरा लइकन के लुका छिपी के खेल क मैदान बन जात रहे। बाक़िर गरमी से झुरात झपेटात बेहाया के हरियरी बनल रहत रहे। झुरलको बेहयवा के कुछ लोग तूर बटोर के लगवना खातिर लेइयो जात रहे। बेगर कवनो डर के लइकन के कूदल फानल आ बेहाया के उपरि झूलल रोज के आदत में जुड़ल रहे।

बेहाया के बात अवते हमरा केशव मोहन पाण्डेय जी के एगो किताबि 'कुछ चिंतन कुछ सुध' के सुधि आ गइल। एह किताबि के एगो संस्मरणात्मक आलेख 'जहाँ हबड़ा के पुल तहाँ बने इस्कूल'के इयाद बलात मन में पइस गइल। चउरिया – चउरिया के जामल-जमल गझिन बेहाया पर लइकन के गीतियो मनहर लागल ह-

"जहाँ हबड़ा के पुल
तहाँ बने इस्कूल।
मास्टर मार दिया एक रूल
लड़का भाग गये बिल्कूल"।

एह गीतिया के पढ़ले से त इहे बुझात बा कि मास्टर लोग के रूल पड़ते लइका लोग सब भाग जात रहलें। मने ओह घरी के लइकन में मार के डर रहल, तबे नु भाग जात रहलें सन। आजु के समय त इस्कूल से बहरे निकलते मास्टर साहेब के पीठ पूजा करे लगते सन। पूजा त पूजा अउर पता ना का का करते सन। जंतर मंतर पर भइल जेन जी के परदरसन के देखि के सहजे बुझात बाटे। पुलिस के मौजूदगी के कवनो डर भय बचले नइखे। देस के परधान मंत्री तक के बकसते नइखे, दोसरा तीसरा के बाति छोड़ीं सभे। उहाँ के जुटान में चहुंपल लइकन के हाल देखि के ओहनी के माई बाप सरमा जइहन बाक़िर ओहनी सभन के जरिको सरम नइखे। लइका त लइका, लइकिनी सभन चार डेग अउर आगु बाड़ी सन। संस्कृति आ संस्कार खातिर जानल जाये वाला देस में संस्कृति आ संस्कार दूनों सरम से डूब मरल होई। नंग पने के सगरी हद पार करत अपना के जेन जी कहाए वाली पीढ़ी कहाँ जा रहल बा, केकरो पता नइखे।

गज़ब चस्का बा जेन जी कहाये के। 56 बरिस के 99 बेरी मुँह खा चुकल मनरखना आ ओकर बहिनिया दूनों ओह भीड़ के हिस्सा बन के अइठत चलत रहलें सन। धक्का मुक्की करत बेरा अपने गरिमा के लात मारत देखइलें सभ। मनराखन के कई गो संघतिया सब उहाँ दाँत चियारत, अंट संट बउवात देखइलें। लागल त अइसन रहल कि ई कुल्हि बरियार दरजे क सुल्फा बाज हउवें सन। बेमतलब के बकलोली करत देस के जाति के झगड़ा में झोंकत, मुंगेरी लाल अस परधान मंत्री के कुरसी के सपना देखत बाड़े सन। ओइसे त हमरा बिसवास बाटे कि रउवा सभे नरेटिव से जियादा हकीकत के समुझे-बूझे वाला हईं। ई लोकतन्त्र हउवे बबुआ, इहाँ ढेर कुछ गढ़ात आ ढहात रहेला। इति श्री बेहयाई कथा।

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)




# विश्व भोजपुरी सम्मेलन

## (गाजियाबाद इकाई)

भोजपुरी भाषा | साहित्य | संस्कृति | समाज

*"भोजपुरी के विकास, साहित्य के संवर्धन आ संस्कृति के संरक्षण खातिर समर्पित"*




## कार्यकारिणी

**अध्यक्ष**
श्री मनोज तिवारी

**उपाध्यक्ष**
श्रीमती प्रीति चन्द्र राय
श्रीमती सरोज त्यागी
श्री सतैन्द्र सिंह
श्री लोकेश कौशिक
श्री मनोज मिश्रा
श्री संजय चौधरी

**महामंत्री**
श्री जे पी द्विवेदी

**मंत्री**
श्री सुजीत तिवारी
श्री नीरज प्रसाद
श्री जैनेन्द्र शर्मा
श्री मोहन यादव
श्री के पी द्विवेदी
श्री अशोक राव
श्री सर्वेश राय
श्री हेमंत शर्मा

**कोषाध्यक्ष**
श्री पंकज पाठक

**साहित्य मंत्री**
श्री संजय कुमार ओझा
श्री नवनीत मिश्रा

**संगठन मंत्री**
श्री अनिल सिन्हा
श्री अवधेश मिश्रा
श्री चन्द्रशेखर मिश्रा

**प्रचार मंत्री**
श्री नीलेश मिश्रा

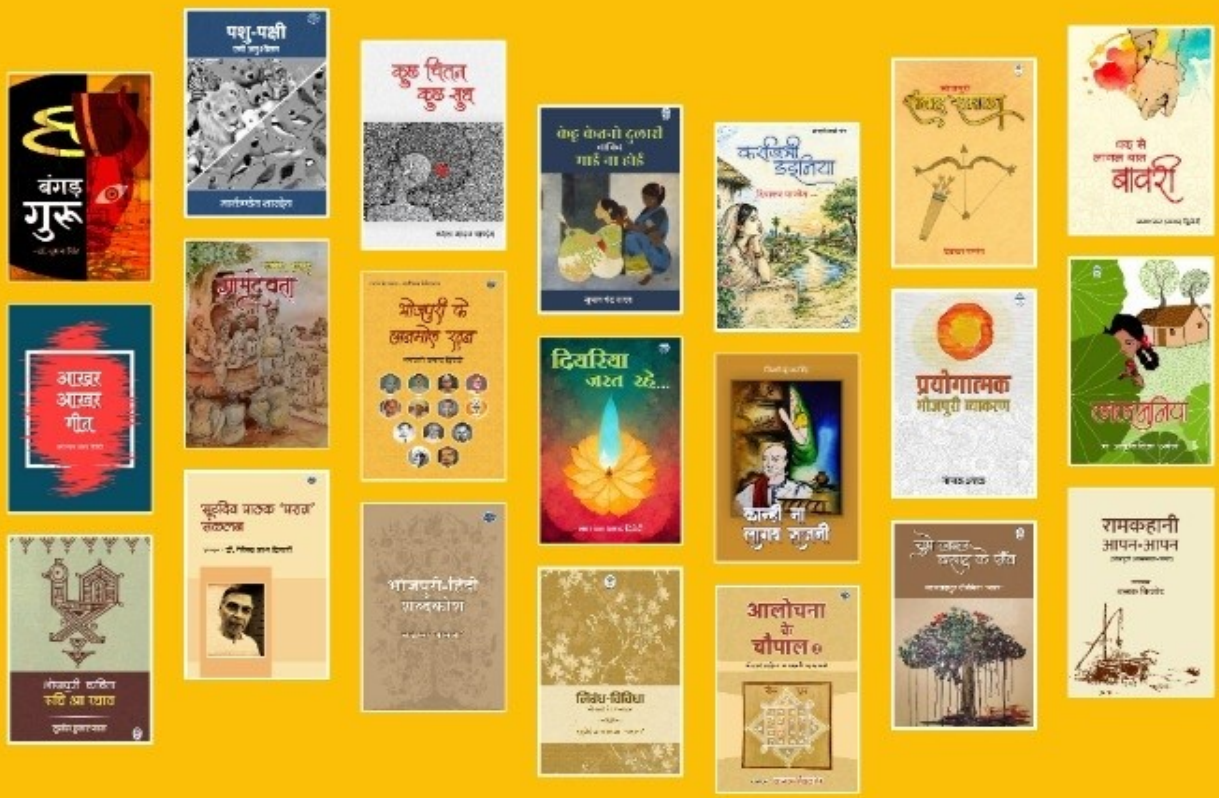
**प्रबंधन मंत्री**
श्री विनोद यादव

**कला संस्कृति मंत्री**
श्री कमलेश ओझा

|| भोजपुरी आज, विश्व कल ||

# सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

## से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब




**किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर**

**-: लिखी आ फोन करीं :-**

**sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606**

लाइक आ सब्सक्राइब करी आ

# भोजपुरी साहित्य : रचना-आलोचना

से जुड़ी

@RachanaAalochana